सोवणो सफर : मोवणा पड़ाव

(आखै भारत रे दर्शन जोग ठामा रा चित्राम)

सोवणो सफर
सोवणा पड़ाव

अमरनाथ कश्यप

मूल्य : पचास रुपये
सस्करण : 1992
आवरण : आसाराम गोस्वामी
प्रकाशक एव : प्रज्ञाभारती प्रकाशन
वितरक पोकर क्वार्टर्स, रानी बाजार, बीकानेर
मुद्रक : शिव प्रिंटिंग प्रेस, जैन पाठशाला के सामने, बीकानेर

SOWANO SAFAR MOWANA PADAW (Rajasthani)
by Amarnath Kashyap Price : 50/-

भूमिका

आखै भारत री प्राकृतिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक अर धार्मिक विशेषतावां री दृष्टि सूं विविध भांत रा सरस तथा प्रेरणादायक चित्राम इण पुस्तक मांय प्रकाशमान है। भारतीय जीवन दर्शन री दोय विशेषतावां है—आत्मिक सत्ता री एकता तथा प्रकृति सार्थे मिनख रो हार्दिक जुड़ाव। ऐ दोनूं ही खूबियां इण पुस्तक मांय घणै सुरुचि पूर्ण रूप मे प्रकट हुई है। आ विद्वान लेखक री निजी सामर्थ्य तथा गरिमा है।

इण पुस्तक मांय भारत रै दर्शन जोग विश्व विख्यात ११ ठामां री यात्रावां रा अनूठा संस्मरण सकलित है। हिमालय रा हिम मण्डित ऊंचा पर्वत, तपती मरुभूमी, उफणता समुद्र, आस्था रा तीरथ, स्थापत्य रा बेजोड़ स्मारक, मिंदर, बाग बगीचा अर चोरण सैं कुछ आपरी रंगत अर आंचलिक विशेषतावां सागै मूर्तिमान हू जावै। इण में सम्पूर्ण जीवन शैली, ललित कलावां अर ऐतिहासिक गौरव एक सार्थे गुम्फित है। अलग-अलग जनपदां री विविधतावां राष्ट्र री एकता नै पुष्ट करती प्रकट हुवै। आ पुस्तक परम्परा अर आधुनिकता रो एक सोवणो सेतु है। इण सूं राष्ट्र री प्रकृति अर संस्कृति रै मूल्यां नै समझणै तथा परखणै मांय सहज सुविधा मिलसी।

वर्तमान मांय राजस्थानी भाषा मे गद्य-पद्यात्मक विविध-विधावां में अनेक रचनावां आगै आय रैई है, अर वै सराहण जोग है। पण पुरा

विषयक रचना रा लेखक तो मात्र श्री अमरनाथ कश्यप ही ज है। आपरी इणी विषय माथै एक पुस्तक 'मुळकता मिनख: मोवणी धरती' आगै प्रकाशित होय चुकी है अर उण प्रकाशन नै खासी लोकप्रियता मिली है। आ विशेष प्रसन्नता री बात है। इणी ज क्रम माय श्री कश्यप री आ दूजी पुस्तक प्रकाशित हुई है। औ नयो प्रकाशन देख'र दूणी प्रसन्नता हुवै। आशा है इण नै भी पूरो सम्मान मिलसी तथा विशेष लोकप्रियता प्राप्त होसी। साथै ही औ भी विश्वास है कै इण प्रकाशन से प्रेरणा लेकर दूजा लेखक भी मायड भाषा राजस्थानी मे आपरा यात्रा वृतांत प्रस्तुत करसी।

इण सोवणे-मोवणे तथा उपयोगी प्रकाशन सारू विद्वान लेखक हार्दिक साधुवाद रा पात्र है।

—डॉ. मनोहर शर्मा
हिन्दी विश्व भारती, बीकानेर

●

रचना सारू

मानव सुभाव सू ई परिवतन प्रेमी है । एक सरीसे जीवन, एक ही ठाम ग्रर हरमेश एक जिसे वातावरण सू ऊब'र जाग्या-जाग्या रे लोक जीवन, प्रक्रिति रे सुदर स्वरूप आळी नद्यां पाडा, झीलां, सरोवरां, झरणा, जूणा स्मारका, किला, महला, प्राचीन तीरथां, ग्रनेक भांत री विनस्पती अर प्राणिमा रे परतख दरसन सू ग्राणद रे साथै आपरी सभ्यता ग्रर संस्क्रिति सू भी बो रु-ब-रु हुवै । इण परतख अनुभव सू उण री मन बुद्धि मे जाणे कित्ती जाणकारी रो भण्डार भरै । भिन्न भिन्न खेतरा रो अळायदी जीवन शैली नै नजदीक सू निरख'र उणा री विशेषतावां नै जाणे-अणजाणे बो ग्रापरे व्यौहार मैं आत्मसात भी करतो जावो । भांत-भांत रे लोगा, उणा री भाषा, रीति-रिवाज, परम्परावां रे समपरक सू मानव मैं समन्वय भाव मजबूत हुवै । यात्रावा ग्रतस री भावनात्मक एकता री बेल नै सींचै । इण सू अनेक्ता मे एकता अर सगळा धरमा रे सम्मान रा भाव द्रढ हुवै ।

प्राचीन भारत रा धरमगुरु ग्रर रिसी-मुनी समता भावना नै जगावण मे यात्रावां रे महत्त्व अर मरम नै आछी तरां जाणता हा । इण खातर ई आदि शंकराचाय खुद निजी रूप सू सगळै भारत री चार बार जातरा करी अर इणी उद्देश्य सू देस रे चारू कुणा मे चार धाम, थरपिया । सात पुरी, द्वादश जोर्तिलिंग, कुम्भ रा मेळा ग्रर अनेक लोक तीरथा री थापना लारे भा ही दीठ ही । सता, पीरां, पैगम्बरां री पूजा रे मूल मे भी ओ हो भाव है । भावनात्मक एकता री पुष्टी खातर ही उत्तर रै बद्री धाम रा पुजारी ठेठ दखण रा नमुद्री ब्राह्मण नियुक्त करीजा ग्रर दखण रे रामेश्वरम् रे ग्रभिषेक वास्ते गगा जल रे ग्ररघ रो विधान बणायो । कासी मैं शैव, वैष्णव ग्रर बौद्ध तीन्यू धरमां नै समान आदर मिल्यो । सम्प्रदाय रै भेद-भाव बिना नानक, रैदास, रज्जब, रामदेव सै समान ग्रादर जोग महान सत्त मानीज्या । इण कारण ग्रा तीरथां री जातरा ग्रसल मैं समपूरण भारत माता मिंदर री ही जातरा है ।

यात्रावां सूं कष्ट सहिष्णुता अर हरेक परिस्थिति में प्रसन्न रैणे री खिमता बढ़ै । अमरनाथ, बद्री केदार, गंगोत्री, यमुनोत्री, त्रियम्बकजी, दत्तात्रेय धाम, वैष्णोदेवी, मरुप्पा आद परबत खेतरां रा दुर्गम तीरथ है । इण जातरावां में प्रक्रिति अर मानखे रै निश्छळ रूप रा दरसन हुवै । साथी जातरूवां मागे खासा दिन रैवण अर घुळ मिल'र जातरा रा कष्ट बांटणे रा मौका मिलै । संमूळी जातरा रो एक मारग, एक ध्येय, एक भाव, एक शैली सब में समरसता रा भाव जगा'र इसानी एकता रो पाठ पढ़ावै ।

आज री यात्रावां रा अनेक उद्देश्य हुवै । शिक्षा क्षेत्र सूं जुड्यो हुणे कारण म्हारी यात्रावां रो प्रायोजन देश री जमीन अर जन सूं जुड़णे री गरज सूं हुयो । इण रचना में लिखी यात्रावां रै ब्याज सूं देश री आज तांई री विकास यात्रा रो लेखो-जोखो सजोवणे री चेष्टा है । राष्ट्रीय जीवन रै अनेक पाखां री भिन्नता अर समग्रता रो आस्वाद जदी पाठकां नै इण में मिल सक्यो तो रचना नै सार्थक मानसूं । यात्रावा में मिलण आळे आनन्द सूं मायड भाषा रै लोगां नै जोड़न तांई म्हारी पैली पोथी 'मुळकता मिनख मोवणी धरती' तीन बरस पैलां प्रकाशित हुई ही । पाठकां अर समीक्षकां रे मूल्यांकन, सूं प्रेरित हु'र उणी कड़ी में ओ दूजो पुसप आपरे हाथां में है ।

यात्रा साहित्य रो एक पहलु हुवै ठाम रो परतख रूप अर दूजो लेखक रो आतम रूप । पाठक बस्तु रूप सूं जित्तो गैर जाणीकार हुवै अर गैरी निजर सूं निज अनुभव रो ब्यापक अर खरो चितराम कर'र सामाजिक री खिमता अर समझ जगावण मे रचनाकार जित्तो कामयाब हुवै, यात्रा बर्णन री सफलता-असफलता रो बो सही आधार कैयो जा सकै । यात्राकार तो ठाम री परतख सत्ता रो सारो ले'र उण री प्रिति, सुभाव, धरम आद रो संकेत रूप बखाण करतो चालै । इण प्रयास में रचना कित्तोक सफल है, इण री कूत तो पाठक आपै ही करसी ।

—अमरनाथ कश्यप

विगत

अमरनाथ री जातरा

भारत रै मुगट दाई सोभा पांवते कश्मीर रो अंग-अंग प्राकृतिक सुन्दरता रो मोकळो भंडार है। अठै रा चांदी वरणा ऊंचा डूंगर, गंभीर गर्जन सागै बैहती अर उछाळ सागै ऊजळा मोती बिखेरती नदयां झर-झर झरते जळ री सोवणी झालर बणाता सैंकडूं मन मोवणा झरणा, च्यारूं मेर हरयावळ सूं लद्या अर जोरावर पून मैं झूमता बिरख दर्शकां नै आपोआप निज कानी खींच लेवै। धरती माथै सुरग समान इण भूम मैं सदाशिव अमरनाथ रो पावन धाम १३५०० फूट री लूंठी ऊंचाई माथै थित है। हरमेश सावण री पूनम नै अठै देश भर सूं हजारूं जातरी भगवान महादेव रै दर्शनां तांई आपरा सरधा सुमन चढ़ावणनै आवै।

भारत रै सैंग देवी-देवतावां मैं महादेव शिव रो सरूप बोत अनूठो है। दूजा देवता चोखा परिधानां अर अलंकारां सूं भूषित हुवै। पण शिव कोपिन रै सिवाय दिगम्बर रेवै। गळे मैं सरपां नै धारण करै। और देव मुगट धारै, अगर चंदन सूं मंडित रेवै, शिव रो प्रसाधन भभूत हुवै। बीजा देव सुरीला वाद्य बजावै, शिव रो बाजो डमरू ही है। गणेश, लिछमी, आद लाडू, मेवा कर मिष्ठान सूं तिरप्त हुवै अर नानी-मोटी इच्छावां पूरी करै तो शिव आक अर धतूरे जिसी साधारण चीजां सूं ई प्रसन्न हु'र धरम, अरथ, काम, मोक्ष जिसा चार बडा फळ प्रदान करै। इतो ई नी बै आखी धरती री उपज तांई जहर रो पान करै। अंधेरे नै मिटाण तांई चन्द्रमा रो उजाळो बरसावै। मानखे री मुगती तांई गंगा रै बेग नै माथै ऊपर झेल'र

राव रै कल्याण रो विधान करै। इण खातर ई तो शिव रो अरथ ई मंगळ हुवैयो है। अलौकिक गुणां री वोळायत सूं ई शिव नै सर्व शक्तिमान अर स्वयम्भू कैवै। अमरनाथ धाम मैं तो इण रै स्वयम्भू रूप रा साक्षात दर्शन हुवै। अमरनाथ गुफा री छात सूं पाणी री छोटी पड्यो रैवै। अठै म्र्यां मैं भी शून्य सूं नीचो तापमान हुजे सूं इणा बूंदां सूं ई जम'र बरफ रै हिम लिंग री इसी नैणाभिराम आकृति बणै अर कुदरत रै इण करिश्मै नै परतख देख'र सरधालु जातरी आध्यात्मिक भाव सूं अभिभूत हो'र मत्र-मुग्ध रै जावै। इसै धाम री जातरा री कल्पना मात्र सूं म्हे रोमांचित हू ग्या हा।

पहह साल्यां साथै सन् १६८३ मैं अगस्त महीने री १६ ता नै बीकानेर सूं भटिंडा, फिरोजपुर, जालंधर, पठान कोट मारग सूं जम्मू तवी ताईं पूग्या। आगै बस सूं श्रीनगर गया। जम्मू सूं सीधो अनाबल अर अनन्तनाग हू'र पहलगांव जायो जा सकै। पण कश्मीर रा श्रीनगर आद दूजा सोवणा ठाम देखण रो लोभ नी छोड सक्या। पामपुर हूता राजमारग सूं श्रीनगर पूग्या।

जातरा खातर रवाना हूण सूं पैला बीकानेर म ही केई पूर्व अनुभवी जातरी मिलग्या हा। उण लोगां री सळाह मुजीब खासी तैयारी भी कर ली ही। पैरण ओढणा ताईं गरम ऊनी कपडा, बरफ री आंधी सूं बचण खातर चश्मो, पिट्ठु, पाणी री कैतली, सामान्य सर्दी जुकाम, बुखार री दवायां, कपड़े रा जूता, लो री मुकै आलो-लाठी, बरसाती, टार्च, चाकू, खाद्य सामग्री ताईं बिस्कुट, सूखा मेवा, भुजिया, आद आवश्यक जिन्सा प्रति व्यक्ति रै हिसाब सारू साथै ले ली। आ बात बताईजी ही कै पहलगांव मे तम्बू हजार डेढ़ हजार रुपया मैं किराए मिलै। इण वास्तै म्हे आपणो निजी तम्बू बीकानेर सूं ही लेग्या, जिण सूं वास्तव मे खरचै मैं किफायत तो रैईही मारग मे इच्छा रै मुजीब ठहरण आद री सुविधा भी रैई। चाय बणाणे

ताई स्टोव-बर्तन, एक बडो प्रेशर कुकर अर चावल दाल साथै ले लिया। इण सूं हनको पण पौष्टिक खाणों बणावण रो सुभीतो रैयो अर जातरा वेसी भ्रानन्द पूर्ण बणगी।

श्रीनगर मे म्हे तीन दिन ठहर्‌या अर गुलमर्ग, सोनमर्ग, क्षीर भवानी, हरबन, निशात, शालीमार, चश्मेशाही, डल भील, चार चिनार आद दर्शनीय ठामा रो भ्रमण दर्शन कर्‌यो। २१ अगस्त, ग्यारस रैं दिन दसनामी अखाडे सू शकराचार्य मंदिर रैं शिवजी रैं त्रिशूल सागै अमरनाथ यात्रा श्रीनगर सू सरु हुवै। इण ने बठै छडी साहेब कैवे। जिला मैजिस्ट्रेट रैं सरकारी सरक्षण मे डल रे सारै ऊंचे डूगर माथे थित शक्राचार्य मंदिर मे पारम्परिक पूजा अर्चना रैं बाद छडी नैं बादशाह चौक रैं अखाडे मे लावैं। बठै सू भोराभार ही मन्त्रोचार, हरजस अर शखनाद रे साथै यात्रा रवाना हुई। मुस्लिम बोळायत री कश्मीर सरकार इण हिन्दू धाम री जातरा रो जिलो सातरो अर व्यवस्थित परबध करै वो निश्चय ही सरावण जोग है। पुलिस, चिकित्सा व्यवस्था, यातायात परबध, सचार व्यवस्था, यात्र्या रो पजीयन, जातरा पडाव वास्ते तम्बू सिरख्यां रो परबध, जातरा मारग री सुरक्षा व्यवस्था आद सै कुछ री बौत चोखी अर कुशल व्यवस्था जिसी भ्रठै देखणे मे आवै बिसी घणखरे दूजे हिन्दू राज्यां मे भी देखण नैं नीं मिले। भ्रठे रा मुसलमान भी इण जातरा नैं बहुत सम्मान देवैं। अधिकारी गण चौकसी अर निष्ठा सू जातर्‌या री सहायता मैं जुट्‌या रैवे। घोडा अर तम्बू आद सामान रा किराया राज सू तय करोड्या हुवै अर नाजायज किराए वसूली आद रा मामला कम ई सुणीजण मैं आवै। घोडे वाळां नैं तो जातरा री वापसी मैं जातर्‌या द्वारा दियोडो सतोष जनक व्योहार रो प्रमाण पत्र अधिकारया सामैं पेश करणो पडै, तो ई उणा नैं घोडा रो कियायो मिलै।

छडो साब री जातरा नैं ग्यारस नैं रवाना करयां पछै अगले दिन २२ ता० नै श्रीनगर सू दिन री बस सू म्हैं पैलां देयार गांव पूग्या। लीदर

रै सामै उत्तरी रेल्वे गैस्ट हाउस रै कनै एक ऊंची पाढी जाग्या माथै आपणो तम्बू लगायो। नीचे हरी दूब, ऊपर चिनार रा भवरा हरा रूख, सीन मेर बरफ सू ढक्या डूंगर अर शीतल वातावरण में मन आगै री मनोरम जातरा री कल्पना सूं आनन्द उल्लास सू भरग्यो। दो साथ्यां नै ले'र यात्रा रो पजीयन कराणे अर सामना खातर घोडे वास्ते निकळ्या। पजीयन रो काम आसानी सू आध घन्टे में ई हुयो। थोडी दूर दखणाद मे लीदर रै कांठे पासे नदी रै सूखे आगोर में सैंकडू घोडा अर बा रा सईस खड्या हा। अब्दुल सम्मद नाम रै घोडे वाले सू आणे जाणे रो अनुबंध सरकारी दर रै मुजीब १०० रु प्रति घोडे रै हिसाब सू तय हुयो। म्हानै दो घोडा री दरकार ही। एक तम्बू खूटा आद वास्ते अर दूजो बिस्तरां अर खाणे-पीणे रै सामान वास्ते। बात तै हुयां पछै सरकारी कार्यालय मे सब साथ्यां रा नाम पता अर घोडे वाले रो नाम अर हस्ताक्षर आद दर्ज कराया। दफ्तर आळा हैजे रो टीके लगावण खातर कैयो। पण म्हे लोग तो बीकानेर सू ई टीको लगवा'र उण रो प्रमाण पत्र साथै लेग्या हा जिण सू टीके री छूट मिलगी। सिफ्त रै भोजन रै उपरांत गैर जरुरी सामान राजकीय सामान घर में २ रु. प्रति नग रै हिसाब सू जमा करा दिया।

पहलगांव श्रीनगर सू ९६ कि. मी री दूरी माथै समुद्र तट सू ७ हजार फुट ऊचाई माथै बस्योडो घणो साफ सुथरो एक छोटो पाडी कस्बो है। लीदर अर तानिन नदयां रै फूटरे सगम माथै थित हुणै सू अठै रो कुदरती निजारो आख्यां नै ई नी मन आत्मा नै भी आपरै कानी खींच लेवै। जातरी चकित भाव सू चौफेर बर्फीली पाड्या, बस्ती, नदी अर हरयावळ नै निरखतो ई कुछ भूल'र ऊभो रह जावै। वनस्पति री मोकळा-यत अर खुशनुमा जलवायु रै कारण आ जाग्या बौत ताजगी अर खुशी देणै आळो अनुभव हुवै। ठैरण खातर अठै टूरिस्ट बगलो, अणक छोटा बडा होटल, गैस्ट हाऊस आद तो है ही सीजन रै दिनां में लोग आमदणी तांई आपरै घरा में भी जातरूयां नै ठैरा'र चोखा पइसा कमा लेवै। लीदर रै

सारं आगूणे खुल्ले मैदान में 'टूरिस्ठ हट' मी बण्योडा है, जठं सूं नदी रै प्रवाह नैं नैडै सूं देखणे रो मजो लियो जा सकै। पहलगांव सूं ई अमरनाथ री परसिध जातरा तो सरू हुवै ई है, दूजा सैलाणी अठै पडाव बणा'र सोनसर, तारसार, लिडखेट अर कोल्हाई ग्लेशियर आद मी जावै।

दि. २३ नै तेरस रैं दिनुगे दैनिक कार्यक्रम सूं निपट, चाय नाश्तो कर'र सामान बाध्यो अर अब्दुल समद नै बुला'र घोडै माथै सामान लाद्वायो। शुभ जातरा ताई समद नैं पांच रुपिया नेग रा दिया। आ एक तरह री अगसोस ही है जकी घोडे वालां नैं हैंग जातरी देवै। इण सू आपसी सद्भाव अर खुलोपण बणै। जातरा रो आरम्भ ऊंचे कठा सूं बाबा अमरनाथ री जय अर 'ओम नमो शिवाय' रै उद्घोष सूं हुवै। ऐमूलो वातावरण धार्मिक भाव अर अमाव उत्साह सूं तरंगित लागण लागै। छोटा-बड़ा, मोटियार अर बूढा-ठेरा लोग और लुगाया सै प्राय: एक जिसी वेश भूषा मैं मजिल ताई बढण नैं उत्सुक दीसैं। जात-पात, अमीर-गरीब, धरम, भाषा, अर प्रदेश आद रा सारा बधन अठै आपै खतम हू जावै। एक दूजै सूं बतळावण करता, निश्छळ भाव सूं मुकाम ताई पूगण नै उत्साह दिरावता लोग आपस मैं हेत सू आगै प्रस्थान करै। राष्ट्रीयता ही नई साचे मिनखपणे रो असली रूप अठै देखणनैं मिलै।

पहलगाव कस्बे री लुगायां टाबर आपरे घरां सामैं निकळ'र ऊभा हु जावै। वैं आदर अर उमग सूं जातरया नै निरखता मुळकता दीसै। कदे कदै कोई विचित्रता वानैं केई जावतोडे मैं दोसे तो आपरी भाषा वस्त-वारी मे बोलता हसण लागै। नाना टाबर हाथ हला'र जावतोड़ा जातरया रो अभिवादन करै। अणजाण, अपरिचित अर अबोध बाळका री आ सद्भावना मन नैं मायं ताई छू जावै। कश्मीरी महिलावां लम्बे चोगे नुमा कुरतों फिरन अर ढीली सलवार पैरै। माथे मार्थं रेशमी रुमाल बाधे। अठै चादी रा गैणां-कर्ण-फूल, हार आदि रो रिवाज घणो है। हिंदू

महिलावां कानां म लम्बी लटकन आळी माळा सूं जुड़्या कर्ण भूषण धैरे जको श्रापरी निजी पहचान पका घणो फूटरो लागे । कुदरत श्रठे रै मानखे नैं भी उदारता सूं रूपगूरती जाणे लुटाई है । श्रठे रा टावरा रा मूंढा भी सेव री ललाई अर नुवां फूलां सो रग, ताजगी अर मुळक विगेरता लागे । श्रठे रा टावर चचळ नी हुवै । सील श्रर सकोच रो भाव सैंगा रै चैरा मार्थं मण्ड्यो लागे । औ प्रकृति रो सुन्दर प्रभाव तो है ही शायद इति बड़ी सख्या मैं बारला आदम्यां रै बड़े टोळा नै देखणे रो प्रनुभव भी बाने अचम्भे मे डालण आळो हुवै ।

इण जातरा मैं आखे देस सू साधु सत, जातरी अर सैलाणी तो श्रावै ही है, विदेशी जातरी भी खासी सख्या मैं ढूकै । केई विदेशी महिला जातरी भी देखण मैं आवै । गेरुआ गाभा श्रर रुद्राक्ष री माळा पैरयां श्रग्रेज सी लागण श्राळी एक महिला केई दूर ताई, पहलगाव सू थोडे रस्ते बाद ई म्हारै साथै-साथै चाले ही । एक साथी श्र ग्रेजी मैं श्रोरे देस बाबत पूछ्यो, तो वै नाराज हू'र हिन्दी मे पूठा बोल्या "मुझे नही लगता कि मैं अमर नाथ की पवित्र यात्रा पर हू, बल्कि लगता है कि इग्लैण्ड के किसी बाजार मे घूम रही हू ।" उणा रै व्यग रे मरम सू म्हा सब नै सरम अर दु ख रो अनुभव हुयो । पण मैं बाने समझायो कै म्हाने सुपने मैं भी औ अनुमान नी हो कै थे हिन्दी जाणो । घणखरा विदेशी जातरी श्रग्रेजी जरुर जाणता हुवै, आ समझ'र ही श्रग्रेजी मैं परिचय पूछो हो । बाद मैं बो म्हे ३-४ कि. मी ताई हिन्दी मे बोलता बतळावता गया ।

मन री दीठ सामै इण प्रसग सू श्राळायदो १६५४ रो एक दूजो चित्राम घूमग्यो । दिल्ली मे प्रथम उद्योग प्रदर्शिनी प्रगति मैदान मे लागी ही । रूस रै प्रदर्शन में कठा केई आधुनिक वेशभूषा श्राळै सज्जन श्रग्रेजी में कोई मशीन रे सचालन रे बारे मे प्रश्न पूछो । रूसी कोई जवाब नी दियो । दूजी वेला पूछणे पर बै फटकार लगाता कैयो "क्या श्रापको हिन्दी नही

राती । या तो आप हमारी भाषा इसी मे बात करें, नहीं तो अपनी भाषा हन्दी मे—यह साम्राज्यवादियों की भाषा की गुलामी कब तक ढोयेंगे ?" फर उणा री राजीना उथळावण सू ओजू ताई भी आपणो पिछ छुडाणे में देशवासी कता'क सफल हू सक्या है ? आज भी औ सगळा ताई मनन रो विषय है । हालांकि उपरले प्रसग में जातरी महिला सू अ ग्रेजी में पूछणो मात्र परिस्थिति रै गैर मुजीब नी हो । उण महिला सू पतो लाग्यो कै बा पैरिस में अध्यापिका है अर तीसरी बार अमरनाथ री जातरा माथै आयी है । वा रो कैणो हो कै अमरनाथ री जातरा सू हर बार बानै अनूठी आत्मिक शांति मिलै है । जकी जातरा विदेशया ताई भी इति प्रेरक हुवै उणरा सहभागी हुणे रो गौरव अर सास्कृतिक स्वाभिमान सू म्हे सै साथी उमाव सू भरग्या ।

पहलगाव सू चदन बाडी री १३ कि मी री मारग घणी ऊभी चढाई आळो नी है । पहाड रै पत्थरा सू कच्ची सडक भी अबै चदन बाडी ताई बणगी है । मारग लीदर रे सारे सारे चाले । चीड रा बिरख घणी तादाद में मिलै । चारू मेर घणी हरियावळ छायोडी रैवे । मारग मे वसुरन, तूलियन ग्राह अर लीदर वैट नाम री जाग्या मैं हरी घास रा सोवणा चरागाह भी मिलै । म्हारी टोळी प्रात ७ बज्या पहलगाव सू रवाना हुयी ही । २ बजता बजता म्हे चदन बाडी सू पैला लीदर रै पुळ माथै ठैरग्या । अब्दुल समद घाडे वाळे ने अठै मिलने री ई कैयोडो हो । खासी ताळ बाद करीब ३ १५ बज्या घोडो अर सामान पूग सक्यो । नदी पार मैदान मे खुली जाग्यां देख र तम्बू लगायो । दोपहर बाद ठण्ड लागी । पूरी बाया रा सूटर आद निकळ र पहर्या । २ साध्या ने चाय वणावण रो कैं'र कुदरत रै अनूठ द्रश्य नै देखण ने आसे पासे घूमण लाग्या ।

चदन बाडी री ऊचाई ६५०० फिट हूण रे कारण अठै ठड री अनुभव हूण लाग्यो । चारू मेर री पहाड्यां माथै री चादी वरणा बरफ अबै

नजदीक दीसण लागगी । इण जाग्या तापमान कम हूणे सू चाय बणने में आध घण्टे सू बी बेसी समय लागग्यो अर प्याला मे परसता ई चाय ठण्डी हूयगी । बाद में तो सबक लिये के इण क्षेत्र मे चाय रा बरतन भी गरम पाणी में धोवणा चाहिजें । सिझ्या रें भोजन में खिचड़ी बणावण ताई लीदर सू पाणी लेणें गया तो नदी रो तेज परवाह देख'र डर लाग्यो। ज्यू त्यू डरता डरता बाल्टी दूर सू पाणी में डबो'र आधी पूणी बाल्टी तो भरली, बाकी बाल्टी भरण ताई गिलास नदी में डूबोयो तो तेज धारा रे *परवाह म गिलास हाथ सू छूट'र वैह्ग्यो । बोर पाणी री आस* छोड'र पाछा आया तो तम्बू रें पासे पाछे दूजा तम्बू लागणे सू आपणो तम्बू जोवण में दिक्कत हुई । फेर तो एक डडे माथे रुमाल बाध'र झण्डे दाई तम्बू माथे लगायो ताकी निसाणी रें कारण कोई नें दिक्कत नी होवें । जातरा रे समय चदन बाडी में छोटो मोटो बाजार अर भोजन व्यवस्था ताई अनेक ढाबा अर लगर लगाया जावें । अस्थाई बिजली री व्यापक व्यवस्था की जावें । जैनरेटरा सू *केई जाग्या बिजळी रो परबध करीजे । खास तौर सू नदी रें* पुळ, बाजार, पहाडी मोड आद जाग्या रोशनी जरूर लगावें, नही तो अणजाण अर खतरनाक घाट्यां में हादसे री घटनावां रो डर रेंवे । चदन वाडी में रात्रि विसराम कर्यो । तम्बू मे तिरपाल बिछा'र बिस्तर खोल्या । हरेक साथी कनें २-२ काबल बिछावण नें अर २-२ ओढण खातर हा । पण सगळा ऊनी कपडा पैर'र सोणें अर काबळा नें ओढणें रे उपरात भी सावळ *नींद कोई नें नी आ सकी ।*

आगले दिन तडके ही वेगा तैयार हू'र ७ बज्या रे नेडे जातरा रें दूजें चारण शेषनाग ताई टुर्या ।

चदन बाडी छोडता ई बरफ रें हिमनद नें पार करणो पडें । बरफ री परत ठोस अर तिसळने आळी हुवें । अठे बेलदार इण री परत माथें बेलचा अर कुदळां सू खोद'र जाग्यां जाग्या खाचा बणावें, जिणसू के

लोग पग टिका'र धीमै धीमै इण माथै चाल सकै अर तिसलणै सूं बच सकै। प्राय घणखरा जातरा वास्ते ओ नूवों अर रोमाचकारी अनुभव हुवै। कमजोर दिल आळा आदमी तो पैला डर'र अळगा ही ऊभा हू जावै अर दूजा नै जावता देख'र दिल जमावै। बाद मे वै डरता डरता हिम्मत बाध'र 'शिव शिव' करता उण नै पार करै।

इण ग्लोसियर सू थोडी दूर आगे पूग्या ही हा कै एक मजेदार घटना सामै दीखी। कई साधु खाली लगोटी लगाया गोळ बणा'र बैठ्या स्यात सुलफे री चिलम पी रैया हा। इति ऊचाई अर भीषण ठड मैं उघाडा साधुआ नै बैठ्या देख'र एक विदेशी कैमरै सू बारी तसवीर लैणी चाई। ज्यू ई विण कैमरे रे लैंस सू सीधा बाधणै री तैयारी करी एक स घू अग्रेजी मैं बोल्यो 'स्टोप'। अग्रेज ठकग्यो। साधु पाचू आगळयां नै भेळी करतो अर खोलनों इशारा करता मळै कैयो 'फाइफ रूपीज'। यानी फोटो खींचणी है तो पाच रुपिया दो। सगळा जातरी इण तमासे नै देख नै ऊभा व्है ग्या अर हसता हसता ओ दृश्य देखण लाग्या। आखर मोल भाव मैं तीन रुपिया तै हुया जद माधुआं रो फोटो लरीजो। अर्थ रो परभाव अठै तक पूगसी कदै सोच्यो भी नीं हो।

चदन बाडी सू शेषनाग १२ कि मी दूर है पण ओ रास्तो अमर नाथ जातरा रो सै सू दुर्गम आडी चढाई आळो है। बीच रास्ते मे पिस्सू घाटी नाम रो ऊचो पाड आवै जको १२३०० फिट सू भी वेसी ऊचाई आळो है। पिस्सू परबत रै बारे मैं पौराणिक ग्रथा मैं एक कथा आवै। प्राचीन काल मैं अठै वायुरे समान रूप आळो एक राक्षस रहतो अर बो देवतावां नै कष्ट पू चावतो। देवता भेळा हू'र सदाशिव कनै गया। बा कैयो कै मैं इण नै अक्षय बरदान दियो है, थे विष्णु री शरण जावो। देवता विष्णु कनै पूग'र वा री विनती कीनी। विष्णुजी शेषनाग नै याद कियो। अर उपस्थित हूणे पर बानै आज्ञा दी कै थे थारे सहस्र मुखा सूं इण वायु रूप राक्षस रो पान कर जावो। एक पल मैं ई शेषनाग दैत्य रो

भक्षण कर लियो अर देवतावा री रक्षा हुई। पिस्सू घाटी ही उण राक्स री ठाम हो अर शेषनाग हो उण रे भक्षण री जाग्या है। पिस्सू टाप इण घाटी री सै यू ऊची चोटी है। इण री चढाई रै बाद जोजपाल नाम रो सुन्दर चारागाह आवै। अठै री दूकानां मैं खाणे-पीणे री सामग्री मिलै। जातरा री कठिन चढाई रै बाद अठै सुस्ताणे वास्ते बैठ्या। अठै बडा आछा बागूगोसा और सेव मिलै जका सस्वादिस्ट और पौष्टिक हूणे सू थकावट मिटा'र ताजगी देवै। कठिन श्रम रै बाद मुकाम कानी आगे बढण अर प्रकृति रै सुन्दरतम रूप रा दर्शन करणे सू आनन्द अर तिरप्ति हुवै। १ वज्या ताई शेषनाग पूगग्या।

शेषनाग मैं हरे रग री बौत चोखी एक बडी कुदरती झील समुद्र तळ सू १२ हजार फिट माथै बण्योडी है। पर्वत माथै इसी ठौड तम्बू *लगायो जठै सू इण रो निजारो बिना रुकावट रै देख्यो जा सकै। इण* झील मैं पाणी रा सरप भी रैवे। कैवा है कै जिण जातर्‍या नै झील रै सरप रूपी शेषनाग रा दर्शन हुवै बा नै अनन्त पुन्य लाभ हुवै। तम्बू मांय *विश्राम ताई लेट्या ही हा कै एक साथी जोर सू हाका करण लाग्यो* 'वो शेषनाग जा है शेषनाग जा है' म्हे सगळा बारै भाग्या। देख्यो पाणी री सतह माथै एक लम्बी लीक बणातो एक सरप दूर तक जा रयो हो। साधारण *घटना हूते हुवै भी सस्कार वश कैवा रै मुजीब, सुगन दीखणे सू घणे* हरख रो अनुभव हुयो। शेषनाग झील रै माथै उत्तराद में खासे ऊचे डूगरा री पाच चोट्या है। उण री कुदरती बनावट इसी है कै वै शेषनाग रै पाच फणा *दाई दीखै। इण परबत श्रखलावा री छाया झील रै निरमळ जळ मे* पडती बौत फूटरी दीखै अर झील री सुन्दरता नै घणी मात्रा मैं बढा देवै। हिम शिखरा रै बीच घिरयोडी अर केई जाग्या हिम सू मडित आ झील *ही लीदर नदी रो उद्गम है। इण रै हिम शीतळ जळ मैं सिनान कर्‍यो।* एक'र तो लाग्यो कै माथो अर हाथ पग सै सूना हूग्या पण सिनान रै पछै चढाई री सगळी थकावट दूर होगी।

शेषनाग पर्वत माथै केई जाग्या बर्फ जम्योड़ी हो। जकै री ढळवां सतह पर बौत सम्भळ'र चालणो पड़े नी तो तिसळ'र झील मैं जा पड़ण रो डर रैवे। केई बार अठै तिसळने अर जातर्‌या रै डूब जाणे री घटनावां सुणने मे आवै। वातावरण अठै इत्तो शांत अर स्वच्छ अर पहाड़ा रो दृश्य इत्तो मोहक है कै मन अर आंख्या देखता ही रैवे पण धापै नी। चार बज्या सिंझ्या रै बाद तो अठै बादळ प्राय नित ही छायोड़ा रैवे। छ बज्या करीब हल्की बूदा-बादी भी होई पण बरसात्या ओढ'र साथ्या सागै घूमता रैया। रात्रि मैं भी थोड़ी बिरखा हुई। तम्बू मैं पाणी न आ जावै, इण बात री सुरक्षा खातर लो रा खूटा सू तम्बू रै चारु मेर एक छोटी सी खाई भी बणा दी। फेर भी नमी अर सील रै कारण ओढ़ण बिछावण रा सै कपड़ा भीगग्या अर ठड रो भी अनुभव हुयो। लगातार जातरा अर ठड रै सागै केई दिना रैणे कारण सरदी सैणे री की अभ्यस्तता बढण लागगी। साथ्या रै गीत, भजन आद गाणे अर हास परिहास रे वातावरण रै कारण शून्य सू १३° नीचे तापमान हूणे पर भी सै कोई प्रसन्नता अर उत्साह सू भर्‌या इण अपूरब सु दर ठाम रो लूठो आणन्द लेता रैया।

अठै सू जातरा रो तीसरो चरण सरू हुवै। शेषनाग सू पचतरणी री दूरी १३ कि मी है। थोड़ी दूर जाणे रै बाद ही महागुनस पहाड़ री ४ कि मी री दोरी चढाई आवै। महागुनस परबत अमरनाथ मारग री सै सू ऊंची चोटी है। इण री ऊंचाई १४३०० फुट है। आ पहाड़ी बद्री केदार आद सू भी बेमी ऊंची है। प्राणवायु री कमी रै कारण चढाई करता पग पग माथै सास फूलै। दिल लोहार री धूकणी दांई चाळण लागै। पण अनूठा सुहावणा निजारा स्वयभू रे दरशन री तीव्र इच्छा अर साथ्या रो सागो आगे बढण री प्रेरणा देवै। इण मारग मैं जाग्या जाग्या दवाया अर चिकित्सा सहायता री व्यवस्था है। बीच मैं एक ठाम वानजन आवै। मूळ मैं इण रो नाम वायुबन हो। अठै हवा बौत तेज गति सू वेवे।

६ कि मी. रै बाद उतार भी मरू हू जावै। पगा नैं बौत राहत मिलै। पथरीली भूम मायँ लगातार चलणे सू पगथली अर आगळ्या अमल जावै। अनेक उतार-चढाव पार करता भैरव परबत रे मारै १२ हजार फुट री ऊंचाई माथै पचतरणी यानी अमर गगा री ५ धारावा अठै बौत मद मधर चाल सू वैती दीखै। कैवे कै एक बार सदाशिव ताडव नृत मे मस्त हा। नृत करता बा रा जटा-जूट ढीला होयग्या जिण सू गगा रो प्रवाह पांच धारावा' मैं वै निसरयो 'जका ने पाप नासणी पचतरणी कैवे।

दोपारे २ बज्या अठै पूगग्या हा। म्हे केई साथी भारी ठण्ड रै बावजूद भी अठै सिनान करयो। कोई अ घ पूण घटे ताई हिम जल मैं अठ खेल्या करता रैया। अबोध बाळका सो निरमल आनन्द रो आस्वाद मिल्यो। नदी रे बारै ही सपाट जमी मायँ तम्बू लगा'र बोळै समय ताई नदी रो बहाव अर निसर्ग री अद्‌भुत सुन्दरता रा दर्शन लाभ करता रैया सिझा रै भोजन बाद ठड बौत बढगी ही। तम्बू मैं बैठ'र एक साथी सू भजन सुण रैया हा। भजन रो कार्यक्रम कोई ३/४ घटा चालतो रैयो। बीच बीच मैं से मिल'र कोरस रै रूप मैं अतरे नैं उथळावता भी जाता। वातावरण अर समा इसो बण्यो कै आसे पासे रै तम्बूआ आळा जातरी भी भेळा हुग्या। बा भी आपणे प्रदेशा रा भजन सुणाया। अत मैं एक अमरीका रा पत्नी-पति जातरी भी वठै पूगग्या। वै खासी ताळ ताई भजन रा कैसट भरता रैया अर विभोर हू'र आध्यात्यिक भाव सू सगीत अर जातरा रो आनन्द लेता रैया। रात रै ११ बज्या पछै भोर री जातरा बैगी सरू करण ताई सोया, नही तो आखी रात ही जागरण मैं निकळ जाती।

पूनम री भोरा न भोर उठ'र तैयार हू'र सामान घोडा मायँ पूठी जातरा खातर लदवा दियो। अब्दुल सम्मद नैं जोजपाल मैं इतजार करण रो कैयो, क्योकै अमरनाथ मैं कोई ठैरण री व्यवस्था नी है। पचतरणी

ू अमरनाथ ५ कि मी दूर है। ओ रास्तो बौत दोरो, सक्डो अर ढ़ळवो है, पण मन मोवणो भी बौत है। प्राय सारो रस्तो बर्फ सू ढवयोड़ा पहाड़ा रै बीच चाले। इण मैं भी दुर्गम चढाई है। करीब साढी तीन मील चालणे पछै अमर गगा रै निरमल तज प्रवाह रा नजदीक सू दर्शन हुवै। आगे थोडी दूर माथै मोड मुडता ई दूर खासो ऊचाई माथै अमरनाथ गुफा रा दर्शन हुवै। उत्साहित हू'र यात्री अमरनाथ बाबा रो जयकारो अर 'ओं नमो शिवाय' रो घोष ऊचे कण्ठों सू करण लागे। पवित्र गुफा रै नीचे बैती पावन अमर गगा मैं सिनान कर जातरी ऊपर दर्शन ताई जावै। यूं घणखरा जातरी अठै सरधा भाव सू ई जावै पण आज काल अठै चोरी जारी री छुटपुट वारदाता भी हूण लाग ी। बीकानेर से एक दूजे जातरी दल रै एक मदस्य री घडी अर कपडा सिनान रै बाद नही मिल्या। कोई बानै उठा लग्यो। सुण'र दिल मैं विषाद हुयो। लाग्यो कै प्रकृति री निमरता जठै मानखे नै गुण मम्पन्नता देवै, ठीक ईं रे विपरीत मानव माथै विश्वास विपन्नता दारिद्र अर ओछपण नै भी प्रस्तुत करे। प्रकृति मानखे री वृति अर स्वभाव नै जठै उदात्त बणा'र शाति अर सुख रो वातावरण बणावै बठै ई मानव रै स्वार्थी आचरण सू मानव नै दु ख अर अशाति रो अनुभव हुवै। पण आ तो पेशेवर अपराध्या री बात है। नही तो इण क्षेत्र रो नैसर्गिक वातावरण तो विकृति नै भी सस्कृति मैं बदलने री छिमता राखे। ई कारण ई तो हिमालय रे पर्वतीय क्षेत्रा रा निवास्या मैं अबोधता, सरलता सहजता अर ताजगो देखणे मे आवै।

अमरनाथ गुफा समुद्र तळ सू १२७२६ फुट ऊचाई माथै कुदरती रूप सू बण्योडी है। गुफा करीब ६० फुट लम्बी, ३० फुट चोडी अर भूमि सू २० फुट ऊची है। इण पर चढ़ना ताई पगोथिया री दुतरफा मारग बणा दियो है। आसे-पासे अर बीच में लोहे रा रैलिंग लगायोडा है। अतिम सीढी एक बडे चबूतरे ताई है। मेळे रे समय अठै भारी मात्रा मे भीड हू जावै। कश्मीर सरकार री पुलिस व्यवस्था भीड नियत्रण अर मारग व्यवस्था ताई हुवै पण कोई स्वयसेवी संस्था रा सहयोगी [illegible]

जदी पू'च सकता तो दर्शना मैं सुविधा हु जाती । नही तो भीड़ भडाके मैं दर्शनां मे तावड़तोड़ जल्दबाजी अर धक्कमधक्का चालता रैवे । गुफा री छात सू' जाग्या जाग्या पाणी री बू'दा टपकती रैवे, पण एक खास स्थान माथै हिम रो शिवलिंग स्वतः बणै । ओ शिवलिंग १/२ फुट सू ६ फुट ताई रो हुवै । नैडे दो और लिंग बणै जका नैं पार्वती पीठ अर गणेश पीठ नाम सू' बतळावैं । अचरज री बात है कि गुफा रै बारे मीला ताई सैंमूली जाग्यां कच्ची बरफ ही दीसै पण अमरनाथ रो स्वयंभू मूर्त स्वरूप पक्की बरफ रो बण्योड़ो हुवै । कैवत मैं तो आवे कै ओ लिंग अमावस नैं समाप्त हू जावै अर ऐक्म सू फेर निर्मित हुण लागै । पण बठै रा लोगा अर पुजारया सू बात पूछणे सू आ सचाई सामै आई कै ओ हिम लिंग क्दै भी पूर्णतः लुप्त नी हुवै । हा अळबत सरदी कम हुण पर आकार छोटो भलेई रैवे । कश्मीर रा बाशिंदा ईनै पूण लुप्त क्दै नी देख्यो ।

एकांत, शांत जाग्या माथै पैलमपैल कुण ऋषि मुनि अठै पू'च'र दोरी बियावन पहाड्या रै बीच इन बिलखण प्राकृतिक अजूबे सू युक्त स्वयंभू नैं सोध्यो हो, सदाशिव ही जाणे । पण आ बात संदेह सू परया है कै प्रकिति रो विराट मिंदर हिमाळय सत्य, सुन्दर अर शिव रो अनेक अरथा अर स्तरा माथै उद्घोष करतो परतख दीखे है । अठे रा आभै स्पर्श करता डूंगरा री असीम ऊंचाया, धवळ हिम नद्या रो ऊजळो प्रवाह, सुन्दर घाट्या रो आकरसक निजारो, फूला अर विरखा री मोवणी विविधता अर अबोध पशु पक्षिया रो स्वतंत्र विचरणो मानव रै मन मैं गैरे अरथा मैं आध्यात्म बोध अर असीम शांति रा पवित्र भाव उत्पन्न करणे मे समर्थ है । ओ ई कारण है कै प्राचीन ऋषि मुनिया सू लेरै आधुनिक सैलाणी ताई इण रो नाम मात्र सुण'र ई आल्हादित अर उत्साहित हो जावै है । हिमाळय रै अतुल सौंदर्य आळे अनूठा धामा मैं प्रमुख अमरनाथ रा दर्शना सू घणी तृप्ति अर संतोस रो अनुभव हुयो ।

इण गुफा री एक विशेषता है के अठै सदिया सू कबूतरा रो एक जोडो हमेशा देखणे में आवै। कबूतर गरम स्थाना रो पक्षी है। शीषम ठंड वाळे ठाम अर सून्य सू नीचे तापमान में कबूतरा री मोजूदगी विलक्षण अचरज री बात है। धार्मिक विश्वास ओ है कै एक बार महादेव सिंझ्या समय न्रत्य कर रैया हा। बा रा गण आपसी ईर्षा रै कारण 'कुरु कुरु' शब्दा रो उच्चारण करण लाग्या। शिव बाने कैयो कै थे दीर्घकाल ताई ओ ही रटता रैसो। उण दिन सू वै गण कबूतर होग्या। पण शिव भक्त हूणे सू इणा गण रूपी कबूतरा नैं पावन मानीजै अर आ रा दर्शन पाप कलेश हरण आळा गिणीजै। सौभाग्य री बात आ हुई कै इण मा सू एक कबूतर नै म्हे सैं साथी गुफा मैं उडतो अर विचरण करतो देख्यो। कथा प्रतीकात्मक भी हुए तो आ बात तो साफ है कै ऊँचे गुफा आळा भगवद् स्वरुप पात्रा के साथ रैणे वाळा सामान्य पात्र भी सम्पर्क भाव रै कारण आदर जोग अर पूज्य बण जावै है।

सुबह १० बज्या ताई दर्शन आद कर पूठा फिर्‌या। सिंझा ताई ठैठ पहलगाव पूग्या। मार्ग मैं जोजपाल मे घोडेवालो भी मिलग्यो हो। पहलगाव सू ३–४ कि मी पैला सू ई सरधालु भगत अर सेवाभावी सस्थावा अमरनाथ रे जातर्‌या रो सम्मान करता, वा रा चरण स्पर्श करता, बाने माळावा पराता चाय नास्तो अर भोजन कराता जाग्या जाग्यां खड्या मिल्या। जातर्‌या रो ओ सम्मान मूळ मैं स्वयम् सदाशिव री सरधा रो ही प्रतीक है। जका व्यक्ति इण कष्ट साधना आळी जातरा मैं नी जा सकै, जातर्‌या री सेवा कर ही आपने कृतार्थ मान लेवै। जातरी भी इसा थकयोडा हुवै कै इणा रै आतिथ्य सू थकावट अर भूख दोन्यू सू निवारण पावै अर निस्वार्थ विनीत सेवा सू परभावित हुवै। वास्तव मैं सम्पूर्ण जातरा इत्ती रोचक, साहसिक अर प्रेरक है कै इणनै कदेई भूल नी सका।

□

शांति अर प्रेम रो नगर शिमलो

इण दिनां मैं हिमाचल री राजधानी अर अंग्रजां रै बखत मैंमूळै भारत री गरम्यां री राजधानी शिमलो शिवालिक री पाडयां रै उत्तर मैं हिमाळय रो सोवणो, आछो ऊंचै डूंगरां अर सघन हरियावळ आळो मन मोवणो ठाम है। यूं तो सगळो हिमाचल सदाबहार बरफ सूं मंडयोडी पाड्यां, हरया भरया घणा आरणां, सोवणी झीलां ऊंचाई सूं पड़ता चांदी छिड़कावतां ऊजळा झरणा अर गैरा ग्राडा पाडी घाटां रै कारणै सैलान्यां रै ळूंठै आकरसण रो कारण है। पण इण मैं भी आपरी प्राकृतिक शोभा अर सैर री सगळी आधुनिक सुविधावां रा आछा होटल, सैं तरियां सामान री बडी दुकानां, क्लब, खेल कूद अर स्केटिंग रा रिंज, सैर करण अर देखण री जाग्यां आद रै कारण शिमले नै पर्यटकां रो सपनो ही कैवै। हिमाळय री गोदी में इण रै उत्तरी पश्चिम भाग मैं थित इण फूटरै पर्वतीय नगर री सैर रै कार्यक्रम सूं मन मैं घणी प्रसन्नता हुई।

२३ मई १६८१ नै बीकानेर सूं सिंझ्यां रवाना हु'र भटिंडा अम्बाला हुता ता २४ नै चंडीगढ पूग्या। चंडीगढ रो स्टेशन सैर सूं ६ कि मी दूर है। यूथ हास्टल में पैला सूं जाग्यां रो आरक्षण हो। सिंझ्या ६ बज्यां बठै पूग ग्या हा। सामान आद रै राख्यां पछै सिनान, भोजन कर्यो

ग्रर दूजै दिन घूमण फिरण रो आयोजन राख्यो ।

चडीगढ दिल्ली सू कोई २१८ कि मी दूर शिवालिक पाड़ां री ढळाए माथै बस्योडो, स्थापत्य री दीठ सू, ग्रति ग्राधुनिक नगर है। भारत रे बटवारे पछै लाहौर रै पाकिस्तान मैं चले जाण सू पजाब री राजधानी जोगो कोई नगर नी रैयो। ग्राखर इण मुई जाग्यां नैं चुण'र अठ नुवैं सिरे सू ग्राछो नगर बसावण री बात तै हुई। ग्रम्बाला जिले री खरड तहसील मैं पचकुला गाव रै नेडे पाडा री पगथळी मैं हरी भरी भूम मैं नगर बसावण री सै सहुलियतां मैंजूद ही। ग्रमरीका रै अलवर्ट मेयर री देख रेख मे इण री योजना बणी। दुनियां रै मशहूर स्थापत्यकार ला कारबुजिये सन् १९५२ मैं नगर निर्माण रो कार्य सरू कर्यो। १ हजार एकड जमीन नैं चार भागा मैं बाट'र भवन बणावणा ग्रारम्भ हुया। इण क्षेत्र मैं चडी रो एक पुराणो अर मानीतो मन्दिर हुणे कारण नगर रो नाम चडीगढ पडयो।

आगले दिन सब सू पैलां सचिवालय देखण रो कार्यक्रम बणायो। मचिवालय नगर रै उत्तरी भाग मैं है। बस रो मारग ई तरा रो है कै केवल दो बसावट सैक्टरा मैं बट्योडो है, हर सैक्टर ग्रपणे ग्राप मैं जरूरत री दीठ सू पूरो है। सडका ग्रर गळ्या सैक्टर रै नाम सू ई जाणीजै, बा रो कोई अलयदो नाम नी हुवै। सैक्टर रै मायला हिस्सां मैं घर है, बारला हिस्सा मैं सडका। बणज ब्योपार १७ न सैक्टर मैं हुवै। ग्रो सैक्टर कलकत्ता रै चौरंगी अर बम्बई रै कालबादेवी दाई है। सगळे सैवटरा मैं हरया बगीचा री व्यवस्था है। कोई मकान दो कमरा सू कम नहीं है। हवा, बिजली पाणी रो चोखो इ तजाम है ही। बणगत री दीठ सू सै इमारता नूवी नूवी ग्राकार प्रकार री सुदर डिजाइना आळी है। एक सैक्टर रा भवन डिजाइन मैं दूजै सैक्टर सू अळायदा है। शिक्षा ग्रर मनोरजन रो इ तजाम भी ई सैक्टरा मैं पूरी तरा सू मौजूद है।

शांति अर प्रेम रो नगर शिमलो

इण दिनां मैं हिमाचल री राजधानी अर अंग्रेजां रै बखत समूळै भारत री गरम्यां री राजधानी शिमलो शिवालिक री पाडयां रै उत्तर मैं हिमाळय रो सोवणो, आछो ऊंचे डूंगरां अर सघन हरियावळ आळो मन मोवणो ठाम है। यूं तो सगळो हिमाचल सदाबहार बरफ सूं मंडयोडी पाडयां, हरया भरया घणा आरणां, सोवणी झीलां ऊंचाई सूं पडता चांदी छिटकावतां ऊजळा झरणां अर गैरा आडा पाणी घाटां रै कारणै सैलान्यां रै ळूंठ आकरसण रो कारण है। पण इण मैं भी आपरो प्राकृतिक सोभा अर सैर री सगळी आधुनिक सुविधावां रा आछा होटल, सै तरियां सामान री बडी दुकानां, क्लब, खेल कूद अर स्केटिंग रा रिंज, सैर करण अर देखण री जाग्यां आद रै कारण शिमले नै पर्यटकां रो सपनो ही कैवे। हिमाळय री गोदी मे इण रे उत्तरी पश्चिम भाग मैं थित इण फूटरे पर्वतीय नगर री सैर रै कार्यक्रम सूं मन मैं घणी प्रसन्नता हुई।

२३ मई १९८१ नै बीकानर सूं सिझ्या रवाना हु'र भटिंडा अम्बाला हुता ता २४ नै चंडीगढ पूग्या। चंडीगढ रो स्टेशन सैर सूं ६ कि मी दूर है। यूथ हास्टल मे पैलां सू जाग्यां रो आरक्षण हो। सिझ्या ६ बज्यां बठै पूग ग्या हा। सामान आद रै राख्यां पछै सिनान, भोजन कर्यो

अर दूजै दिन घूमण फिरण रो आयोजन राख्यो ।

चंडीगढ दिल्ली सू कोई २१८ कि मी दूर शिवालिक पाड्या री ढळाण मांयं वस्योडो, स्थापत्य री दीठ सू, अति आधुनिक नगर है । भारत रे बटवारे पछै लाहोर रै पाकिस्तान मैं चले जाणे सू पजाब री राजधानी जोगो कोई नगर नो रैयो । आखर इण नुई जाग्यां नै चुण'र अठै नुवैं सिरे सू आछो नगर बसावण री बात तै हुई । अम्बाला जिले री खरड तहसील मैं पचकूला गाव रै नेडे पाडा री पगथळी मैं हरी भरी भूम मैं नगर बसावण री सँ सहुलियता मैजूद ही । अमरीका रै अल्बर्ट मेयर री देख रेख में इण री योजना बणी । दुनियां रै मशहूर स्थापत्यकार ला कारबुजिये सन् १६५२ मैं नगर निर्माण रो कार्यं सरू कर्‌यो । १ हजार एकड जमीन नै चार भागा मैं बांट'र भवन बणावणा प्रारम्भ हुया । इण क्षेत्र मैं चडी रो एक पुराणो अर मानीतो मन्दिर हुणे कारण नगर रो नाम चडीगढ़ पड्यो ।

आगले दिन सब सू पैलां सचिवालय देखण रो कार्यक्रम बणायो । सचिवालय नगर रै उत्तरी भाग मैं है । बस रो मारग ई तरा रो है कै केवल दो बसावट सैक्टरा मैं वट्योडो है, हर सैक्टर अपणे आप मैं जरुरत री दीठ सू पूरो है । सडका अर गळ्या सैक्टर रै नाम सू ई णीजे, वा रो कोई अलयदो नाम नो हुवै । सैक्टर रै मायलो हिस्सां मै र है, बारला हिस्सा मैं सडका । बणज ब्योपार १७ न सैक्टर मैं हुवै । ो सैक्टर कलकता रै चौरगी अर बम्बई रै कालबादेवी दाई है । सगळे क्टरा मैं हरया बगीचा री व्यवस्था है । कोई मकान दो कमरा सू कम हीं है । हवा, बिजली पाणी रो चोखो इतजाम है ही । बणगत री दीठ सै इमारता नूवी नूवी आकार प्रकार री सुदर डिजाइना आळी है । क सैक्टर रा भवन डिजाइन मैं दूजे सैक्टर सू अळायदा है । शिक्षा अर नोरजन रो इतजाम भी सँ सैक्टरा मैं पूरी तरा सू मोजूद है।

विधान सभा भवन सेक्टर न १ मैं है। आ शहर रै उत्तराद पा
वारले कानै बण्योडी अति आधुनिक आ सुन्दर इमारत है। सामले पा
सगळे भवन मैं आडे काच री हुजारु खिड़कया इण री शोभा नै और बढ
देवै। भवन पीळे अर शहर भूरे रग रे मेळ सू सातरो लागै। इण भव
मैं एक हिस्से मे पजाब सरकार दा दफ्तर है तो दूजे कानी हरियाणा र
राजकीय दफ्तर लागै। आधुनिक साज सज्जा मैं इण री टक्कर रो स्या
ही कोई दूजो सचिवालय आज देश मैं हुसी। उच्च न्यालय को सुन्द
इमारत भी इण सू थोडी ई दूर इण सैक्टर मैं ई है। सुखना नाम रै
खासी बडी अर फूटरी झील भी अठैई है। इण झील माथै सिंझा रै बख
भ्रमणार्थियां री खासी भीड रैवे। एक पासी बडो बगीचो है जठै गरमी
दिना मे तो मेळो सो मण्ड्यो रैवे। झील मे नाव चलाणे री व्यवस्था भ
है। कदै कदै नावा री दौड आद रा आयोजन भी अठै हुवै।

चडीगढ मे 'गुलाब बाग' नाम रो एक अनूठो बगीचो है, जै
खाली गुलाब रै फूलां रा ई पौधा है। गुलाबा री सैंकड़ जात्या रा रग
बिरगा फूल अठै खिल्या रैवे। गुलाबी, लाल, पीला, सफेद अर बैंगण
गुलाब तो कई दूजी जाग्या भी देखण मैं आवै पण अठै काळा गुलाब भ
लाग्योडा है। देख-रेख रो प्रबध चोखो हुणे सू औ बगीचो खुशबू अर रगा
सू सदा महक्तो रैवे। चडीगढ आवणियां जातर्‌या नै अठै जरुर पूगणो
चाहिजै।

चडीगढ मैं गुलाब बाग रै कनै ई 'आर्ट गैलरी' नाम रो बडो
आछो सग्रहालय है, अठै मे देश रै परसिध मूर्तिकारा अर चित्रकारा री
सातरी कला क्रितिया प्रदर्शित है। अठै री वास्तु कला री रचनावा मैं
मिट्टी, काठ, धातु, लो अर काच सूं बणी नायाब चीजा शामिल है। चित्र
म रामकुमार, मक्बूल फिजा हुसैन, अमृता शेरगिल, नदलाल बोस, अवनिंद्र
ठाकुरजिस्सा अतर्राष्ट्रिय ख्यात रै चित्रकारा री रचनावा रो अमोल संग्रह

है। इण प्राणवान चित्रा रा रंग, आकृत्या, भाव आद बेजोड है। केई चित्रा रा शीर्षक इत्ता आकर्षक है के वै एके सागे अनेक भाव व्यंजना करता सा लागै, इण कारण अत्यन्त सार्थक कैया जा सकै। दिल्ली मैं इंडिया गेट रै कनै परसिघ आर्ट गैलरी है चंडीगढ रो ओ सग्रहालय भी उण री जोड रो ई कैयो जा सकै, कम नी है। सिभा पड जाणे सू पाछा आ'र यूथ हास्टल मैं विसराम कर्‌यो।

आगले दिन २६ ता० नै चंडीगढ रो बस स्टेशन देखण नै गया। इण बस स्टेशन माथै रेलगाडी रै बडे बडे जंक्शना रै दाई अपार भीड रैवे। रोज चार पाच सौ बसा अठै आंती जाती हूसी। करीब २० प्लेटफार्म अलग अलग दिसावां मैं बसां जावण आवण ताई अठै बण्योडा है। जातर्‌या री सुविधा अर मारग दरसन ताई जाग्या जाग्या लाउडस्पीकरा सू सूचनावा रो बराबर प्रसारण हूतो रैवे। स्टेशन री इमारत दो मजली है। सं प्लेटफारमा कनै पाणी री व्यवस्था, चाय पान रा स्टाल, पुस्तका अर अखबारा रा स्टाल अर फल, मेवा री दूकाना है। भीड रै बावजूद कोई असुविधा अर धक्कमपेल अठै नी देखा। इत्तो बडो, चोखो अर सुविधा आळो बस स्टेशन पैल्या कोई और नी देख्यो हो। इण नै देखणो म्हारे खातर एक नूवो अनुभव हो। मन बडो प्रसन्न हुयो।

बस अड्‌डे नै देख्या पछै नेकीराम गार्डन देखणने गया। ओ बगीचो अर सग्रहालय भी आपरे तरीके रो भव्य अर अनूठो देश भर मैं एक न्यारे ही ठाम है। एकले आदमी री साधना अर दूर द्रष्टि सू कित्तो बडो, विलक्षण अर उपयोगी काम सम्भव हू सकै, इण नै देख्या ई पतो लागै। बेकार अर फालतू समझी जाणै आळी बोतला, उणा रा ढक्कन, चीणी मिट्टी री ठीकर्‌या, लो अर कांच रा भाग्या टूट्‌टा टुकडा नै जोड जोड र पशु पक्षी वाहन आद रा अनूठा वास्तु प्रकार कल्पना रै अनूठे जोग सू मनोरंजन अर शिक्षा रा चोखा आधार बणाया है। टाबर तो अठै आ'र

विश्व विख्यात हिजनी रै अचरजलोक रो सो आनन्द लेवै। मूरतां इती मोहक है कै टाबर ई नई बडा अर स्याणा मिनख भी अचरज कर्‌या बिना नी रैवे। इणरै बणावणियै दैवी प्रतिभा आळै अनूठै कलाकार नै उणरी सूझ रै कारण आखो दुनिया रै देशा मैं बौत सम्मान मिल्यो है। भारत रो ओ होणहार सपूत आज दुनिया भर रै बागीचा रै निरमाण ताई बारै बुलाइजै। गैरी लगन अर सूझ बूझ आळो एकलो आदमी भी दुनिया नै अनूठी चीज दे सकै आ बात कलाकार नेकीराम मानखे नै सिखावै।

दोपहर बाद बस स्टेशन सू कालका आळी बस पकड़'र उत्तर भारत रो नन्दन वन बजण आळै पिंजौर बाग नै देखण नै गया। पिंजौर रो जग परसिध मुगल बाग चडीगढ सू १३ मील दूर है। बाग रै बारै खासो चोखो बजार है। होटल, ढाबा, फळा रा गाडा चाट पकौड़ी री स्थायी अस्थाई दुकाना ठडाई, बूजा पेय अर चाय री दूकानां खासी मातरा मैं है। बाग री बारली दीवार ऊंची है अर गढ दाई लागे। बारे ही टिकट विक्रय रो सरकारी दफ्तर है। टिकट लेर मांय पूग्या। बाग ४ पट्टा मैं बसायडो है। हरी दूब री कालीन सी सँग बाग मैं बिछी रैवे। तरास्योडा सुंदर झाड, सेव, खुमाणी अर आडू रा फलदार बिरख अठै सैंकडू री तादाद मैं है। बाग कै बीच ७-८ फुट चौडी, नहर मे थोडी थाडी दूर माथै सातरा फवारा बणायोड है, जका रै चालणे सू बिरखा री रिमझिम अर शीतळता रो अनुभव हुवै। सिझ्या पौर अठै चोखी रोशण्या रै कारण रौनक और वढ जावै। आखिरी निचली मजिल मैं कश्मीर रै निशात अर शालिमार दाई पत्थर री ऊंची चौकी माथै खुबसूरत बारादरी बण्योडी है। पिंजौर मे स्वच्छ पाणी रा केई कुण्ड बण्योडा है। इणा मैं एक 'द्रोपदी कुण्ड' है। कैवा है कै अज्ञात बास रै दिना द्रोपदी इण कुण्ड मैं सिनान कर्‌या करती ही।

पिंजौर एतिहासिक अर धार्मिक स्थान है। घग्घर री सहायक

कोशल्या अर भज्जर नद्या रै सगम मायं ओ गाव बसोडो है। लोक मानता है कै आपरे बनवास काल में पाण्डव अठै ठहरया हा, जिण वजह सू इण रो नाम पचपुर पड्यो। बाद मैं बिगड़'र पिंजोर बजण लागग्यो। सन १२५४ मैं दिल्ली रै मुसलमान बादशाह नासिरुद्दीन मुहम्मद अठै हमलो बोल्यो अर प्राचीन भवना नै माग तोड दिया। बाद मैं औरंगजेब रै रिश्ते मैं एक भाई फिदाद खा इण री कुदरती सोभा देख'र अठै बाग बणावणो सरु कर्यो। १६७५ ई० मैं सिरमौर रै हिन्दू राजा रो इण खेतर मायं कब्जो होग्यो। १७६४ ई० मैं पटियाला रियासत इण मायं आपरो अधिकार कर लियो। आज कल औ हरियाणा प्रांत रो भाग है। प्राकृतिक सोभा अर मानव निर्मित सज्या सवर्‌या बागा रै कारण पिंजोर अत्यन्त दर्शनीय अर आकरसक है। सारे भारत रा सैलाणी अठै ढूकै। चडीगढ अर शिमले रै बीच हूणे कारण टूरिस्टा रो मेळो अठै मण्ड्यो रैवे। रात दस बज्यां ताई इण ठाम री रोशन्या अर बा रे उजाळै मैं मुळकता भरणा रै निजारे रो आनन्द लेतां दस बज्या बाद पाछा बस सू होस्टल पूग्या।

२७ तारीख रै दिन यात्रा रो दूजो चरण सरु हुयो। भोर मैं ५ बज्या ही तैयार हो'र पूणी सात रै नैड़े कालका रेलवे स्टेशन आग्या। अठै सू ८ बज्या री गाडी सू शिमलो जाणो हो। कालका उत्तरी रेल्वे रो इस्टेशन है। दिल्ली सू कालका बडी लाइन सू जुड्योडो है। पण आगे री यात्रा सकडे रेल मार्ग, जकै नै नैरो गेज कैवे, सू करणी पडै। गाडी रा डिब्बा अर सीटा छोटी हुवै। एक डिब्बे मे २०–२५ सू बेसी आदम्या री री जागा नी हुवै। कालको सू शिमले री दूरी ९० कि. मी है, पण ऊंची पाडी चढ़ाई रै कारण इणमे करीब ६ घण्टा लाग जावै। मारग ऊंचे पाहां गैरी घाट्या अर पाडी गुफावा सू निसरणे री वजह सू प्राकृतिक द्रश्या रा इत्ता आछा पल छण बदळता चित्र आख्या सामें माडै कै यात्री हरस रा हबोळा लेण लागै। इण मारग मैं ११० रै करीब सुरगा है। जद इणा मैं सू गाडी आवै तो गुफा टाबरा अर मोटियारा री सीट्या अर

रिलकाइयां सूं गूंजण लागै । पुरा मोन'र मिमरनी वेळा गाडी में साइटा आगणो पड़ै, नी तो अधारे मैं हाथ नै हाथ नी सूझै । चढ़ाई मार्थ गाडी री गति कठैई-कठैई १०-१५ कि मी प्रति घण्टा ताई कम रैवे । केई मोटियार तो चालती गडी मैं चढ़ण उतरण री क्रिडा रो भरपूरआनन्द भी लेवै । पाड़ो मोड़ां पर रेल री लाइना आमैं सामै दीसे । केई जाग्या तो दो तीन रेल लाइना चूडी उतार पट्यां मैं निजर आवै । करबी दै घण्टा री रेल यात्रा रै बाद सोलन नाम रो कस्बो आवै । सोलन कालका शिमला मारग रै अधबीच मे है । ऊचाई मार्थ थित अर घणो बनस्पति हुणे कारण आ जाग्यां स्वास्थवर्धक है केई सैलाणी अठै भी रुकै । आगे कण्डाघाट, सोगी बाद हुता तारादेवी स्टैशन पूग्या । तारादेवी शिमला सू ११ कि मी दूर है । अठै स्टेशन सू १ फलांग दूर आगूणे पासै छोटी पाडी मार्थ भारत स्काउट्स रो हिमाचल अर हरियाणा राज्यां रे प्रशिक्षण केन्द्र रा मडार प्रभारी सरदार श्री करतार सिंह म्हाने लेवण नै स्टेशन पुग ग्या हा । केन्द्र रा अधिकारी श्री आर पी शर्मा रै आदेश सू म्हारे वास्ते तीन तम्बू लगा राख्या हा । दो मैं आवास री व्यवस्था करी एक तम्बू स्नानादि खातर राख्यो । पाडां री सघन हरियावळ मैं ठैरण रो घणो आनन्द रैयो ।

आगले दिन २८ तारीख नै भोर मैं वेगा उठ'र, जल्दी त्यार हु'र ७ बज्या दिनुगे सडक मारग सू पैदल शिमले ताई रवाना हुया । स्काउट केन्द्र रै उत्तर पिछम सु सडक आटी टेढी अर ऊंची नीची केई घूम खाती चालै । औ संमूळो रस्तो इण खेतर रो चोखो कुदरती आरण है । एकै कानी ऊचा डूगर दूजै कानी ढळवां आडा घाट । एक इंच जमीन भी हरयावळ सू खाली नी दीसै । पाडी ढाला मार्थ फर, देवदार, सदाबहार अर बलूत रा पत्ता सू लद्‌या अर पून मैं झूमता बिरखा री ओळायत है । मारग म कठैई कठैई ऊंची जाग्या खपरैल री भाडो छात आळा मोटा छोटा सोवणा एकल दूकल मकान आपणो ढाण्या दाई बस्योड़ा है । इण

तर में गाय अर बकर्‌या रा एवड भी चराई खातर निसरता मारग में
मलै । ठंडे वखत मर खुशनुमा सोवणे निजारे रै कारण करीब ढाई तीन
घण्टा में शिमला रै नेड़े पूगग्या । नगर सू खासी पैला ई टीन अर [illegible]
री छात आळी इमारता धीरे धीरे सइ हुण लागगी । [illegible]
इमारता रो रग लाल हुवै । १० वज्या सिसल हॉटल रै [illegible]
शिमले री माल रोड माथै पूग्या । माल रोड [illegible]
निक शैली रो फूटरो अर आकरसक बजार है । [illegible] अर [illegible]
मिटाणे वास्ते सहर रे मुख्य बजार में एक [illegible] में चाय
पीवण पूग्या । एक कप चाय अर एक [illegible]
भुजिया, बिस्कुट आपणा साथे हा । [illegible] १५/- [illegible]
दिया तो मैंगाई रो अहसास हुयो ।

घूमता हुया स्कैंडल पाइट पूग्या । अठै चौड़ो तिराहो है । एक
सडक माल कानी, दूजी गाधी मैदान [illegible] कानी अर तीसरी
बस्ती कानी जावै । अठै रो चौक नगर रो केन्द्र है । सैलान्या री भीड
अठै चारू पौर मडती दीसै । नगर रा [illegible] अठै पूगै । अठै
सू गाधी मैदान करीब १ फर्लांग हुसी । अठै री ऊंची पहाडी सू आस
पास रै घाटा, इमारता अर प्राकृतिक [illegible] निजारो दीसै ।
मुनसपल्टी री तरफ सू पाड रे सिर [illegible]
आराम अर हवाखोरी ताई लकडी री बैंच [illegible] लगायोड़ा है अर
दम अठै बैती रैवे । मई रो महिनो [illegible] है । टट्टी पून हर-
अठै री कुदरती सीतळ अर स्वास्थ्यवर्धक [illegible] गरमी नी मालूम हुई ।
कडीमनर री हवा भी कर सकै [illegible] कूलर का एअर
राजनैतिक सभावा रो आयोजन हुवै । [illegible] मैदान में ई शिमले री बडी
ऊंचे चबूतरे माथै आदम कद [illegible] राष्ट्र पिता गांधी री मूरती
छत्योडी बारादरी भी बणायोडी है [illegible] इण बारादरी मोकळाई में एक
लोग विसराम करता अर हथाई करता रैवे । [illegible] मिनिट सूं बणी बैठा [illegible]

शिमले री मात गुरगा पाट पैदल घूमण ताईं आदर्श स्थान है
अपर माल, गांधी बाजार, स्कैंडलपॉइंट आद में वाहन नी चालै। इण
नगर साफ सुथरो अर ताजगी देणे वाळो रैवे। गांधी मैदान रै एक सि
माथै पहियेदार जूता सू चालण वाळे खेल स्केटिंग रो रिज है। युवा
किशोर लोगां नै इण खेल मैं घणो आणद आवै। स्केटिंग रिज रै पश्चम
एक सडक लक्कड बाजार कानी नीचे ऊतरै। अठै रो लक्कड बाजार क
री बडी भारी मंडी है। पाडी जाग्या री इमारतां मैं काठ रो वेसी इस्
माल हूवै। *अठै लकडी री कलात्मक कारीगरी रो सामान 'वाल हैंगिंग*
चित्र, रमतिया, छड्यां घटाया वांस री कुरस्यां, फर्निचर आद आधुनि
सामान घणो सासरा मैं मिलै। म्हे लोग भी अठै सू लकडी रो सजाव
सामान आदि खरीद्यो, जको आज भी इण यात्रा री याद ताजी कर
रैवे।

अपर माल सू ई बेई रास्ता लोवर बजार मैं ऊतरै। लोव
बजार शिमले रै निवास्या री रोजमर्रा री खरीद बिक्री रो बजार है
म्हारो अनुमान है के पाडी *नगर्‌यां* मैं शिमले जतो बडो बजार श्रीनग
अर मसूरी जिसी नामी जागावां मैं भी कोनी। शिमले मैं स्थाई तोर
भी लाख नेडै लोग रैवे। आस पास रै खेतर रा वासी भी आपरी काम
जिन्सा अठै सू खरीदै अर सैलाणी तो आखै साल अठै ढूकता ई रैवे
कैवे के २ लाख यात्री हर साल शिमले पूगै। हवाई अड्डो, रेल सुविधा, बड
बडा पाच सितारा होटल, क्लब आद आधुनिक सुविधावां रै कारण शिमल
रो पाडी नगरां मैं अनूठो स्थान है। ऊंचे स्तर री शिक्षण संस्थावां अ
खेल कूद रा साधन भी अठै दाई दूजी जाग्या नी मिलै।

शिमलो चन्द्राकार पाडी री करीब १२ कि. मी. *भूम माथै पट्ट्या*
मैं बस्योडो नगर है। समुद्र तळ २१०० हजार मीटर री ऊंचाई माथै
बस्यो ओ नगर "शांति अर प्रेम" रो क्षेत्र गिणीजै। पण इण री खोज

लड़ाई री तूफानी पृष्ट भूमि में हुई हो। अंग्रेज अर गुरखां रै बीच १८१६ री लडाई में इण री पतो लाग्यो हो। श्यामला देवी री ठाम हूणे सूं उण दिनां औ स्यामला नाम सूं ई जाणीजतो। कैंवे के पैंलम पैंल तो अंग्रेज अधिकारी अठै आ'र तम्बुआं में ठैर्या करता। १८२२ में मेजर कैंडी नाम रे फौजी अफसर आपरो ठावो आवास अठै बणवायो। बाद में भारत रै वाइस राय रे ठैरण रा भवन अर दफ्तर भी बण्या। वाइसराय साल में ६ महिना अठै रैंवतो। गरम्यां में केन्द्र सरकार रा दफ्तर भी राजधानी दांई अठै लागता। १९०४ में कालका शिमला रेल मारग बण्या पछै आवाजावी री घणी सुविधा हूगी। आज तो तरै-तर बढती सुविधावां उपलब्ध हूणे री वजह सूं पाड़ी सैरगाहां में इण रो शीर्ष स्थान हूयग्यो है।

यू तो मई में भी शिमले री मौसम ठंडो अर खुशगवार हो, पण बताइजै कै इण रो रंग मौसम सुबीव बदळतो रैवे। हेमत अठै री सै सूं चोखी मौसम गिणीजै। जद हरियाळ अर बरफ दोन्यू रा मोवणा दरसाव नै देख्यो जा सकै। बसंत में सुरगा पुष्पां री फुलवाडी रो निजारो भी घाट भी हूवे। बसंत री हवा में अठै घणी ताजगी अर सोरम रैवे। दिन ठीक-ठीक गरम अर ऊजळा तो रातां शांत, सीतळ अर सुखद लागै। बसंत रै दिनां में तो आपै लायण आळा कुदरती जमळी फूलां री बढवार भी देखण जोग हुवे। मानसून में बादळबाई रा छिन पळ बदळता रूप दीखै। अठै जद पाणी पड़ै तो मूसलाधार। प्रकृति'रौ रुद्र रूप बीज री कड़कड़ाट में परगट हुवै। कलाकारां अर कवियां नै इण सू कित्ती प्रेरणा मिलै कोई संवेदना रो घणो भावुक व्यक्ति ही बता सकै। बिरखा पछै तो आ नगरी अर इण रै आसे-पासे री सैंमूळी भूम जाणै हर्‌यो ओढणो ओढ'र लाजवती नार री सी मूळक बाटती बिखेरती लागै।

दोपार बाद शिमले रै विख्यात मिंदर जाकू रा दर्शन तांई गया। जाकू में हनुमानजी रो मिंदर है। औ मिंदर २४५५ फिट री ऊंचाई माथै

है। इण री चढ़ाई माल सू सरु हुवै। चढाई २ कि मी हुसी, पण घणी खडी अर दोरी है। पतरी भौ मैं भी पूण घण्टो, चढण मैं लाग जावै अर घणी हाकणी सू सास फूलण लागै। बीच मैं केई जाग्यां सुस्तावणे खातर म्हांने बैठणो पड़्यो। पण ऊपर पूगा पछै पूरो शिमलो नगर अर खासी दूर ताई रा फूटरा कुदरती निजारां नै देख'र सांति अर आणद मिळ्यो। हनुमानजी रा दर्शन कर्‌या। मूर्ति साधारण पण जूणी है। दरसन पछै पूठा उतर'र माल माथै आया। भळै बस पकड'र तारादेवी ६ बज्यां तक पूगग्या। दिन भर री थकान ही। भोजन उपरात बेगा ही सोग्या।

२६ मई नै शिमला रै नेडे-कनै रै देखण जोग ठामा रो कार्यक्रम राख्यो। तडकै बेगा तैयार हुया। ८ बज्यां ताई नास्ते आद सू निमट'र समर हिल ताई बस सू रवाना हुआ। समर हिल तारादेवी अर शिमले रै बीच रेल स्टेशन भी है। शिमले सू आ जाग्यां करीब अधबीच में हैं। औ ठाम ऊचाई माथै है। समुद्र तळ सू १९८३ मी. ऊचो हुणे कारण खासी ठडक अठै रैवे। वनस्पती तो चारू मेर दरियाव ताई हबोळा लेती दीसै। पवन रो वेग बेसी हुणे सू विरख री टाप्पा लूम्बा सरीसा हींडा खाती दीसै। ८ ३० बज्यां ही अठै पूग ग्या हा। आसे-पासे री पाडया मैं सैर करता अर कुदरती फुलवाडी रो आणद खासी देर तक लेता रैया। १० बज्यां स्टेशन रै पूरब कानी आटी-टेढी पाडी पगडांडी रै मारग सू 'चिडविक प्रपात' रै नाम सू मशहूर इण क्षेत्र रै बेमिसाल फूटरे झरने नै देखण नै बईर हुया।

आगे रो करीब ४/५ किलो मीटर रो आखो रस्तो झाड झखाड मां'कर नीसरे अर चूडी उतार नीचे ई नीचे जातो रैवे। उतराई मैं तिसळने रो डर तो रैवे पण जोर पगा माथै राख'र करीब-करीब दौडती चाल सू वेहणो पडै। आध-पूण घण्टा मैं ई ठेठ नीचै पूगग्या। झरनो ६७ मीटर ऊचे सू पडै। एकदम धोळो निरमळ जळ दूधिया झागा री रगत मैं

बदळ जावै। बारम्बर मिटता बणता झाग इण सुरगी ऐकात अर शात ज्जाग्या मैं जीवन री गतिशीलता नै दरसावती लागै। वारली प्रकृति री क्षणेक रुपता अर आत्मिक सत्ता री गैराई दोन्यू रो अठै परतख अनुभव हुवै। इसा ठामा मैं पुग'र केई ताण तो जीवन जगत रे अभाव-अभियोगा नै आदमी कताई भूल जावै। सरलता अर निश्छळता रो सहज अससास मन मायँ नै परभावित करै। डेढ-दो घटा इण सुरगे शात क्षेत्र रा दर्शन लाभ कर दो बज्या पूठा समर हिल पुगग्या। बठै मू शिमला पुच'र बस मूं बरफ रै खेला खातर आखे ससार मैं परसिध कुफरी ताई रवाना हुया।

शिमला सूं कुफरी १६ कि. मी. दूर है। आधे घटे मैं ई कुफरी पूगग्या। कुफरी ऊँची पाडी जाग्यां है। समुद्र तळ सू २५०१ मी. ऊपर। अठै केई किलो मीटर ताई सपाट मैदान है। विरख भी शिमले रै बूजे ठामां नाव सूं कम है। हर साल दिसम्बर रै लारले दिना मैं अठै वरफ पडण लाग जावै। जकै री वजह सूं जनवरी का फरवरी मैं शीतकाल रै 'स्कींग' 'स्लैजिंग' आद खेला रो अन्तराष्ट्रीय आयोजन अठै हुवै। देस-विदेस रा नामी खिलाडी अठै ढूकै। उण दिनां तो आ जाग्या ओळखाण मैं ई नी आवै, इसो अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप अर भाई चारे रो माहौळ अठै बणै। पण म्हे तो मई रै दिना अठै पूग्या हा जद कै ओ ठाम सूनो अर उजाड सो लागे हो। मन मैं आ तसल्ली कर'र ई सतोष कर्‌यो कै कम सूं कम देखण ताई तो जाग्या अछूती नी छोडी। सिझा ६.३० बज्या ताई पाछा डेरे पूगग्या। ३० सित नै दिनुगै ८ री गाडी सू बीकानेर ताई पूठा रवाना हुया। इत्ता बरसा पछै ओजू ताई भी लाखू लोगा रै स्यायी आवास आळे इण नगर री प्राकृतिक सुदरता, साफ-सफाई, दर्शनीय ठामा रा निजारा अर आधुनिक सुविधावां यादां रै परदै मायँ है ज्यूं रै ज्यू मण्डयोड़ी दीसती रैवे।

●

मुगतधाम हरद्वार अर पाडां री राणी मंसूरी

भारत री संस्कृति में गंगा अर इण रे पावन तट माथै उत्तर में बस्योड़ो हरद्वार रो घणो महत्व है। पुराणां री कथा रै मुजीब समुन्दर मथणे सूं जको इमरत मिल्यो बीने राकसां सूं बचावण खातर इमरत कुम्भ ले'र इंदर रो बेटो जयंत दोड़्यो। बीच-बीच में बिसाई खाण तांई जिण चार ठामां में कुम्भ नें राख्यो, हरद्वार उणां में एक पवित्र धाम है। इमरत री थोड़ी घाटी अठै छळक जाणे सूं ओ ठाम प्रथ्वी में पूजनीय होग्यो। इण वास्ते ई हर १२ साल बाद अठै कुम्भ रो पावन मेळो भरीजै। मृतक संस्कारां खातर भी इण नै पवित्र मानीजै। परिवार रै केई व्यक्ति री मौत पछै उण रो तरपण, पिंडदान अर अस्थ प्रवाह भी अठै ई करीजै। पर्यटकां खातर भी हरद्वार मनोरम अर देखण जोग जागां है। शिवालिक री सुंदर पाड़्यां रा पग धोवती गंगा अठै पैली बार समतळ भूम माथै ऊतरै। भारत रै विशाल भाग में बैवती अर रिधि-सिधि, धन-धान्य सूं देश नै सम्पन्न बणाती गंगा बंगाल में जा'र असीम समुन्दर में मिल जावै। इसै पावन तीरथ रै दर्शनां री साध घणै दिनां सूं मन में ही। सन् १९८० रै मई माह री ८ तारीख नैं चार साथ्यां सागै इण धाम री जातरा रो कार्यक्रम बणायो।

सिंझ्या ७ बज्यां री गाड़ी सूं बीकानेर सूं दिल्ली रवाना हुया।

भोर में ७ बज्यां दिल्ली पूगग्या । अन्तर्राष्ट्रीय बस अड्डे सूं हरद्वार री ८ बजी म्हाळी बस पकड़ी । मेरठ, मुजफ्फर नगर, रुड़की रै रस्ते २.३० बज्या हरद्वार पूगग्या । दिल्ली सूं हरद्वार री केई रेल गाड्या भी चाले, पण म्हा में समय वेसी लागै । रिक्शो पकड़'र बीकानेर री धर्मशाळा पूग्या । बठै रा व्यवस्थापक रामदेवजी पैला रा जाणकार हा । जाता ई सड़क ऊपरलै कमरे री व्यवस्था होयगी । सामान मेल'र दोपहर रो भोजन कनै ई ढाबे में कर्यो । पूठा आ'र थोडी ताळ विसराम कर चार बज्यां गगा मैया रा दरशन करण ताईं हर री पैंडी कानी रवाना हुया ।

धर्मशाळ सूं हर री पैंडी कोई आधा फर्लांग हुसी । स्टेशन सूं उत्तर दिशा में जकी सड़क जावे उण माथै ही १ कि मी. दूर उत्तर में धर्मशाळ है । आ ई सड़क आगे पैंडी माथै पूगै । सैंमूळै मारग रै दोन्यू पासी बजार दूकाना है । खाणै-पीणै री दुकानां, ढाबा, परसाद अर मणि-धारी आद री दूकाना ई बेसी है । साधुआ अर भिखमगा री तादाद घणी है । जातरी अठै सूं गगाजळ ले जावै, इण वास्ते खाली डिब्बा, पीपा, बोतला वेचण आळी दूकाना भी है । हर री पैंडी मोड मुड़ता ई सामै दीखै । पैंडी रो निजारो मणमोवणो है । नदी रै सारै पछमाद दिशा में मकराणे सूं बण्योडी विशाल चौकी है । इण चौकी माथै भजन कीर्तन हूंता रैवे । चौकी सूं नीचे उतर'र गगा नदी ताईं जाण आळा पगोथिया है । मूल नदी री एक शाखा छोटी नहर दाईं खासे वेग सूं इण रै आगे बैवे । इन नहर रै बीच में ई गगाजी रो प्राचीन मिंदर पाणी रै माय ही बण्योड़ो है जठै दर्शनार्थी चौकी आबलै पुळ सूं दर्शन खातर हर बखत जाता रैवे । 'गगा मैया री जय' रै निनाद सूं समूळो वातावरण सदा गूंजतो रैवे । मिंदर रै कनै बीच रै बडै पगोथिये माथै पण्डा रा लकडी रा तखत अर उण माथै तापडे सूं बचण आळा मोळ छाता लाग्योडा है । जातरी सिनान करती वेळा आपरो सामान, कपड़ा आद अठै मेलै अर सिनान दरसन रै बाद पण्डा नै दिखणा देवै ।

हर री पैड़ी रै एकै कानी महिलावां रै सिनान करणे वास्ते जनाना घाट बण्योड़ो है। इण घाटां रो एक सिरो नहर सूं अर दूजो गंगा री मुख्य धारा सूं जुड़्यो है। इणं घाटां माथै ई 'बिड़ला टावर' है। गंगा मिंदर रै दखिण मैं नहर रै मोड़ माथै 'अस्थि घाट' है जठै भारत रै दूर-दूर सूं सरधालु आपरे पुरखां रा अस्थ ला'र बैवावै। गंगाजी नै देशवासी प्राचीन काल सूं ई मुगत दायिनी मानै। परम्परा सूं विश्वास अर आस्था आ है कै अठै भस्म प्रवाहित करणै सूं दिवगत आत्मा नै जलम मरण सूं छुटकारो मिलै।

हर री पैड़ी सूं गंगा रै उछाळ खाते प्रवाह नै देखते रैणे सूं मतस नै अपूर्व शांति अर हरख रो अनुभव हुवै। दखिण कानी थोड़ी दूर जा'र गंगा माथै एक चोड़ो बड़ो पुळ है, जकै सूं गंगा रै दूजे किनारे पूग्यो जा सकै। पुळ माथै खासी ताळ खड़ा हू'र नदी रै दोन्यूं किनारां माथै सरधालुओं रै सिनान ध्यान रा निजारा देखता रैया। पुळ माथै अर नदी रै लारले पाड़ माथै बांदरा भी खासी तादाद मैं उछळ कूद करता दीसै हा। पुळ सूं नीचे आ'र म्हे हर री पैड़ी माथै सिनान करण नै पूग्या। पाणी मैं पग घालता ई जळ री शीतलता रै कारण सगळै शरीर मैं एकर कम्पकपी हूण लागी। धीमैं-धीमैं शरीर ठंडक बरदास्त करण लाग्यो। फेर तो कोई घण्टे भर ताई सिनान रो आणद लियो। सिंझा पड़ण आळी ही। आरती ताई बठै रुकग्या।

आरती रै बखत हर री पैड़ी माथै देश रै सगळा हिस्सा सूं पूगण आळै मानखे रा दर्शन हुवै। छोटा-बडा, भागवान अर गरीब सरीखे सरधा भाव सूं गंगा मैया रो जयकारो लगाता, सिनान करता अर घाट रै मिंदरा रा दर्शन कर जीवन री सार्थकता रो अनुभव करता सा लागै। कोई आध घण्टे रे उपरात बडा-बडा दीपदानां मैं जोत जगावता कोई पचासूं पुजारी अर पंडा घाट माथै दीसण लाग्या। घाट रे मिंदरां मैं बडा

वनि अर शंख नाद सूं संमूळो स्थान निनादित हुण लाग्यो । पंडितां रै
चे सुर मैं सुर मिला'र सगळा भगत जन आरती गावण लाग्या । चांरू
र रा घाट सरघालुआं सूं ठमाठस ऊपरातळी भरग्या । हजारूं री संख्या
लोग-लुगायां पुज्जां रैं दोनां मैं दीप प्रज्वलित कर पावन गंगा में
वाहित करण लाग्या । धूप दीप री सुवास अर उजास सूं दीपावली रो
ो निजारो चारूं मेर दीसण लाग्यो । संमूळो वातावरण एक अनूठैं
आध्यात्म भाव सूं भरग्यो अर धार्मिक चेतना रैं आनन्द मैं लोग झूमता
ा दीस्या । वास्तव में हरद्वार मैं गंगा तट माथै आरती रो द्रस्य एक
जीवंतो-जागतो परतख अनुभव है, उण नै लेखनी सूं लिख कर बतावणो
सम्भव नी है । साढ़ो आठ बज्या तांई आरती पछ्यां घाट री भीड़ छंटण
लागी । म्हें भी बाजार मैं भोजन कर'र घूमता घामता साढ़ी नौ बज्यां
धर्मशाळ पूगग्या । प्रसन्नचित्र वातावरण में बोलता बतळावतां रात्रि विसराम
कियो ।

६ मई नैं दिनुगे गंगा सिनान कर, नास्ते आद रैं बाद मनसादेवी
खातर ८ बज्यां रवाना हुया । गंगा रै पच्छमाद एक छोटे डूंगर माथै मनसा
देवी रो प्राचीन मिंदर है । नरसिंह धर्मशाळा रैं सामे पगडंडी रैं मारग सूं
कोई १ से० मील पाह री चोखी चढाई है । पंण केई साल हुया अबै
ऊपर जावण खातर बिजली री ट्राली 'रोप वे' बणग्यो है । चार क सवारी
रो आवण जाण रो टिकट है । कोई तीन-चार मिन्टा में ई ट्राली ऊपर
पूग जावै । ट्राली सूं हरद्वार सैं'र, गंगाजी अर सामै गंगा पार वाड़ी माथै
बणोड़ै चंडी देवी रो द्रस्य बडो मोवणो लागै । अम्बर में झूलती ट्राली मैं
बैठणों रूंगटा खड़ा कर देवै । एके पासी नीचे बसती रो सोवणो बिस्तार
अर दूजै पासे असीम आभै मैं आपरी ऊंचाई अर कठोरता री घोखणा
करतो डूंगर । नगर रे पूरब मैं बळ खावती नदी चांदी रै गोटे बरोबो
दीसे । जाणे जंगळ रैं हरियावळ री ओढ़नी मैं गोटे जड़्या परिधान पैर'र

आ भगरी आपरे स्वामी महादेव री अभ्यर्थना खातर सज संवर'र खड़ी हैं।

मनसा देवी रो मिंदर छोटो पण प्राचीण है। मानता प्रा है कै अठै देवी रा दर्शन करणै सूं भगता री मनोकामनावा पूरी हुवै। आप घटा ऊपर ठैर्‌या। ऊपर बौत तेज हवा वैवे। इत्ती ऊंचाई पर भी पीणै रै पाणी री आछी व्यवस्था है। मिंदर रै बारै बैठ'र विसाई खाण तांई सीमेंट री चोकया बणायोडी है। जका जातरी पैदल मारग सूं पूगै वै अठै बैठ'र सुस्तावे अर ठंडी निरमल हवा खाणै उपरांत मळै तरो ताजा हू जावै। आधुनिक साधना री ट्राली सू जातरा सोरी तो हूयगी पण परिश्रम कर चढाई पूरी करणै रो जको आनन्द आवै उण रो आस्वाद तो दूजो ही हुवै। पाछा ट्राली सूं ९ बज्यां तांई नीचे आयग्या। भीम गोडा, सप्तरिसी आश्रम आद देखणने रवाना हुया।

हर री पैडी सूं उत्तर मैं नदी रै सारै-सारै सडक मारग चाले। कोई १ फर्लांग मार्थ ई पश्चमाद दिशा मैं भीम गोडै रो छोटो सो पक्को सरोवर है। इण मैं सदा पाणी रैवे। कैवा आ है कै आपरे अज्ञात वास रै दिना पाण्डव अठै सूं निसर्‌या हा। उणा ने तिस लागी। महाबली भीम आपरी गदा रै प्रहार सूं अठै खाडो कर दियो। उण रै पाणी सूं पांचू भाई आपरी तिस मिटाई। अद सूं ई उण जाग्यां नैं पवित्र मानै अर उण ठौर पक्को सरोवर बणा दियो है।

भीम गोडा सूं कोई तीन मील दूर उत्तर मैं सड़क मरग सूं सप्तरिसी आसराम है। बीच मैं छोटा—मोटा मिंदर धर्मशाळावां आद है। रास्तो हर्‌यो भर्‌यो है। सप्तरिसी आसरम मैं भारद्वाज, वशिष्ट, कश्यप, अत्री, कौशिक आद प्राचीन रिसियां री भव्य मूरत्यां अर दुर्गा रो आछो मिंदर हैं। दुर्गा रै मिंदर मैं प्रतिमा सिंह वाहिनी है। मिंदर प्रतिमा रै

दोग्यू मेर कांच लाग्योड़ा है। इण कारण एक प्रतिमा ही अनेक रूपां मैं भासित हुवै अर आकर्षक लागै। आसरम रै लारे गंगा अनेक धारावां मैं वैवे। कैवे के प्राचीन रिसियां रा पग धोवण नैं गंगा भी सात धारावां मैं बंटगी है। इण धारावां नैं सप्त सरोवर रो नाम दियो है। अठै पाणी रो वेग अर गैराई हरद्वार सूं कम है इण कारण न्हावण मैं बौत आनन्द आवै। नदी आपरे मूळ प्राकृतिक रूप मैं भाटां अर शिला खण्डां रै बीच प्रवाहित हुवै। अठै पक्का घाट नी हैं। पाणी इत्तो निरमळ अर शीतळ कै पूछो मत। तळ रा कांकर पत्थर ऊपर सूं साफ दीसै। अठै खासी ताळ न्हाणै अर जल क्रीड़ा रो आनन्द लियो।

१ बज्यां रै नेड़ै परमारथ आसरम कानी चाल्या। औ सप्त रिपी आसरम रै नेड़ै ई है। औ आसरम देवी सम्पद मण्डल, जको कै परमारथ निकेतन बजै, उण री एक शाखा है। आसरम रै माय घना शीतळ छाया आळा बड़ा-बड़ा बिरख है। हरियाबळ अर नदी तट रै कारण पून मैं ठंडक अर नमी रैवे। अठै भी दुर्गाजी अर दूजा देवी देवतावां री बौत सुंदर मूरत्यां है, जकां नैं देखते जी नी धापै। दो बज्यां मोटर मैं बैठ'र पाछा हर री पैडी रै तिराहे माथै पूंच्या। बाजार मैं भोजन कर्‌यो। तीन बज्यां तांई पूठा धर्मशाळा पूग्या अर विसराम कर्‌यो।

सिञ्झा ६ बज्यां फेर नीचले बाजार रै रास्ते हर री पेड़ी खातर चाल्या। हरद्वार रै इण बाजार मैं सदाई खासी भीड़-भाड़ रैवे। दलथाद सिरे फळ अर आचार-मुरब्बां री केई दूकानां है। 'अचार री इत्ती बड़ी दूकानां तो बड़े-बडे सैरां मैं भी देखणे मैं नी आवै। एक साथी बतायो कै अठै घास रो भी अचार मिले। दूजी दूकानां मे चटायां, बास री टोकर्‌या, गलीचा, रामनामी चादरां, माळावा, सिंदूर अर प्रसाद आद री बिक्री बेसी हुवै। ढाबा, मिठाई अर दूध दही री दूकानां भी खासी है। कपड़े, मणिआरी अर परचून री भी चोखी बुकाना है। बाजार रै आखिरी सिरे

ऊपर एक गली गगा रै पुळ माथै मिवळै । अठै सू ई हर री पैडी ताई पूगण सातर चौडो पक्को मारग जावै । नदी रै किनारे लकडी री चौक्यां माथै चाट अर क़ुल्फी री कोई पचासू दुकाना दिखै पड्या मडै । इणां माथै खासी भीड रात ताई रैवे । इण दुकाना रै सामै शहीद भगतसिंह री एक मूरती स्मारक रूप मैं बणायोड़ी है । पावन तीरथ मर देशभक्ति रो सगम मन मैं पवित्र भाव उपजावै । दिखै बेळा अठै कीर्तन अर हर जस गावती मण्डल्यां बैठी तन्मय हू'र भक्ति री आनन्द लेवती दीसै ।

हर री पैडी माथै मर पुळ रै पार बिडला टावर कनै गगा रै दोन्यू किनारा माथै हजारू लोगा री भीड दिखै ने भेळी हू जावै । सैंकडू लोग घाटां माथै बैठ'र गगा री निरमळ धारा रै प्रवाह नै देखता रैवे । केई लोग गमछे का थेले म आम बाध'र ठहा हूण ताई गगा रै किनारे बणायोडो सांकळा आळै खम्भा सू बांध'र पाणी मैं टेर देवै अर घण्टे आधी घण्टे बाद फ्रीज सू ई बेसी ठडा आमा नै खाणे रो आनन्द लेवे । अने सम्प्रदायां रा साधू, सत अर दान-दक्षणा मागण आळा लोग भी दान-पा अर रसीद री किताबा लियां घूमता रैवे । भिखमगा अपाहज अर अभ्यागत भी बौत घूमै । लोग सरधा सारू थानै रुपया पइसा देवै । पण लाचार अ दरिद्र लोगा री इत्ती बडी सख्या अर उण री ठावो निदान आजाद देश समाज सामै चुणोती दांई दीसै ।

साढ़ी सात बज्यां पछै दीपमाळका रो द्रश्य बौत लुभावणो लागै महिलावा पुरुष, बाल, वृद्ध सै कोई दीप जगा'र जल मैं प्रवाहित करता अर 'गगा मैया की जय' रो जयकारो लगाता दीसै । दूजै पास गगा मिंदर अर बीजा अनेक मिंदरा सू घटा धुनी रै साथै हाथा मे दीप दान लियां अनेक पुजारी अर ब्रह्मण ऊचे सुरा मैं आरती गावण लागै । हजारू भक्त जन भी वांरे लागै शामिल हुवै । सारो वातावरण भारतीय संस्क्रति री जननी मा गगा री आरती अर अरदास सू एकमेक हू जावै । सैंकडू घट्या री

ध्वनि सैशूळै क्षेत्र मैं दूर-दूर तक गूंजण लागै। आरती पछै भी कई देर ताई आ गूंज काना मैं सुणीजती रैवे। आरती रै उपरान्त भीड धीरे-धीरे छटण लागी। म्हें लोग तो एक घटे ताई और घाट माथै रुक्या। गंगा किनारे बैठ्या पानी म झिलमिलावती रोशनी देखता रैया। रात्रि रै दस बज्या भी सिनान करण आळा भक्ता री कमी नी ही। आस्था रै अटूट अर अनूठै सूत सू धरम प्राण लोग इण देश मैं किया आज ताई बध्या है, हरद्वार जिस्या तीरथा सू ई इण बात रो परतख ग्यान हुवै। इछा न हुणै पर भी धरमशाल बद हुणै रै डर सू पूठा धुम्या।

१० मई नै दिनुगे ८ बज्यां तागा मैं बैठ'र कनखल खातर रवाना हुया। स्टेशन सू कोई तीन मील री दूरी माथै अठै दक्षेश्वर महादेव रो जूणो अर मानीतो मिंदर अर सती कुण्ड है। कोई २० मिन्टा मैं ई बठे पूगग्या। आ जागा हरद्वार सू शांत है। दर्शणार्थी तो आता-जाता रैवे, पण भीड भडाको उत्तो कोनी। अठै प्राचीन काल मे सती रै पिता दक्ष प्रजापति महायज्ञ करायो, जिण मे शकर भगवान नै न्यूतो नई दियो। सती रै सामै उण रै पति नै दक्ष अपमान रा सबद बोल्या जिण सू दुखी हो'र सती हवन कुण्ड में भसम हुगी। सास्त्रा रै मुजीब गगाद्वार, कुशावर्त, बिल्व तीरथ, नील परवत अर कनखल ए पाच ठाम हरद्वार रा पचतीरथ बजै। कनखल रै कुण्ड मैं सिनान करणै सू इसान पवित्र हू जावै अर मुगत पावै।

इण जागा सू थोडी ई दूर भारत रा राष्ट्रभक्त सपूत स्वामी श्रद्धानंद जी द्वारा थरप्योडो, आखे ससार मैं मशहूर, गुरुगुल कागडी विश्व विद्यालय है। इण रो स्थापना रो उद्देश्य भारत रे प्राचीन ज्ञान विज्ञान अर सस्कृति री दाय नै सुरक्षित राखणो अर उणा रो विकास करणो हो। कोई समय अठै रो स्नातक हूणो घणै मान री बात ही। विश्व विद्यालय रो आहतो खासो बडो है। अठै आयुर्वेद शिक्षा री चोखी

व्यवस्था है। आयुर्वेद रो विशाल संग्रहालय देखण जोग है। अठै री आयुर्वेद फार्मेसी मैं तरह तरह रा रसायन, अर्क, भस्मा, गुग्गल आद बणै अर आखे देश मे ई नई विदेशां में भी बिकै। मन में प्रेरणा हुवै कै औखद विज्ञान में स्वावलम्बी भारत आपरे क्षेत्र मे प्रयोग परीक्षण नैं क्यूं नी आगै बढावै अर क्यूं खतरनाक असर पैदा करण आळी आयुर्विज्ञान ने अपणावण री आंधी दौड मैं देखा–देखी सामल हुवै। अठै रो वेद मिंदर अर पुस्तक संग्राहलय भी सरावण जोगा है। इण ठामा रा दर्शन कर ११ बज्यां ताईं पूठा धर्मशाळा आग्या। भोजन विश्राम रै उपरांत १२ बज्या री बस पकड़'र देहरादून ताईं रवाना हुआ।

करीब साढ़ी चार बज्या देहरादून पूग'र बाजार मैं जैन धर्मशाळा मे रुक्या। धर्मशाळा साफ सुथरी अर नुवी बण्योडी है। आगले दिन सहस्तर धारा, जटाशंकर महादेव अर बन शोध प्रतिष्ठान आद देखण रो कार्यक्रम हो। उण दिन तो शहर अर बाजार आद देखण मे ई बितायो। देहरादून बौत हरयावळ सूं भर्यो सैर है। चासूं मेर हरया ऊंचा डूगर तो है ही सैर मैं भी लीची, आम, जामुण अर पपीते रा पेड घर–घर मैं लाग्योडा दीसे। अठै री आबहवा आछी है, इण कारण उत्तर भारत रा मायी अर समर्थ लोग सेवा निवरत हू'र अठै ई बस जावै। अठै 'दून स्कूल' अर ब्राउन स्कूल जिस्सी नामी शिक्षण संस्थावां है। अंग्रेजी माध्यम री बीसूं छोटी–बडी चोखी स्कूला अठै है पण हिन्दी माध्यम री संस्थावा इत्ती आछी नी हैं। दिमागी गुलामी अर कोताई नैं छोड'र ओ देश आपरी निजी ओळखावण कद बणासी औ विचार पीडा पूगावै। देहरादून भीड–भाड आळी बस्ती है। मसूरी अर चकराता रो मारग हूणे सूं अठै पश्चिमी तरज रा अनेक चोखा होटल है। देशाटन अठै रो परमुख उद्योग हूणै सूं दूजी जागवां सूं महंगाई भी घणी है। जका आम्बा उण दिना बीकानेर मे ४ रु किलो मिलता वै अठै घणी उपज हूणे रै उपरांत भी ६ रु किलो

मिल्या। मिठाई, नमकीन अर भोजन री थाली रा दाम तो दूणें सू भी बेसी हा।

११ तारीख नैं दिनुगैं ७ बज्यां जटाशंकर महादेव रे प्राचीन मिंदर गया। धर्मशाळा सू मिंदर कोई २-३ किलो मीटर री दूरी मायँ है। टैम्पो चालता रैवे। मिंदर री जाग्यां बौत हरी-भरी है। मूल मिंदर सड़क सू कई ढाळ उतर'र गुफा दाई स्थान मायँ बण्योड़ो है। शिवलिंग पर जलरी सोवणी है। मिंदर रैं ऊपर बट रो प्राचीन विरख है, उण री जटावां सू पाणी झरतो रैवे। सरधालु पेड री जटावा नैं शिव री जटा कैवे। मिंदर खासो जूणो है अर इण री मानता भी खासी है।

पाछा आवता वन अनुसधान शाला ताईं चाल्या। श्री एन. जी. रैं केंद्रिय कार्यलाय सू थोडी ई दूर चकराता मारग मायँ ओ भवन बण्योड़ो है। छोटी ईंटां मे सफेद चूने री टीप सू बणी इत्ती कलात्मक इमारत और कठई देखणे मे नी आवैं। इमारत री भव्यता अर सुदृढता परभावित करैं। ईं नैं देख'र लागे कै आज काल सिमेंट रो जावक मणूतो इस्तेमाल हू रयो है। आज री उपभोक्ता संस्क्रिति फिजूल खर्ची रो दूसरो नाम बणती जा रे ई है। पण कुण समझण आलो है? इण अनुसधान शाला री घेरो केई एकड में है। डीगे पेड़ा री सैंकड़ू किस्मा रैं बीच शाला री इमारत आपरे नाम नैं सांचो बतावती लागैं। शाला मैं दो बडा-बडा सग्रहालय है। एक मे बनस्पत्यां, बीजां आद रैं विकास री आधुनिक तकनीक सम्बन्धी जाणकारी मिलैं। दूजे में बनस्पत्यां मैं लागण आळा रोग, क्रिमी, कीट अर बारे निदान सू जुड्यी बाता मायँ परकास पडै। इण सग्रहालय सू बणावणिया री दौड, लगनशीलता, व्यवस्था अर रुचि सू बौत कुछ सीख्यो जा सके। सग्रहालय देखण में २ घण्टा सू भी बेसी समय लाग्यो तो भी उणनैं खाली उपर-उपर सू ई देख सक्या। ११ बज्या तक पाछा धर्मशाळा पूगग्या, भोजन बिश्राम पछे १ बज्या बस सू सहस्तर धारा ताईं रवाना हुया।

सहस्तर धारा देहरादून सू कोई ११ किलो मीटर दूर है। म्हारे धाणे गू कोई १०-१५ दिन पैलां गठै चोखी बिरखा हू चुकी ही। इण कारण मारग म रास्ते रे दोन्यू कानी जगली फूलां रो सुरगी पांत खिल्योड़ी ही। *राजस्थान रा निवासी हुणे री वजह सू म्हो द्रश्य अपूरव अनूठो* लाग्यो। मन ताजगी अर हुलास सू भरग्यो। सहस्तधारा रै नड मुर-मुरा माटा माळा पाड है जका सू चूनो बणै। २ कि मी ढाळ उतर'र जद मूल स्थान पूग्या तो देखता ई रैग्या। पाडा मू बैह'र सैंकडू छोटा छोटा झरणा माटा सू रमत करता नीचे बैवे। ग्रै चश्मा गधक रै प्राकृतिक जल म्राळा है। कंवे के अठै सिनान करणे सू चरम रोग दूर हुवै। सैंकडू लोग लुगायां टाबर-बूढा इण झरणां में सिनान कर रैया हा। म्हें भी सिनान रा कपडा साथै लाया हा। घटे डेढ घटे सिनान रो लूठो आणद लियो। इण प्रसग ने जीवन में कदै नी भूल सका। ५ बज्या पूठा देहरादून ग्रा पूग्या।

१२ तारीख री भोर मे ६ बज्यां बस सू मसूरी टुरग्या। देहरा दून सू मसूरी री दूरी ३५ कि मी है। पण मारग मे सडक घेर खावती चाले। थाडा तिरछा घुमाव हुणें सू, केई यात्री ने चक्कर आण लागै, केयां नै उल्ट्यां भी हुण लागे। पाडी यात्रावा मे हल्के पेट यात्रा करणी चाईजे। थोडी चाय का दूध साथे एकाध फल लेणो चोखो रैवे। तळी-भुनी चीजां ग्रर भरपेट मारी नाश्ते सू भी यात्रा कष्टदायी रैवे। ३५ कि मी रे रास्ते मे घटे भर सू ऊपर समय लाग जावै। चढाई रो मारग हर्यो भर्यो है। दूर दराज ताई ऊची पहाड्या अर हरीयाबळ दीखै। बसां आध-आध घटा सू चालती ई रैवे। किराये री जीपां अर टैक्स्या भी खासी तादाद मे चालै। जाणकार लोगां बतायो कै दस पद्रह साल पैलां मसूरी रै मारग री हरयाळी और भी देखण लायक ही। अब तो पेडा री धमाधूम कटाई कारण पैलां आळी बात कोनी। ज्यू-ज्यू ऊपर जावता गया हवा मैं ठडक रो अहसास बढतो रैयो। ऊपर पूग्यां पछै तो गर्मी रै मौसम मैं भी नवम्बर महिने जिसडी हलकी ठड लागण लागी। मसूरी समुद्र रै तट सू छ हजार

फूट सू थोडी वेमी ऊंचाई माथै है। उत्तर भारत रे सबसू नजदीक, सुविधा पूरण अर लोकप्रिय पाडी जगावा मैं हैं। देहरादून देश रै दूजा भागां सू सडग अर रेल सू जुडयो है अर हरद्वार अर रिसीकेश सू नैडो पडै, इण कारणै साल भर मुसाफिरा अर सैलाण्या रो मेळो सो अठै मड्यो रैवे। देहरादून सू तो भोर मैं जा'र तिस्मा ताई आछी सुविधा सू पूठो आयो जा सके, इण वजह सू भी सैर भर गोठ करण आळा दून वासी लोग भी हरोज अठै आता-जाता रैवे।

मसूरी रै बस स्टैंड पूगता ई छोटे बडे होटला रा एजेन्ट मुसाफिरां रै आडा भूम जावैं। दस बीस जणा ऐके साथै आपरे होटल रा काडै भला'र उणा री सुविधावा रा गुणगाण करण लागै। अमूझ्योडै जातरी नै सोचणे री साण नी लेणे देवै। कई देर तक दैनगी किराये री खोलथाम करण में लागगी। सामान्य अर मध्यम दरजे रा होटल आळा ऊंचा मोल भाव करै अर कमती दामा मैं भी कमरा किराये देवणताई त्यार हू जावै। हा, बडा आधुनिक सज्जा आळा होटला री बात और है, बैठे तो आगूच आरक्षण री व्यवस्था करणी पडै। म्हे आठ जणा हा। ५०रुपया दैनगी मे 'हिलटोन' होटल मैं ठहर्या। स्टैंड सू कोई फलांग एक दूरी माथै स्कैटिंग रिज रे कनै ई ओ होटल है। गर्मी रो रुत होणे मांकर म्हे तो समझ्या हा कै होटलां में भीड-भाड घणी हूसी। पण अठै तो छीड ई दीसी। शायद इण वजह सू ई थोडे सस्ते मैं जाग्यां देवण ने बै त्यार भी हूग्या।

सिनान आद रै पछै त्यार हू'र होटल मैं नास्तो कर्यो। ठडै मौसम रै कारण चाय सू ताजगी रो अनुभव हुयो। चाय री केतली अठै ऊनी तिवोजी सू ढक'र देवे, जिकै सू बैगी ठडी नी हुवै। दस बजग्या हा। घूमण फिरण नै बारै निसर्या। कुलरी बाजार पूग्या। बाजार में खासी चैल-पैल ही। रैडी मेड कपडे री दूकाना, खाणे-पीणे रा होटल, ढाबा, लकडी रे कलात्मक सामान, सजावट री जिंसा री दूकाना री बोळायत है। दुकाना मैं अंग्रेजी रो बोल-बालो है। कुलरी बाजार सू एक

सड़क ऊंट रैं कूब दाई ऊंची-नीची लाइब्रेरी री भानी जावै। इण सड़क नै आकार मजूब 'कैमल्स बैक रोड' कंवे। इण सड़क माथै एके कानी बड़ी-बड़ी दुकानां ग्रर दूजे कानी पटड़ो माथै हाट लागै। गढ़वाली ग्रर दूजा पाड़ी लोग ऊनी स्वेटर, टी शर्ट, विंड चीटर, जरसिन ग्रर होजरी रो रंग बिरंगो जिसा वेचता रेवे। टाबरां रा रमतिया ग्रर टाफी, चाकलेट ग्रर आइसक्रीम रा गाडा भी खड़्या रैवे। इण सड़क माथै बच्चां री घुड़सवारी खातर टट्टू भी किराये मिले। बाळक ग्रर किसोर उमर रा छोरा रंग बिरंगा गाभा पैर्‌या, किलकारयां भरता घुड़सवारी रो ग्राणंद लेवता दीसै। कैमल बैक रोड सूं ढळते सूरज रो निजारो आछो दीसै।

कैमल्स बैक रोड ग्रर लाइब्रेरी रोड रै बिचरस्ते में बिजली सूं चलण आळी 'रोप वे' ट्राली रो स्टेशन है। ग्रठै सूं सैलाणी पाड रै दूजे पासे नीची घाट्या में आकाश मारग सूं पार करता ट्राली सूं सामै दूजो पाड़ो गनहिल पुग सकै। पतो लाग्यो कै थोड़ा साल पैलां ई इण बिजली मारग रो निरमाण हुयो है। बीकानेर वासी साथ्या वास्ते ट्राली ग्रजूबे सूं कम नी ही। ट्राली में बैठ'र जाणे रो अनुभव रोमांचकारी हो। ट्राली री बंद कैबिन में बैठ्या अधर में झूलता, धीमी रफ्तार सूं दो सो फुट सूं बेसी नीची घाटी रा निजारा देखता ग्रर आकाशमें बादळा सूं घिर्‌योड़ी पांड्या नैं निरखता, एक सिरे सूं खिसक'र दूजे कानी बढता म्हे सैंग उत्साह ग्रर रोमांच सूं भरग्या हा। टाबरा दाई कौतुक ग्रर निरमल आनन्द रो इसो ग्रनुभव कठै मिलै ?

गनहिल माथै खासी ठंडक ही। ग्रठै सूं घाटी रो निजारो मन मोवणो लागै। सैंग घाटी सुरगे घट्टानी बगीचे दाई दीसै। गनहिल सूं गंगोत्री बंदर पूछ ग्रर श्रीकांत आद पाड्यां दीसै। ग्रंग्रेजी राज मैं रोज दिन मैं ठीक १२ बज्यां ग्रठै सूं एक तोप दागीजती। इण कारण ही पाड़ी रो नाम 'गनहिल' पड्यो। गनहिल माथै एक बड़ी दूरबीन भी लगायोड़ी है।

जिए सूं मंसूरी रै नेडे आगै रो द्रश्य भी सोवणो लागै। गनहिल माथै फोटोग्राफरा री बोत दूकाना है। म्हे लोग भी यादगार रूप मे एक ग्रुप फोटो अठै खिचवायो। नुवा ब्यावतोडा जोडा रोमास रै अन्दाज में फोटो खिचावता जाग्या-जाग्या निजर आवै। गनहिल सूं उतर'र भोजन कर्‌या पछै मुनिसिपल बाग रो कार्यक्रम बनायो।

लाइब्रेरी चौक सूं म्युनिसिपल बाग कोई ४ कि. मी. दूर हुसी। बठै जावण ताई एक मारग पक्की सडक आळो है, दूजो पगडडी से कच्चो रस्तो है। दल रै दो साथ्यां मैं होड हुई कै, कच्चे मारग सूं बगीचे मैं पैला पूगीजै का पक्के मारग सू। दोन्यू नै दौड लगा'र बठै पूगणो हो। कच्चे मारग आळो साथी सोचै हो कै उण रो रस्तो कीं छोटो हूणे रै कारण वो ई पैला पूगसी। सडक सू जाण आळै साथी नै थोडी दूर दौड लगाया पछै आ बात समझ मे आगी कै उण रो मारग घुमाव दार अर लम्बो है। सामै सूं एक हाथरिक्शे आळो आवै हो। बीनै ३ रुपया मे ठैरा'र रिक्शो कर लियो। उणने दौडावतो पैला जा'र बागीचे रै फाटक माथै जा बैठ्यो। कच्चे रस्ते आळो थोडी देर मे पूग्यो। म्हैं बठै पूचा तो सडक आळै साथी रै पैला पूगण री बात माथै अचरज कर्‌यो। खासी देर साथी आळ सागै मजाक करणै रै उपरांत बिण असली बात बताई तो म्हा सब रै हसता-हंसता पेट मैं बळ पड़ण लागा। बगीचो हर्‌यो भर्‌यो है। चारू मेर पाड्यां सू घिर्‌योडो अर ऊंचा डीगा पहाडी रूखा सू भर्‌यो ओ बगीचो चोखो पिक-निक थळ है। अठै सदा घुमक्कडा री चैल-पैल रैवे। लाइब्रेरी बाजार मैं बस स्टैंड सूं थोडी दूर माथै लक्ष्मी नाराण मिंदर अर धरमशाल है। लंढौर बाजार मैं आर्य समाज मिंदर, जैन धरमशाल, सनातन धरम मिंदर, मुसाफिर खानो अर गुरुद्वारो है। इणा सब मे यातर्‌यां री ठैरण री सहुलि-यत सूं व्यवस्था हू जावै। सिझ्या ५ बज्यां ताई बाग रै सुवावार मौसम रा मजा लूटता रैया। पयरे सूं पैला ई ठिकाणे ताई पूठा रवाना हूण सूं पैला भोजन कर्‌यो।

सिक्का रिज माथै लकड़ी रै फर्श आळो स्केटिंग रिज पूग्या। एक बड़ै हाल मैं बीच रो घेर स्केटिंग रै खिलाड़्यां बास्ते चारू मेर लकड़ी रा फैंसिंग लगा'र थोड़ी-थोड़ी जाग्या खेल देखणिया बास्ते बणायोड़ी है। एक कुणे मे लकड़ी रो छोटो केबिन बण्योड़ो है। जकै में बैच्यां अर कुरस्यां धर्‌योड़ी है। खेलण आळा अठै काउटर सू किरायो देर स्केटिंग रा पहियां अळा जता खरीद अर बैठ'र उणा नै बांधे। नूवा खिलाड़्यां खातर खेल सिखावण आळो कोच हुवै। नूवा लोग सीखण रै बगत सुन्तुलन न सम्भाळणे कारण दोरां खळकीजै। जद माथै अर गोडां मैं मसळता ऊभा हुवै, दर्शक हसता-हसता लोट-पोट हुवै। पण चोखा जाणकर खिलाड़्यां नै स्केटिंग करता देखण मैं घणो मजो आवै। पहिया माथै तेज दौड़ता किसोर किसोरियां हवा मे लहरातां का तिरता सा लागै। कैई तो भांत-भात रा कलात्मक करतब भी दिखावै। ज्यू सरकस रो खेल छोटा-बड़ा सब रै आकर्षण रो माध्यम हुवै, इण भात ई ओ खेल भी सैंग बड़ै चाव और कौतुक सू देखे। पैलड़ी बार देखण आळा साथ्यां नै तो घणो मजो आयो। अठै रै वातावरण में खुलैपण, जीवट अर मौज मस्ती रो आलम है। लड़का-लड़की आपस मैं उन्मुक्त अर सहज रूप सू मिले-जुले, क्रीड़ा शील खेल मैं सागे हिस्सो लेवै। पोशाक अर बोल चाल मैं अग्रेजी रो घणो परभाव है। सम्पन्न घरां रा टाबर ही अठै घणा आवै। वै कद पश्चिमी जीवन शैली अर अग्रेजी री मानसिक गुलामी सू अळगा हुसी, ओ विचार भी बार-बार टीस पहुचावै। रात दस बज्यां पाछा आ'र ठिकाणो पकड़्यो।

१३ तारीख नै दिनुगै बेगो त्यार हू'र रिक्शे सू काठ गोदाम टीबे नाम री जाग्यां ताई रवाना हुया। ओ ठाम मसूरी सू ५ कि मी. दूर है। मारग मोवणो है। दूर-दूर ताई घाट अर थाड़्यां रो विस्तार है। मसूरी री सबसू ऊंची जाग्या लाल टीबो भी अठै सू नैड़ो ई है। काठ गोदाम टीबो भी खासो ऊचो है। अठै सू हिमालय खेतर री बरफ सू ढक्योड़ी ऊंची

पर्वत चोट्यां भोर रै सूरज री किरणां मैं चक्मकाती सोनलिया ग्राभा बिखरांती दीसै। ऊगते सूरज अर ढळते सूरज रो निजारो कन्याकुमारी, कोणार्क अर आबू परवत ग्राद कैई ठामां मैं घणो मोवणो लागै। पण तावडे री चमक सूं बरफ री भिळमिळ आभा रो ग्रो द्रश्य भी अनूठो अर अपूरब दिसे, जको सदा याद रैवे। घूम घाम'र ११ बज्यां तांई पूठा आया। भोजन कर बिसांई करी।

दोपारे पछै माल रोड घूमण तांई निसर्या। शिमला तांई अठै री मालरोड भी बड़ी रौनक आळी जाग्यां है। खासो वडो बाजार है। हर तरह रे बढ़िया अर फैंसी सामान री बोळायत है। अंग्रेजी तर्ज रा बडा होटल, देसी ढाबा, सजावट अर श्रृंगार रो सामान, कपड़े अर मणिग्रारी री दूकानां, ग्रार्ट ग्रर क्राफ्ट री जिसा, ऊनी वस्त्र सैं कुछ ऊंचे दामा में अठै बिकै। कुत्तां नै सागै ले'र घूमणियां लोग तो दूजा सैंरा मैं भी मिल जावै पण मिन्यां रै गले में पट्टो पैरायां घूमती फैशनेबल लडक्यां नैं अठैं ई देखयो। भेडिये जिसा ग्रडा कद्दावर ग्रे हाउंड ग्रर बुलडाग कुत्ता दीसैं, जका नै देख'र ई दहशत पैदा हुवै। दूकानां रा नाम, सूचना पट्ट ग्राद ग्रंग्रेजी मैं ई है। खरीद बिक्री रो माध्यम भी विदेशी भाषा ही है। इंड हूणे सूं चाय काफी री चोखी दूकानां खासी तादाद में है। माल रै होटलां मायै प्राय: भीड़ रैवे। बेकरी री चीजां ग्रैड, केक, पेस्टरी, नान, बिस्कुट ग्राद रो घाम सायै प्रचलन वेसो है। ग्रण्डा, ग्रामलेट ग्रर आमिष भोजन भी खूब मिलै। ग्रठे फैशन रो घणो परभाव है। दूजां सैंरां मे जीन्स, टी शर्ट आद रो लड़क्यां मे जको प्रचार आज दीखे वो उण समय भी ग्रठै खूब देखण नै मिल्यो। जीवन शैली मैं उपभोग री परधानता है। गाधी रे निर्धन देश मे एक वर्ग रो विलास अर ऐश्वर्य कानी इत्तो झुकाव इण मुल्क नै कठै ले जासी ओ विचार भी मन नै उत्तेजित करै।

१४ तारीख नै कैम्पटी फाल नाम रे मसहूर झरणे नै देखण रो

आयोजन हो। सुबह ७ बज्या लोकल बस मे बैठ'र मसूरी सू १२ कि मी दूर कैम्पटी फाल पूग्या। चीड अर दवेदार रा घणा हर्या छायादर बिरख में रास्ते है। तावडो मुसकिल सू ई जमीन तक पूर्ग। ठंडी पवन रा हबोळ आती बस आध घंटे सू पैसा ई अठै नावड जावै। कैम्पटी चकराता रोड मार्य ऊचे पाडा सू बिर्‌योडो आकर्षक जाग्यां है। ६०–७० फुट ऊंचाई सू भरना री केई धारावां चादी वरणे पाणी रा ऊजला मोती बिखेरती सोवणी लागै। धरती मार्य ऊचे सू पडता निरभर घोळा भागा रा बुळबळा बणावता अर मिटावतां जीवन री निरतरता अर भौतिक जगत री छणिकता रो उदघोष करता लागै। अठै सिनान करण मैं घणो आणद आवै। प्रपात रो जळ ठंडो पण ताजगी अर स्वास्थ प्रदान करण आळो है। दिमुगे सू सिभ्या तांई अठै सेलाण्या री मेळो मड्योडो रैवे। प्राय उत्तर भारत रै सैं प्राता रा लोग छोटे बडे टोळा मैं सिनान, जल क्रीडा अर दौडता अठखेल्या करता दीसै। टाबर बूढा सैं कोई कुदरत रै प्रक्रत सम्पर्क सू सहज अर तरल व्यौहार करता अबोध आचरण आळा सा बण जावै। नागरिक जीवन रै छल कपट सू दूर निरमल आणद सू मन आत्मा नैं तिरप्ति मिलै। बार्गनर नाम रै एक वैज्ञानिक बैहते भरणे रै पाणी नैं 'जीवत जळ' कैयो है। आम जाग्या रै नद, तलाब अर कुए रै पाणी मैं तरावट अर ताजगी री आ बात नी है, जकी अठै इण वैज्ञानिक रै कथन रो सत्यता सिद्ध करती लागै। अठै सू अळगो हूणे नैं जी नी करै। कोई दो घंटा अठै सिनानादि मैं लागा। अठई कैफे मे चाय नाश्तो कर ११ बज्या फेर मसूरी आग्या।

सिभ्या रो समय माल मार्य घूमण अर क्राफ्ट री चीजा अर ऊनी होजरी आद रै सामान खरीदणे में लगायो। अठै जिसा रा भाव लो कमर तोड है, पण यातरा बाद घर रै नाना मोटा नै की छोटे–मोटे तोहफे री उडीक रैवे ई है। आगले दिन तो देस बावडणो ही हो इण खातर देर रात ताई घूमता फिरता रैया। आछै खुशनुमा मौसम अर प्राक्रतिक सुदरता री आ थळी वाकई वाडा री राणी कहलाणे री साची अधिकारणी है, ओ अनुभव सदा हूतो रैवे।

उगते सूरज री सोनल घाटी

रोवर स्काउटिंग रै एक साहसिक शिविर रो आयोजन १६८२ रे मई रे महिने काठमांडू मे हुयो हो। बठै सू पाछा आवती वेलां 'उगते सूरज री सोनल घाटी' रै नाम सू जाणीजण वाले दार्जिलिंग अर देश री आखरी सीमा माथै बस्योडे अनूठी संस्क्रिति अर घणे हरयावल आळै सिक्किम राज्य री राजधानी गंगटोक ने देखण रो कार्यक्रम बणायो। काठमडू सू बस में बैठ'र सीधा सिलीगुडी आया। ३ जून नै बस सू सिंझा ५ बज्या रवाना हू'र आगले दिन भोर में ६ बज्या तेरह घंटा री लगातार मातरा रे बाद सिलीगुडी पूग्गा। चाय नाश्ते रे उपरांत ८ बज्या भळै आगे दार्जिलिंग खातर रवाना हुया। चाय रा ढलवां मखमली बागान, भरांस अर बांस रा झुरमुट, अणगिणत पुसपा री मुळकती सोवणी किस्मा, हिमालय री सै सू ऊंची चोट्यां रा निजरा, माटा खांती छोटी रम्मतिये सरीसी रेलगाडी री सैर, बौद्ध मठा री अळायदी संस्क्रिति, जगली जिनवारा रो खुल्लो विचरण, सोवणी भीलां माथै उगते सूरज री झिलमिल आद जे एकै साथे कठई देखण नै मिल सकै तो बा सुरगी पर्यटक नगरी है दार्जिलिंग।

सिलीगुडी सू थोडो आगै ही चढाई सरू हू जावै। पाडी मारग मैं

सडक बायटा खांती सी लागै । सडक रै दोन्यू कानी खासी हरियाली है।
ज्यू -ज्यू ऊंचाई बढै, एके पासै पा'ड अर दूजै पासै घाट्या सरू हू जावै।
घाट री दिसा मे चाय रा पट्टीदार खेत बीत मोवणा लागै। खेत मे चाय री
पत्तां तोडती लुगाया माथै माथै रेशमी रुमाल ओढ्या, गले में चांदी रा
गंगां पैर्यां अर मगर माथै तरकस दाई ऊंडो छबडो बांध्या टोळ बणा'र
काम करती दीसै । केई छोटा टाबरां नै भी कपड़े री झोळी मैं पीठ माथै
बांध्या राखै । काम करती बेळा हळके सुर मे लोक गीत री धुन भी बारे
मुडे सू सुणीजै । श्रम अर सगीत जठै जुड जावै बा मैंहनत भी आनन्द ही
जाण पड़ै । ई कारण ही स्याव अठै री मेहनतकश लुगाया रै चै'रे माथै
मीठी मुळक अर स्वास्थ्य री लाली चमकती रैवे । ११ बज्या नेडै कारसाग
रे कस्बे पूग्या । काठमाडू मैं राजस्थान रा एक मित्र कारसाग रे एक दुकान-
दार रै नाम एक दस्ती लिख'र दीनी ही बा बतायो हो कै चूरू रै एक
दूजा सज्जन रो सिपाई धोरा (सिलीगुडी सू थोडो ही आगे) मे चाय
बागान है अर दार्जिलिंग मैं रैस्ट हाउस है । चाय बागान आळे इणी
परिवार री कारसाग मैं दुकान हो । दस्ती देता ही बा दार्जिलिंग रै रैस्ट
हाउस म रैगे आळे व्यवस्थापक रै नाम एक चिट्ठी लिख'र म्हारे ठैरण री
निशुल्क व्यवस्था रो आदेश कर दियो ।

रास्ते रा अनूठा द्रश्य देखता कोई ८ घटा छेडे छीजे पौर रै
उपरांत ४ बज्या दार्जिलिंग रै रेल्वे स्टेशन आळे स्टाप माथै उतरग्या ।
मुख्य बस स्टैंड थोडो और आगे है । म्हारे आवास री जाग्या रेल्वे रै
सारै पा'डी पगडन्डी सू कोई एक फर्लांग दखण मैं चढाई चढ'र ऊपर
ही । म्हैं लोग सोलह जणा हा, साथै समान भी खासो हो, अठै तांई
पूगण मैं घटे खाण लागग्यो । पण कागज दिखाता ही एक बडी आलेशान
कोठी मे एक बडो कमरो जिके रै साथै एक छोटो कमरो भर सयुक्त
बाथरुम हो, म्हाने मिलग्यो । बडे कमरे आगे लकडी रो सोवणो
बरामदो बणयोडो हो। कोठी रे आगे खासो बडो खाली मैदान हो।

आ कोठी बौत बडी है, उणरै दूजा कमरां मैं भी ओर लोग ठवयोड हा। पतो लाग्यो कै कदै आ कोठी कूच विहार रे दीवान री ही, जकै नैं बाद मैं चाय बागान रै मालकां खरीद लीनी ही। सैलाण्यां रै आवण री सीजन में इसी जाग्या पांच-सात सौ रुपिया रोज मायै मिलणी भी मुश्किल हुवै।

उण दिन तो थक्योडा हा। पैला चाय बणा'र पी। भोजन बणाणे रो 'किट' साथै हो। विश्राम कर'र भोजन बणायो। व्यवस्थापकजी सू अठै रा देखण जोग ठामा री चरचा अर कार्यक्रम बणाता रैयै। सै सू आणद री बात आ ही कै कोठी रै ठीक सामैं उत्तर पूरब दीसा मैं कचनजधा पा'ड री चोट्यां साफ दीसै आ बात वां म्हाने बताई। उण बेला तो बादळवाई ही। पण पांच दिनां रै प्रवास मैं कदैई तो बादळ खुलसी, औ भरासो हो। दुयो भी इया ही। भोजन उपरांत गपशप करता सै सोग्या। मैं रात नैं कोई डेढ़ बज्या लघुशंका खातर उठ्यो। बारै निकळता ही हरख सू गदगद हुग्यो। कचनजधा रा पांच चोट्यां चादणी रात रै खुल्ले आभै मैं द्रढता अर गरब सू जाणे माथो उठाया खडी आपरी बुलंदी री घोषणा करती सी लागी। मैं सब साथ्यां नैं उठायो। एकर तो कचनजधा रै नाम सूं हडबडाता सा बै उठ्या, पण द्रश्य देख'र विभोर हुग्या। डेढ-दो घटा चादणी मैं चकमती बरफ सू ढक्योडी अपूरब सोवणी परबत माळा नैं निरखता अर आन्द लेता रैया। जिकै निजारे ने देखण नैं विदेशा सू हर रोज सैंकडु सैलाणी आवै प्रक्रिति री किरपा सू आवता पाण ही उण रौ दरसन कर उत्साह अर उमाव रो लूठो अनुभव हुयो। कमरे में आ'र तीन-चार घटा भळै नीद ली।

दिनुगे सैंग तरोताजा हा। त्यार हू'र चाय नाश्तो लियो। १ बज्यां आवास सू निसर्या। पद्रह मिन्टा मैं ई दार्जिलिंग रेल्वे स्टेशन रै नेडे घार घीम मिंदर मैं पूग्या। मिंदर १९३० मे बण्यो हूणे कारण नूवो ही है। मिंदर कलात्मक है। इण री स्थापत्य शैली नैपाल रै पशुपतिनाथ

मिंदर जिसी है। उत्तराखंड अर हिमालय में भगवान शिव रा उपासना थल ही वेसी है। गंगा नैं शिखा में थामणै री सगळी कैलसपति अर परवत वासी शिव में ही हू सकै। इण कारण सम्पूरण हिमालय क्षेत्र में शिव रा पावन धाम जाग्यां-जाग्यां मिलै।

रेल्वे स्टेशन रे सारले सड़क मोड़ सू पूरब में कोई २ कि मी दूर दोरजी नाम सू बजै जिकै बौद्ध मठ नैं देखण ने गया। इण पाड़ी रो नाम 'ओवजरवेटरी हिल' है। डेढ़सो बरस पैला इण मठ रै कनै २०-२५ घरा री वस्ती ही। घणकरा बौद्ध सरधालु अठै रैंता। इण खेतर मायँ सिक्किम रे राजा रो अधिकार हो। ई १८३५ मे अंग्रेजां इण नैं राजा सू मोल ले लियो अर अठै आपरे सिपाया खातर टी बी सनेटरीयम बणवायो। धीरे-धीरे बंगाल अर असम रा लोग अठै बस गया। अंग्रेजां भी ईनें पर्यटन केंद्र दाई विकसित करयो। दोरजी मठ रै कारण ई इण रो ओ नामकरण हुयो। मठ खासो पुराणे है। मठ में बडा बडा घटा है, जिका नैं पूजा रे समय लकड़ी रे डंडे सू बजा मैं। मठ में माथो मुंडाया करयई कपड़ाधारी नाना मोटा बालक बौद्ध धरम पुस्तकां रो सस्वर वाचन करता मिल्या।

अठै सू घूम बौद्ध मिंदर देखण नैं गया। घूम बौद्धा रो तीरथ मानीजै। सड़क अर रेल मारग केई जाग्यां सारे-सारे चालै। घूम रेल मायँ लाइन चार रैं आक दाई काटो बणा'र मुड़ै। स्यात इण वजह सू ई ठाम रो ओ नाम पड़्यो है। ओ मिंदर घणो मानीतो है। भगवान बुद्ध री बड़ी प्रतिमा रै सामैं आठ पोर घी रो दीप बळतो रैवे। अठै बौद्ध धरम री सैंकड़ू हस्तलिखित प्रतिया रो भी कीमती संग्रह है। लामा साधुवा अर बौद्ध लोगा रा चपटा मूडा, छोटी आंख्या, पीलोपण लिया गोरो रंग, पतली नीची झुकवोडी मूछा नै देख मंगोल जात रो ध्यान आ जावै। अठै जातरी आवता ही रैवे। ढाई बज्यां पूठा रैट हाउस आया। भोजन बणाने खाणे में ५ बजग्या। सिंझा बादलवाई हुगी ही, ठंड भी

बढगी। बाजार में आया। मारवाडी अर हरयाणवी लोगां री बोळायत है। कपडे, मणिआरी अर परचून रो कार इणां लोगां रे हाथ मे हीं है। मौसम नै देखता केई साथी बरसातया खरीदी अर केई छाता लिया। एक हरियाणवी दुकनदार रै कनै कैनवास री बरसातयां ही। फैशन मुजीब ऐ पुराणी गिणीजण लागी ही इण कारण बोत सस्ती हाथ आगी। सात बज्या ही इत्ती ठड हूगी के पूठा फिरूया। थकयोडा हूणे सूं जल्दी ही सोग्या अर सात बजी पैल्या कोई मुसक्यो ई कोनी।

आगले दिन भोर मैं उठ्या तो बूदा-बांदी हो री ही। मौसम ठडो तो हो पण सोवणो लागे हो। सोच्यो कै तैयार हू'र चाय नाश्तो आद करता शायद घूमण फिरण जिसो मौसम हू जावै। पण आकाश साफ हूणे री बजाय बादलां रै मण्डाण सूं घिरग्यो। छाटां तेज हूगी। नाळा चालण लागग्या। पां'ड मैं बिरखा रो निजारो भी समझळ भूम सूं निराळो हुवै। परवत रा शिखर, ऊंचा पेड, ढलवा घाट सै क्यूं मूसळाधार पाणी में एकरस हू जावै। ढलवा भारग तिसळण कारण बद हू जावै। सै लोग घरां टापरां मैं दुवक जावै। जद बिरखा नी बद हुई तो दो साथ्यां नै बरसाती अर छाता दे'र बाजार सू आम्बा, बेसन, घी, मसाला आद लेवण नै भेज्यो। आया पछै आमरस अर बेसन री पूड्यां बणाई। दिन भर बणावण-खाण मैं गोठ रो सो आनन्द लियो। पण बिरखा नी थमीं सो नी थमी। सिंझ्या रो कीं समय गाणे-बजाणे अर खुद री रच्योडी कवितावा आद सुणनै-सुणाणे में बितायो। पकोड्या रो दौर भी बीच में चालतो रैयो। रात रा भी मेह पडतो रैयो। कैम्प फायर रा कई कार्यक्रम तैयार हा ही। मनोरजन तो हुयो, पण एक दिन सैर सपाटे ताई नी निकळ सकया इण रो मलाल भी हो।

कुदरत री बात आगले दिन भी बूदा-बांदी हो री ही। अब तो म्है एकमतै सू छाट-छिडके मैं ही छाता बरसातया ले'र निकळने री तै

करी । ८ ३० बज्या बारे आया । लाल बाजार नेड़े ही है, पुग'र मैटाडोर माळे सू घुमावण री बात करी । अठै बीस एक देखण जोग जागावां है जका मे ३/४ म्हे देख चुक्या हा । म्हे लोग दिन भर रा चार सो रुपिया सैंमूळे रूप सू देवणने त्यार हुग्या । वै छ सो सू सरु कर पाच सो माथै रुकग्या । बात बणी कोनी । निश्चय अर आछो साथ । फर की कमी ही । उण दिन सुबह ६ बज्या सू सिंझा रा ६३० बज्या ताई ६ ३० घण्टा लगातार चोखी बिरखा म घूमता रैया पण जिसो साहस, अनूठै आनन्द और मौज मस्ती रो अनुभव इण दिन हुयो बिसो अनुभव म्हारे घुमक्कड जीवन मे भी कम ही रैयो है ।

सै सू पैला लायड वनस्पति उद्यान देखण ने गया । दार्जिलिंग माथै वनस्पति री दीठ सू प्रकृति री घणी किरपा है । टीक, चीड, देवदार, सफेदे, बुरास आद रा अणगिणत बिरखा रो अठै आछो मोकळो सग्रह है । चिनार, पिलखण, बांस रा भी पेड है । पण हिमालय परबत रै पौधा, पुप्पा रो अठै आछो मोकळो सग्रह है । दार्जिलिंग पुसप प्रेमिया रो सुरग ही जाणो । अठै ४००० सू बैसी फूलदार पौधा अर ३०० किस्म री फर्न का पौधा है । सैंकडू दूजा पुसप हीन पौधा रा नमूना भी भांत-भांत रै गमला मैं सजायोडा है । गमला अर पौधा रै वास्ते जालीदार भीता अर लकडी री छात आळा सैड बणायोडा है । तावडे अर छिया रो ध्यान राख'र पौधा नै रोप्या अर राख्या है । पौधशाळ रो रख रखाव घणो आछो अर सुरुचि पूरण है । इसी बढ़िया नर्सरी कमती जाग्या ही देखण मैं आवै ।

नेडै ही पद्मजा नायडू जीव जतुशाला है । इणा म हिमालय खेतर रा प्राणी तो है ही साइबेरिया रा चीता, अठै रा काळा हिरण अर भालू आद भी है । शेर, बारहसींगा, जगली भेडिया भी है । अनेक भांत रा दुरलभ पखी भी इण चिडियाघर मैं मिलै । हिमालय रा ब्लू वर्ड, सभी

टोग आळा फेलकनेट, मिनवेट, शाही कबूतर आद रै कारण इण रो महत्व घणो बध जावै । बरसती बिरख मैं जतु पिंजरा में दुबक्योडा पड्या हा, अठीनै दरसक गण भी कम हा । पण म्हारी टोळी मैं घणो उत्साह हो ।

अठै सू थोडी दूर पछमी जवाहर मारग माथै हिमालय परवतारोहण री जगत बिख्यात सस्थान है । प्रसिद्ध परवतारोही तैनसिंग नोरके इण रा सस्थापक सदस्यां मां सू एक हा । आ सस्थान आपरी तरा री एक निराळी सस्था है, जिणमें कठिन अर दुरगम पा'डा माथै चढ़ण रो प्रशिक्षण दियो जावै । सस्थान री परपना १९५४ मे हुई। अठै सू भी कचनजघा रो द्रश्य आछो दीसै, पण आज बिरखा री वजह सू चारू मेर धुधळको सो छायो हो । कई कमरां मैं परवतारोहण रै काम आवण आळा उपकरण प्रदर्शनी तांई सजायोडा राख्या है । हिमालय रै एवरेष्ट, नदादेवी आद मफल अभियाना रा प्रामाणिक चित्र भी अठै लगायोडा है, जका साहस री प्रेरणा देवै । अबै तो केई अभियाना मैं हिम्मती महिलावां भी परवतारोहण रा अनूठा करतब दिखाणे में कामयावी हासल करी है । कु बिचेंद्रीपाल अर नदिनी बहन रो नाम उल्लेख जोग है । इण कड़ी मे बीकानेर रा साथी मगन बिस्सा रो नाम भी सरावण जोग है । बिस्सा एवरेष्ट चढाई अभियान मैं २८ हजार फुट री ऊचाई ताई पूग्या हा । पण मौसम री खराबी कारण दल नायक री आग्या रो पालन कर पूठा फुर'र बडे अनुशासन रो परिचय भी दियो । १ बज्यां दोपार भोजन तांई सस्थान भी बद होग्यो अर म्हे भी लाल चौक मैं आ'र एक होटल में भोजन करयो ।

तीजे पोर चौक सू थोडी दूर नैचूरल हिस्ट्री अजायबघर' देखण नै गया । बिरखा ओजू भी पैला दांई ही पड री ही । बरसात्या अर छाता रै बावजूद भी जूता, मोजा अर पैंट रा पांऊचा चोखी तरां भीजग्या हा । पण अब तो ओखळी मैं सिर माळो बात हीं । भीजण रो डर ही भागग्यो ।

करी । ८.३० बज्यां बारे आया । लाल बाजार नेड़े ही है, पूग'र झंटाडोर माळे सूं घुमावण री बात करी । अठे बीस एक देखण जोग जागावां है, जकां मे ३/४ म्है देख चुक्या हा । म्है लोग दिन भर रा चार सो रुपिया संमूळे रूप सूं देवणने त्यार हुग्या । वै छ सो सूं सरू कर पांच सो मार्थ रुकग्या । बात बणी कोनी । निश्चय अर आछो साथ । फेर की कमी ही । उण दिन सुबह ६ बज्या सूं सिंझा रा ६३.० बज्यां ताई ६.३० घण्टा लगातार चोखी विरखा मे घूमता रैया पण जिसो साहस, अनूठै आनन्द और मौज मस्ती रो अनुभव इण दिन हुयो बिसो अनुभव म्हारे घुमक्कड़ जीवन मे भी कम ही रैयो है ।

ऐं सूं पैला लायड वनस्पति उद्यान देखण ने गया । दार्जिलिंग मायँ वनस्पति री दीठ सूं प्रकिति री घणो किरपा है । टीक, चीड़, देवदार, सफेदे, बुरांस आद रा अणगिणत बिरखां रो अठे आछो मोकळो सग्रह है । चिनार, पिलखण, बांस रा भी पेड है । पण हिमालय परबत रै पौधा, पुप्पा रो अठे आछो मोकळो सग्रह है । दार्जिलिंग पुसप प्रेमिया रो सुरग ही जाणो । अठे ४००० सूं बैसी फूलदार पौधा अर ३०० किसम री फर्न का पौधा है । सैंकड़ू दूजा पुसप हीन पौधा रा नमूना भी भांत-भांत रै गमलां मैं सजायोड़ा है । गमला अर पौधा रै वास्ते जालीदार भींता अर लकड़ी री छात आळा सेड बणायोड़ा है । तावड़ै अर छिया रो ध्यान राख'र पौधा नै रोप्या अर राख्या है । पौधशाळ रो रख रखाव घणो आछो अर सुरुचि पूरण है । इसी बढ़िया नर्सरी कमती जाग्या ही देखण मैं आवै ।

नेड़े ही पद्मजा नायडू जीव जंतुशाला है । इणा मे हिमालय खेतर रा प्राणी तो है ही साइबेरिया रा चीता, अठै रा काळा हिरण अर भालू आद भी है । शेर, बारहसींगा, जंगली भेडियां भी है । अनेक भांत रा दुरलभ पखी भी इण चिड़ियाघर मैं मिलै । हिमालय रा ब्लू बर्ड, लम्बी

गि आळा फैनकनेट मिनरेन, शाही कबूतर आद रै कारण इण रो महत्व
गो बध जावै। बरसती बिरखा मैं जतु पिंजरा में दुबकयोडा पड्या हा,
इणीनै दरसक गण भी कम हा। पण म्हारी टोळी मैं घणो उत्साह हो।

अठै सू थोडी दूर पछमी जवाहर मारग माथै हिमालय परबता-
रोहण री बेमत विख्यात संस्थान है। प्रसिद्ध परबतारोही तेनसिंग नोरके
इण रा संस्थापक सदस्यां मां सू एक हा। आ संस्थान आपरो तरा री
एक निराळी संस्था है जिणमें कठिन अर दुरगम पा'डां माथै चढ़ण रो प्रशि-
क्षण दियो जावै। संस्थान री थरपना १९५४ में हुई। अठै सू भी कचनजघा
रो दरस आछो दीखै पण आज बिरखा री वजह सू चारू मेर धुंधळको
सो छायोडो हो। कई कमरां मैं परबतारोहण रै काम आवण आळा उपकरण
""शना तांई सजायोडा राख्या है। हिमालय रै एवरेस्ट नदादेवी आद
ऊपर अभियाना रा प्रामाणिक चित्र भी अठै लगायोडा है, जका साहस
री प्रेरणा देवै। अबै तो कैई अभियाना मैं हिम्मती महिलावां भी
परबतारोहण रा अनूठा करतब दिखाणै मैं कामयाबी हासल करी है।
कु. बिचेंद्रीपाल अर नदिनी बहन रो नाम उल्लेख जोग है। इण कडी में
बीकानेर रा साथी मगन बिस्सा रो नाम भी सरावण जोग है। बिस्सा
एवरेस्ट चढ़ाई अभियान मैं २८ हजार फुट री ऊंचाई तांई पूगग्या हा।
पण मौसम री खराबी कारण दल नायक री आग्या रो पालन कर पूठा
टुर'र कडे अनुशासन रो परिचय भी दियो। १ बज्यो दोपार भोजन
तांई संस्थान भी बंद होग्यो अर म्हे भी लाल चौक मैं आ'र एक होटल
मैं भोजन करयो।

लाल चौक सू थोडी दूर मैंघूरल हिस्ट्री म्यूजियम देखण
नै गया। बिरला भोजूं भी पैला दाई ही बंद री ही। बरसात अर छाता
रै बावजूद भी जूता, मोजा अर पैंट रा पौंछया पोलो तरां भीजग्या हा।
इण बख तो बोलडी मैं सिर माथै बात ही। भीजण रो डर ही सामग्यो।

इण अजायबघर री थापणा ई १९१५ में हुई। इण मैं मछल्या, पक्षी, रेंगणे आळा जीव अर दूजा स्तनपायी जीवां रो सग्रह है। इण जीवां रे सरक्षण अर वश बढ़ाणे रा उपाय भी अठै करीजै। आकार मैं छोटो हूणे पर भी अजबघर आकर्षक अर मनोरजन करणे आळो है।

२.३० बज्यां तिब्बती हस्तशिल्प केंद्र नै देखणने चाल्या। नगर रे पश्चम मैं ऊंची नीची पा'डी सड़क अर घनी वनस्पति सू गुजरता ४ बज्या तिब्बती केन्द्र पूग्या। रास्ते मे ऊंची पा'डी सू विश्व रो सब सू ऊंचो लेवाग रेसकार्स भी दीसे। अठै टैम-टैम पर घुड़दोड़ां रो आयोजन हुवै। तिब्बती हस्तकला केन्द्र ई १९५९ में बण्यो हो। तिब्बत मैं चीन रे अत्याचार सू तग आ'र बका शरणार्थी भारत मैं केई जाग्यां पूग्या, वां मैं सैंकड़ू दार्जलिंग मैं भी आ'र बसग्या। सरकार रै सहयोग सू तिब्बती लोग लुगाया अनेक लघु उद्योगां मैं अठै काम करै। ऊनी कालीन, शाल आद रा करघा अर लूम रा केई कारखाना अठै चालै, जकां मार्थै लोग लुगाया काम करतो रेवै। ऊनी वस्त्र, रग बिरगा बढ़िया गलीचा, जाकेट कोट, जकिन, दस्ताना, लक्डी रा रमतिया, मेज, कुर्सी आद फनिचर अठै बणे। ऐ चीजां बौत सोवणी अर कलात्मक हुवै।

आगले दिन भोर में ५ बज्यां उठ'र बस स्टैंड सू मैंटाडोर करी अर टाइगर हिल देखणे नै रवाना हुया। टाइगर हिल दार्जिलिंग सू ११ कि. मी. दूर है। अठै ऊंचाई भी बेसी है। दार्जिलिंग समुद्र तळ सू २१३४ मीटर है पण टाइगर हिल २५५५ मीटर ऊंची है। अठै सू सूर्योदय रा दरसन बौत आछा दीसै। म्हे ५ ३० बज्या अठै पूगग्या हा। सैंकडू दूजा लोग भी भेळा हू चुक्या हा अर मळै आवता जा रैया हा। वाच टावर सू सामैं दूर ताई आमो राते रग सू रगीजो लाग्यो। सूरज रो एक कुणो धरती मांय सू निकळतो दीस्यो कै लोगा रो हलचळ अर उत्सुकता तेज हुगी। 'वो दीस्यो' री ध्वनि रे साथै हरष सू बडा बूढ़ा भी टावरां दांई

किलकण लाग्या। एक उजळी सोनलिया आमा आकाश में बिखरण लागी। सूरज रै ऊचे चढणे सायँ प्रकाश बढण लाग्यो। दो-तीन मिन्टा मैं ई पूरो सूरज निकळग्यो। सूरज रो आखरी छेडो धव देखणो एकर ही जद ऊपर आयो तो दरसकां नै घणो आनन्द आयो। आते वखत पैंदल आया। साढ़ी नौ बज्या पाछा पूग्या। भोजन बणाने खाणे अर विश्राम रे बाद दोपार एक बज्या रोप वे रो कार्यक्रम हो।

दार्जिलिंग रेल स्टेशन सू ८ कि. मी दूर दखण-पूरब मे रंगीत नदी मायँ 'रंगीत घाटी रज्जूमारग' है। रास्तो गैरो हरियावल आळो है। बिरख अत्ता छायादार है, कै सूरज री किरणा नीठ धरती ताई पूगै। थोडी घणी बस्ती भी ठेठ ताई है। रज्जूमारग मायँ सडक रै पछमाद सिरे एक कैबिन बण्यो है, इण मैं बिजली री ट्राली खडी रैवे। सडक मायँ 'सँग्रीला' रो एक बडो बोर्ड भी लागोडो है। पतो लाग्यो कै 'सँग्रीला' सिक्किम में बणण आळो कीमती शराब है। विदेशी अर दूजा सैलाणियां रै आकर्षण ताई प्रचार कर'र सिक्कम राज्य इण सू चोखी आवकारी आय कमावै। रोप वे री ट्राली मैं छ आदमी एक साथ बैठ सकै। ६ रु. प्रति सवारी आणे-जाणे रो टिकट है। ट्राली मैं बैठ'र खासी नीचे रंगीत नदी रो द्रश्य देखणो रुगटा खडा करण आळो अनुमव है। उमाव री उत्तेजना सू मन हवूळा खाण लागै। घाटी रे दूजे पासे सिंगला बाजार है। रज्जूमारग इण बाजार ने दार्जलिंग सू जोडै। बाजार छोटो ही है पण खाणे पीणे आद री सै चीजा मिलै। चाय नास्ते री खासी दूकाना अर होटल अठै है। आ जाग्गा पिकनिक अर गोठ री सुन्दर आदर्श थली है। मछली रे शिकार करता लोगां नै खासी ताळ तक देखता रँया। मछली पकडणो धीरज आळो अर समय साध्य काम है। केई बार काटो खाली ही आवे, जद कठैई कदी-कदास कोई मछली फसे। शायद इण करण ही दोरे काम खातर 'झकमारणे' जिसी कैवत रो प्रयोग हुवै। करीब घंटे भर अठै रे द्रश्य रा आनन्द ले'र ६ बज्या ताई पूठा पुग्या। बाजार मैं

जरकिन, होजरी अर साड्या आद री छोटी मोटी खरीदारी कर रैस्ट हाउस आया। फिरतो विरियां एक मैटाडोर आळे सू आगले भोर मैं ६ बज्यां गगटोक चालणे री बात १००० रुपियां माहे मैं ही कर ली।

भोर मैं छ सू पैलां ही चौक मैं पूगग्या। गाडी आळे २०० रुपियां अग्रिम ले'र डीजल भरवायो। सवा छ सिक्किम खातर रवाना हुग्या। दिन निकळग्यो हो। मौसम भी सोवणो हो। दार्जिलिंग सू गगटोक री दूरी १२० कि मी है। दार्जिलिंग सू ८ कि मी दूर घूम आणो पड़ै। घूम सू एक रस्तो सिलीगुड़ी आवै। दूजो जोर बंगलो, तिस्तापुल हू'र गंगतोक जावै औ रस्तो दुनिया रै स्रेष्ट पा'डी रस्ता मैं एक है। करीब ७० कि मी रो मारग रगन अर तिस्ता नदी रै ठीक सारै बराबर चालतो रैवै। खासी दूर ताई रंगन नदी एकली इण सड़क रै डावे कानी नीचे आडे तिरछे प्रकृत प्रवाह मैं बैहती रैवे। नदी रै मोड़ दाई सड़क भी घूमती चाले। सडक रै जीवणे पासैं धान रा सीढ़ीदार खेत, रग विरगा फूल अर हर्या बिरखा रै झुरमुट सू खेतर नदन बन री सोभा सू मण्डो सो लागे। ५८ कि. मी माथै तिस्ता नदी रो पुल आवै। अठै रगन अर तिस्ता रो आछो सगम है। साढी नौ बज्या अठै पूग्या हा। इण जाग्यां ही एक होटल मैं चाय नाश्तो लियो अर नदी रै दृश्य रो अवलोकन करता आगैं रवाना हुया। रस्ते मैं माली नाम रो बस्ती आई। बाद मैं रगपू। तिस्ता सू रगपू २३ कि मी दूर है। रोडपो खोला (छोटी नदी) माथै अठै एक पुळ है। रडपू रो बाजार छोटो सो है। पाडी गावा सू खच्चरां माथै लद र सतरा इण बाजार मैं आवै। आडतिया घणकरा मारवाडी है। म्हे भी अठै सतरा ले'र खाया। रगपू सू ११ कि मी दूर सिगताम है। सिंगताम मैं बस दसेक मिनट रुकी। २८ कि मी दूर देवराली रो स्टाप है, जको गगटोक रै नेडे ही है। अठै रोड वेज रो बसा आद बडी गाड्यां तो रुक जावै, मेटाडार आद ने लाल चौक नेडे सैर रै मुख्य बाजार ताईं लै जावण देवे। पाच घटा मैं ग्यारहा बज्या नैडे म्हे अठै पूगग्यां।

( )

गगतोक प्रति हर्‌यो छोटो अर प्राकतिक सुदरता सू भर्‌यो यारी सक्रिति आळो अनूठो सैर है। भारी विरखा अर घणी वनस्पति रैं कारण प्रकृति विज्ञानी ई नै 'हिमालय रो बगीचो' कैवे। टूरिष्टा री घणी भीड़ अजै ताई अठै नी है। इण कारण नगर रैं विकारा सू अळगो है। बस्ती भारत रैं छोटे बडे कस्बां सरीसी है। थोडी देर बाजार में घूमता लोवर रोड कानी निकरया तो मामै बीकानेर मिष्ठान भण्डार' रो बोड देस'र आनन्द अर अचरज हूयो। जा'र पतो लगायो तो हनुमानगढ़ निवासी एक अग्रवाल अठै मुजिया रसगुल्ला अर बीजी मिठाई नमकीन री दुकान लगा राखी ही। बीकानेर सू आया जाण नैं घणी मुनवार सू नास्तो करवाणो चायो। पण भोजन रो समय हूणे कारण खिमा माग'र उण रे बतायोडे एक हरयाणवी वैष्णव ढाबे मैं भोजन कर्‌यो। पतो लाग्यो कै अठै भी ब्यापार उद्योग में खासा मारवाडी लोग है। आजीविका खातर राजस्थान रा पुरसार्थी अर मेहनती लोग कठै-कठै पहुंचा जावै अर परिस्रम कारण ही कित्ता सफल हू जावै, औ इण बात रो परतख प्रमाण हो।

सिक्का ताई पूठो दार्जलिंग पूगणो हो। समय थोडो हूण सू जल्दी भोजन कर १२ बज्या तिब्बती शोध सस्थान गया। इण री थापना आजादी रैं बाद हुई। १ अक्टूबर १६५८ नै भारत रा पैला प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू इण रो उद्‌घाटन कर्‌यो। सस्थान विशेष रूप सू बौद्ध साहित्य रैं अध्ययन अर शोध सू जुड्‌यो है। अठै नेपाल, भूटान, थाई देश अर भारत रैं ठामा सू छात्र पढ़ण नैं आवै। बौद्ध धरम रे हस्तलिखित ग्रथा रो अठै चोखो सग्रह है। दुरलभ पोथ्यां, पाण्डुलिपियां, जातक कथावां रे आधर ऊपर बणायोड़ा भगवान बुद्ध रा चित्राम, पखा, मूरत्यां अर न्रत्य रे समय लोक न्रतका रे लगावण आळा मुखोटा, ड्रगन (अजगर) आद रा नमूना अठै मिलै। अठै री कला मायं बौद्ध धरम अर सस्क्रिति रो विशेष परभाव है।

अठै रा लोग भी का तो आदिवासी पा'डी जात्यां रा लोग है का मगोलिया री जाति रा। आदि वास्या मैं खस, गारो जाति रा लोग है। भोटिया अर गुरखा भी चोखी सख्या मैं है। लोग बोत भोळा, सरल, अर घणो परिश्रम करण आळा है। जीवन स्तर अति सामान्य है। शोध सस्थान मैं प्राचीन वस्त्र, पूजा रा उपकारण अर सामग्री आद रो भी सग्रह है। अनुसधान सस्थान रै ठीक नीचे पोधा, बिरखां अर ऑर्किड पौधो रो एक बडो अभयारण है। जकै में ऑर्किड री लगभग ४५० किस्मां अठै मिलै।। ऍ पौधा सिकिम री निजी वनस्पति ही जाणो। दूजी जगावा मैं ऍ नी देखीजै। अठै रोडोड्रेडान, चैरी शाल, धुपी, चीड़ अखरोट, शीशम, जयपत्र, कटस, कुट्टिमपत्र, देवदार, मैग्नोलियां आद अनेक किसम रा विशाल पेड़ है।

गगटोक रो लघु उद्योग सस्थान भी देखण जोग है। आ सरकारी सस्थान है, जिण मैं हाथ सू बण्योडी भात-भात री चीजां राखी है। ऊनी कांबल, शाल, पट्टू, नमदा, गलीचा, होजरी रो सामन, स्कार्फ, बढिया अर बारीक तरास सू बणायोडी लकडी री कलात्मक जिसा, मेज, कुर्सी, पाटा, बच्चां रा भूला, सूती रेशमी वस्त्र, डोर्‌या, लकडी रा रमतिया, छड्‌या बेंत री छावड्‌या, टोप आद अनेक किसम री चीजा बणै अठै अर बिकै।

इण रै बाद सिक्किम रै प्रचीन अर परसिद्ध पेगयांगत्से मठ नै देखण नै गया। ओ मठ खासो जूणो है। अठै रो काठ रो काम देखण जोग है। लाल अर रग सू मठ री भींता अर छात माथै धार्मिक कथावा सू सम्बन्ध राखण आळा सुन्दर चितराम है। रग इत्ता पक्का है कै केई सो साल उपरात भी मिट्‌या नी है। मठ री बनावट पूरण रूप सू बोध वस्तु कला रे आधार माथै है। अँवै के इण मठ सू कचनजघा रो द्रश्य बडो मोवणो लागै। सूरज री पैली किरण कचनजघा माथै बैलां छोटे तारे दाई चमकती लागै, पछै धीरे-धीरे तारो बडो हुतो सो लागे। फेर ऊचे चढणे सू तावडो दीसै।

समय थोड़ो हूणे सूं ३ बज्यां वापस दार्जिलिंग खातर रवाना ा। गंगटोक ने अर्थ रे मुजीब 'ऊंचे पा'ड' रो नगर देख्यो। श्रा बास्तव हिमलय रे पूरब रे में १५२४ मी ऊंचे डूंगरा मे कुदरत री सुरंगी गोदी घूमावदार घाटया, हरिया बिरखा अर जंगली पुस्या री शांत नगरी है। ी इमारता रा रहस्यपूर्ण प्रतीक, बौद्ध वणगत रा स्तूप, फिरोजा पर्रा रा कुण्डल काना में पैर्‌या बूढा मिनख, बक्खू (लम्बो चोगो) पागदा (एप्रेन दाई कमर रो वस्त्र) पैर्‌या लुगाया अर डरावणीया कड़ा (मुखौटा) आद एक बिलकुल अळायदी संस्क्रिति रो रूप उजागर रें। पछमी देशा री उपभोक्ता संस्क्रिति री छाया सूं अछूती इण पर्यटन गरी मे जीवन री सेंज, सरल प्रक्रत दशा नैं देख'र सुख री इसी अनुभूति वै, जिके ने बतायो नी जा सकै।

●

धरम क्षेत्र कुरूक्षेत्र

गीता रो अमर सदेश सुणावण आळी कुरुक्षेत्र री धरती धरम करम री पावन भूम वजै। स्रिष्टि करता रै गुण, सुभाव अर मरम रो जित्तो सातरो बखाण इण पोथी में हुयो है, बिसो दूजे धरम ग्रन्थ में नी मिलै। श्री वेद व्यास कैयो है कै गीता री शिक्षा रै मुजोब जीवन विताणो मानखे रो पैलो कर्तव्य है। कौरवां-पाण्डवा रो महायुद्ध कुरुक्षेत्र में हुयो हो हो, उण रो चितराम करण आळो 'महाभारत' धरम, अरथ अर मोक्ष री समपूरण शिक्षा देवण आळो इसो दर्शानिक ग्रन्थ है, जकै ने भारतीय चिंतन रो विश्वकोष कैयो जा सकै। कदै कुरुक्षेत्र नैडी सरस्वती नदी बैहती ही। इण रै तट माथै ऋषि-मुनिया वेद, पुराण, स्म्रिति आद धरम शास्त्रां री रचना करी। अठै ई मनु स्म्रिति लिखीजी। ई ताई पदम पुराण में कैयो है कै कुरुक्षेत्र री जातरा अर ब्रह्म सरोवर में सिनान करणे सूं ही नहीं इण री जातरा रै विचार सूं ई राजसूय यज्ञ रो पुन्न मिलै। साथ्यां साथै इण धाम री जातरा रो आयोजन कर्‌यो।

३० सितम्बर १९७७ नै बीकानेर सूं दिल्ली मेल सूं रवाना हुया। भोर में सरायरोहिल्ला स्टेशन उतर'र सब्जी मडी पूग्या। अठै पजाब मेल ८ बज्या आवै। इण में बैठ'र २ बज्या तक कुरुक्षेत्र पूग्या।

दिल्ली सू कुरुक्षेत्र करीब १६० कि मी है। पजाब रो मुख्य मारग हूणे सू इण रेल मारग मार्थं गाड्या रो तातो लाग्यो रैवे। सोनीपत, पाणीपत करनाळ आद इतिहास परसिध नगर इण मारग मैं आवैं। सोनीपत ज. दिल्ली सू ३५ कि मी हुसी। एक घटे री जातरा बाद अठै गाडी पूग जावैं। रस्ते मैं छोटा बडा कळ–कारखाना गाडी सू ई दीखता रैवे। मोदी नगर औद्योगिक बस्ती अर एटलस साइकिल रो कारखानो भी रस्ते मैं दीखै। सोनीपत मैं पावर लूम रा केई केन्द्र है। अठै री दर्‌या, खेस, चादरा अर टैपेस्टरी रो सामान मजबूत अर किफायती हुवै अर उत्तर भारत रै सैंरा मे खूब विकै।

पाणीपत दिल्ली सू ७५ कि मी दूर है। कोई २ ३० घटा में गाडी अठै पूग जावै। महाभारत रै समै पाण्डवा जका पाच गावा री माग करी सोनीपत अर पाणीपत वा मा सू ही दो गाव हा। हिन्दुस्तान रै भाग्य रो निरणय करण आली तीन परसिध लडाया, अठै ई लडीजी। सुल्तान इब्राहिम लोदी बाबर सू अठै हार्‌यो, अर मुगल साम्राज्य री नींव पडी। दूजे युद्ध में अकबर हेमू ने हरायो। तीजी, अहमद शाह अब्दाली अर अग्रेजा री लडाई भी अठै ई हुई, जकै मैं विजयी हू'र अंग्रेजा भारत मैं आपरा पग जमाया। बताई जै कै मुस्लिम काल मैं पाणीपत बु आली अर शाह कलदर आद सूफी सता रो केन्द्र हो।

१२० कि मी रै नैडे करनाळ ज है। कैवत रै अनुसार करनाल प्रचीन काल मैं राजा करण रो बसायोडो है। करनाळ हरियाणा री परसिध मडी भी है। अठै सिखा रो विख्यात मजी साब गुरुद्वारो है। कैवे कै गुरु नानक देव सूफी सत कलदर सू अठैई मिल्या हा। शेरशाह सूरी रै बणवायोडी सडक मार्थं हूणं सू उण रै काल री केई सरायां अर कुआ भी अठै देखण नैं मिलै। आगे रै रेल मारग मार्थं तरावडी रो स्टेशन है। जकै रो पुराणो नाम ताराइन हो। ताराइन री लडाई इतिहास परसिध

है। इण सू आगे नीलोखेडी स्टेशन है। औ हरियाणा मैं औद्योगिक प्रशिक्षण रो सैं सू बडो केन्द्र है। नेहरुजी रै समै सू ई बडा बडा शिक्षण प्रतिष्ठान अठै बणना सरू होग्या हा। आ प्रक्रिया ओजू ताई जारी है। नीलोखेडी सू आगे अमीन गांव रो स्टेशन है। ईनैं प्राचीन काल मैं अभिमन्यूपुर कैता। अठै एक पुराणो किलो है, जकै मे पगलिया मडी बडी घुमा ई टा आज ताई निकळै। अमीन सू कोई ५ कि मी आगै कुरुक्षेत्र रो स्टेशन है।

कुरुक्षेत्र ज छोटो सो स्टेशन है। पहले म रै प्लेटफारम रै बछमाद पासे लोहे रै फेन्सिंग सू बडा-बडा बाड़ा दाई आहता बणायोडा है। सूरज ग्रैण रै बगत जद लाखू जातरी अठै ढूकै, उण बेळा रेलगाडी म बैठण तांई अफरतफरी नहीं मचै, इण वास्ते समय मुजीब आयोडा लोगा नैं नम्बर वार इण आहतां मैं भेळा कर देवै अर इस्पेसल रेलगाड्यां मे बैठा'र रवाना करै। आ व्यवस्था जे दूजा मेळे मगरिये आळा बडा धामा अर ठामां मैं भी हुवै तो सुविधा हू सकै। कुरुक्षेत्र सू एक ब्रांच लाइन नरवाणा हूती जीद, हिसार, सरसा आद सैरा नै अठै सू जोडै।

स्टेशन बारै निकळता ई एक साधारण सी धरमशाल है, अठै ठैरण री व्यवस्था हुगी। धरमशाल रै बारै ई छोटो मोटो बजार है। खाणे-पीणे रा होटल, ढाबा, परचून, मणियारी री जिंसा अर कपडे री दुकानां है। तागा अर लोकल बसां रो स्टैंड भी अठै है। सिनान, भोजन विश्राम रै उपरात सिंझ्या पाच बज्यां पैदल ही घूमण फिरण नैं निकळ्या। स्टेशन सू एक सडक गीता स्कूल अर रुद्र टाकीज हूती करीब १.५ कि मी दूर मायै गुरुद्वारा छठी पातशाही पूगै। दूजी समानातर सडक थोडो मोड खा'र नीलम टाकीज हूती बडे बस अडडै पूगै। गुरुद्वारे सू उतराद काना एक सडक मारग इण मैं मिळ जावै अर रेल क्रासिंग नै पार कर थानेसर सैर पूगै। दूजो मारग थोडो दक्षणाद मुड'र कुरुक्षेत्र तालाब का ब्रह्म सरोवर पूगै।

गुरुद्वारे रो तीन मजलो भवन खासो ऊचो है । सफेद कळी रो काम इण पूजा थळी नै स्रात अर भव्य बणावै । दुरुद्वारे माथै एक सोने रै पाणी आळै ऊचे खम्भे ऊपर पीळी धुजा फैरातो रैवे । मिंदर रो आहतो खासो बडो है । हिन्दु स्थापत्य कला रो चोखो प्रतीक है गुरुद्वारो । अठै ग्रंथ साब रो पाठ दिनुगे सिझा हूतो ई रैवे । भजनीक ग्रंथी हरमोनियम बजाता थकां हूं'र पाठ बाचै । सिक्ख अर हिन्दू दोनू मारी सख्या मैं माथो टेकण नै अठै ठूकै । परसिध तीरथ हूणे रै कारण बडो लगर भी अठै चालतो रैवे । सरधाळूआ री भीड हर वेळा रैवे । देश रै दूजा धरम गुरुवा दाई सिख गुरु भी कुरुक्षेत्र धाम समय-समय आता रैया । सै सू पैला गुरु नानक देव अठै सूरज ग्रैण रै मौके आया ।

सूरज ग्रैण रे समय कुरुक्षेत्र रो विशेष महत्व कैया गयो है । समुद्र मथन री कथा सू इण तीरथ नै भी जोड्ये जावै । मथन मैं निकळणे आळै अम्रत घट ताई राकस अर देव जद लडण लाग्या तद विष्णु देवा नै अम्रत पिलावण ताई घडो ले'र बां कानी दौड्या । इण प्रयास मैं अम्रत री थोडो छांटा कुरुक्षेत्र मैं पडगी ही । सास्त्रां मैं कैयो है कै सूरज ग्रैण रै अवसर माथै कुरुक्षेत्र रे सरोवरा मे सिनान करणे सू इए अम्रत रै परमाव सूं भगत जन अमरता अर मुगती पावै । इणी बजह सूं ग्रैण री बेळा आठ दस लाख तीरथ जातरी अठै पूगै ।

नानक देव रै पछै गुरु अमरदास जी, गुरु हरगोविन्द जी, गुरु हरराम जी, गुरु हरकिसन जी, गुरु तेगबहादुर जी अर गुरु गोविन्द सिंह जी महाराज बखत-बखत अठै पधारया । इण रो परमाण अठै रे प्राचीन गुरुद्वारां रै ग्रंथो अर दस्तावेजा सूं भी मिलै । औरंगजेब री धारमिक कट्टरता रो मुकाबलो करते थका गुरुतेग बहादुर इण क्षेत्र मैं खासा दिन रैया । इण बात रा परमाण भी मिलै कै महाराजा रणजीत सिंह कुरुक्षेत्र रे मिंदर री व्यवस्था खातर आछी रकम दी ही । आज रे सबीरण

साम्प्रदायिक माहौल मे जका लोग हिन्दू-सिखा नै फिरका मैं बाटण री कुचेप्टा मैं लाग्योडा है, बारे खातर इणा दोना समुदाया री मूल एकता नै समझावण मैं इस्सा ठामा कित्ता मूल्यवान है, आ बात आपै ही समझ मैं आ जावै। सिख धरम गुरुवा रे अलावा सिख कवियाँ अर साहित्यकारा री भी कुरुक्षेत्र रचना थळी रही है। कवि भाई सतोख सिंह इण समाग रे कैंथल नगर रे राजा उदयसिंह रे आश्रम मे रैया। 'नानक प्रकाश' *'अध्यात्म रामायण' अर 'गुरु प्रताप सूरज'* बा री सदा समरनजोग रचनावा है। ए रचनावा सिख सम्प्रदाय रा ही नही हिन्दी रा भी गौरव ग्र थ है। ,राष्ट्र री एकता रा इसा स्रोत सरावण अर अनुकरण जोग है। गुरुद्वारे रैं ग्रथ्या सू बतळावता जाणकारया लेता न बज्यां नेडे पूठा धरम शाला ताई चाल्या।

आगले दिन भोर मैं ६ बज्या सिनान दरसन ताई ब्रह्म सरोवर कानी रवाना हुया। नहाणे-बदलणै रा गाभा साथै लिया। गुरुद्वारे ताई तो साग़ी रास्तो हो। आगे पच्छम दिशा मैं मुडण आळी सडक सू ही प्राचीन मिंदर अर ब्रह्म सरोवर रा नुवा बण्या घाट दीसण लागै। सडक रैं नेडे ही स्रवणनाथ मिंदर है, जकै नै पाण्डव मिंदर भी कैवे। मिंदर पाच सात सो बरस पुराणे लागै। सामै गीता भवन अर गोडीय मठ है। गोडीय मठ री चार दीवारी खासी बडी है। केई साधु सत अठै डेरो जमाया दीस्या। गीता भवन रो मिंदर भी प्राचीन है। रख रखाव रे अभाव मैं उजाड सौ पड्यो है।

घाट माथै पूगणे पर चित्त प्रसन्न हू जावै। ब्रह्म सरोवर री विशाल निरमल झील रैं चारू मेर लाल पत्थर रैं पगोथिया रा ऊचा इक सार घाट बण्या है। सै सू ऊपरले चौडे प्लेटफारम नुमा चुवुतरे माथै चारू मेर लम्बी चोडी बारादरी बणायोडी है। बरामदे दाई उण बारादरी री छान उपर सू छप्योडी हूणे कारण मेळे म का आडे दिना गर्म्या मैं

ग छाया रो अनुभव करै। तावड़ें में पत्थर रै गरम हूणे सू भी अठै जाल मिलै। न्हावण आळा तीरथ जातरी आपरा वस्त्र, गामा अठै ही तार देवै। झील रै बिचोबीच घणे पाणी आळी खासी चौड़ी जाग्यां नै पर री जाळी सू चारू मेर आड़ बणा'र घेर दियो है, जके सू लोग भाव तणे पाणी में नी पोंच सके अर खतरे सू बच सकै। घाटा रो म्रौ रक्षित अर सुदर इतजाम साठ रै दशक मे श्री गुलजारीलाल नदा रो करेस अर मारग दरसन मैं हुयो। सरोवर री सै सू खास विशेषता है क इण मैं माखरा नहर रे पाणी रै निकास रो खाळो भी रास्योड़ो है। ण भात री सुथरी व्यवस्था सू झील रो पाणी कदे भी मैलो हूणे री भावना नी रैवे। दूजा तीरथा नै भी इण सू प्रेरणा अर सीख ले'र इसी चोखी, सुरुचि अर सुविधा पूरण व्यवस्था करणी चाइजै। कोई अटै साण प्रात. सिनान रो पुन्न लाभ लेणे रे उपरात मिदरा रा दरसन करया।

घाट रे उतराद थानेसर शहर अर ब्रह्म सरोवर रै बीच बिरला मिदर है। लाल अर सफेद रग रो औ मिदर दिल्ली, हरद्वार, मथुरा, जयपुर, हैदराबद आद दूजा बिरला मिदरा री शैली माथै बण्यो है। इण रो नुकीलो ऊचो शिखर दूर सू ही निजर आवै। मिदर रै चारू मेर ऊची भींत रो परकोटो है। लो रे बडे छड़ा आळे दरवाजे नै पार करता ही सफेद मकराणे सू बण्योड़ो अर्जुन रो रथ है अर भगवान किसन नै सारथी रूप मैं दिखायोडा है। कुरुक्षेत्र ही गीता रे पावन उपदेश री पुन्न भूम है। इण सम्बन्ध भाव रै कारण अठै पार्थ-सारथी रथ री सार्थकता दूणी हुगो है। रथ मैं जुत्या घोडा रा अगा अर भावा रो कला पूरण अनुपात वानै सजीव सा लागता बणा देवे है। जातरी वाने देखता ही रह जावै। भगवान पार्थ सारथी री उपदेश देणे आळी मुद्रा भी आकर्षक लागै। रथ रै लारै मूल मिदर है। निज मिदर रै आगै बडो हाल नुमा सत्सग भवन है। भवन मैं भीतां माथै चारू मेर देवी-देवतावा रा

चितराम पेंट कियोड़ा है । महाभारत री अनेक कथावां अर बीजा दृस्यां रा प्रसग भी मांड्योड़ा है । हाल मैं दर्यां बिछायोड़ी है, माइक रो परबन्ध है । प्राय मोर सू सिझ्या तांई कीरतन, पाठ आद अठै चालता रैवे । एकांत अर शांत हुणे कारण मन नै आध्यात्मिक शांति मिलै । मिंदर रै बारे ब्याऊ अर बाग भी है । अठै जातरी बिसांई ले'र थकावट मिटाता दीसै ।

दोपहर बाद सनेत तालाब मैं सिनान करणो । गुरुद्वारे सू पैलां ई सड़क रै डावैं कानी दुख भजनेश्वर महादेव रो मिंदर है । मिंदर खासो जूणो है । कली री काम तावड़े बिरखा अर समय रे परभाव सू काळो पड़ग्यो है । जीरण मिंदर नै मरमत कराण री जरूरत दीसै । सनेत सरोवर रो प्राचीन नाम कोई सन्निहित सरोवर कैवे । तो कोई सजयहृत कैवे । तालाब ब्रह्म सरोवर भील सू तो खासो छोटो है । पण अठै रा घाट पुराणा । अर संगमरमर सू बण्योड़ा है । सामैं पण्डा री भी चौकया है । पूचते ही ठाम, जात आद री पड़ताळ करणियां केई पण्डा चारू मेर भूमग्या । पछै मारवाड़ क्षेत्र रै पण्डे पुरोषोत्तमदास म्हाने सिनान पूजा, सकल्प तरपण आद करायो । कुंकुम तिलक लगायो । सब जणा बांनै सरधा सारु दिखणा दी है । बिणा म्हानै नेड़ै कनै रे मिंदरां रा भी दरसन कराया । सनेत तलाब री भी घणी मानता है । कुरुक्षेत्र आणे आळा जातरा वास्ते अठै भी सिनान करणो जरुरी मानीजै । नेड़ै ही ध्रुव नारायण मिंदर, लिछमी नारायण मिंदर अर काली कमली आळे रा मिंदर है । काली कमली मिंदर आगे बड़ो भारी चौगान है जकै मैं साधु संत प्राय हरमेश ही रैवे पण सनेत अर ब्रह्म सरोवर रै बीचोबीच हुणै अर मिंदरां रै नेड़ै हुणे कारण मेळै रै दिना मे तो औ मैदान खचाखच भर्यो रैवे, इसो बताइजो । सिझ्या सात बज्यां पाछा बसेरे पूग्या । भोजन उपरांत आसे-पासे घूमता रैयां अर जल्दी आ'र सोग्या । दिन भर री थकान कारण पड़तां पाण ही नींद रा झोला लेवण लाग्या ।

तीसरे दिन भोर में तांगे सूं ज्योतिसर गया। ज्योतिसर कुरुक्षेत्र सूं ८ कि. मी दूर है। अठै भगवान क्रिसन अर्जुन नै संशय मैं पड्यो देख बी रो अज्ञान मिटावण तांई ज्ञान रो आलोक फैलावण आळै कर्मयोग रो सदेश दियो। गुरुद्वारे सूं थानेसर रेल स्टेशन री सड़क आगे जा'र उत्तर पच्छम मैं पहेवा तीरथ कानी मुडै। अठै बस्ती खतम हू जावै अर धान रा झूमता खेत दीसण लागै। सड़क रै डावै पासे भाखड़ा नहर सूं निकाळ्योडी माइनर केई दूर साथै चाले। जीवणै हाथ थोडी–थोडी दूर माथै नळ कूप दीसै। सड़क रै सारै डोगा हरा बिरख चारूं मेर अर आंम्बा रा बाग भी केई जाग्यां दीसै। पशु धन अठै बोळयत में है। दिनुगे रो वखत हूणे रै कारण गायां, भैस्यां रा टोळ चरणने जावता दीस्या। अठै रै हरियाणवी गाय अर मूर्रा नसल री भैसा समूळै देस में दुधारू पसुआ मैं परसिध है। इण कारणां सूं अठै रा लोग खुशहाल अर सम्रिध है। खेती बाडी अर बागां रे जास्ती हूणे कारण प्राचीन काल सूं ई इण खेत्र माथै ठाकुरजी री घणी किरपा रैयी है। इण रा 'बहुधान्यक' अर 'हरिअरण्य' नाम ईं बात रा परतख परमाण है। बाण भट्ट अर चीनी जातरी हेनसाग भी आपरे ग्रन्था मैं इण भूम री सम्पन्नता री चरचा कीनी है।

ज्योतिसर मैं एक छोटो ताळाब अर बीरे सारे ही क्रिसनजी रो छोटो अर मोवणी मूरत आळो मिंदर है। तळाब रै उत्तराद वट रो एक बडो पुराणो बिरख है। मिंदर ऊंचे चबूतरे माथै बण्योडो है। मूल मिंदर रो दूसर निर्माण ब्रह्मसरोवर साथै अठै भी हुयो। जातरी आसैं पासे रे हिस्सां अर देस रै दूजा ठौडां सूं बराबर अठै आंता रैवे। माहभारत रै युद्ध मैं मोह बंधन रै कारण लडाई खातर जद अर्जुन असमंजस मैं पड्यो हो उण नै निज धरम रै पालन अर निष्काम करम रो मरम भगवान क्रिसन आपरे उपदेशां मैं अठै ई समझायो हो। आज भी उण मूल्यां मैं बुराई माथै भलाई, झूठ माठै सत्य अर अधरम माथै धरम री जय रै

रूप मैं जाणीजै। इण तालाव मैं सिनान अर मिंदर रा दर्शन कर बम सू पिहोवा तीरथ गया।

पिहोवा अठै सू ३० कि. मी दूर है। पैंतीस चालीस मिंटां मैं बस पूगगी। समपूरण मारग घणी खेती आळो सरसब्ज इलाको है। धान अर ईख रा झूमता खेत तो दीखे ही हा, जाणकारां बतायो कै कपास, चणो, गेहूं, सरसों, छोडियो अर दालां री खेती भी अठै नीपजै। इतिहास री दीठ सू पिहोवा बोत पुराणो अर परसिध ठाम है। इण नगर रो प्राचीन नाम 'प्रिथुदक' हो। भारत रैं पैले राजा 'प्रिथु' रैं नाम सू इण रो औ नाम पड्यो। पुराणां अर महाभारत मैं इण रो पुन्न भूम रूप मैं उल्लेख मिलै। मानता आ है कै अठै कोई पापी सरोवर मैं सिनान करै तो पाप मुगत हो'र देवस्थान रो अधिकार बणै। कैवा है कै विश्वामित्र ने, जिका कै जलम सू क्षत्री हा, अठै तपस्या करणै सू 'ब्रह्मरिषि' री उपाध मिली ही। अठै रो छोटो सो सरोवर चारू मेर पक्का घाटां अर मिंदर सू घिर्‌यो है। ब्रिमन, शिव, विष्णु सरस्वती रा केई छोटा बडा मिंदर अठै है। अठै रो वातावरण शांत है। जातरां री घणी भीड अठै नी रैवे। हरियाणा, पंजाब क्षेत्र रा लोग गयाजी रैं तीरथ दाई आपरे पुरखां रा पिण्डदान कराणने अठै ढूकै। पण पण्डा री लूट अठै देखण मैं नी आवै।

आजकाल पिहावो अनाज री चोखी मण्डी है। करीब ४० हजार रैं नेडे बस्ती हुसी। अठै भी सिखां रो चोखो बडो गुरुद्वारो बस स्टैंड रैं सारे ही है। पटियाळा सू इण री सीमा लागे, ई कारण अठै सिक्खा अर पंजाब्या री सख्या भी खासी है। सिखा अठै जमीनां भी ले राखी है। भाईचारे सू दोन्यू सम्प्रदाय मेल-मिलाप अर आपसदारी सू जीवन बितावै। दोपारी रो भोजन अठैई एक वैष्णव भोजनालय मैं कर्‌यो। नरवाणा कुरुक्षेत्र चंडीगढ मुख्य मारग रैं दोन्यू पासे औ कस्बो बस्यो है।

बाजार भी इणी सड़क रै दोन्यू कानी है। सरोवर रै सारे पुराणो बाजार है। कनै ई नई बण्योड़ी मण्डी है। मण्डी मैं आड़तिया री बड़ी–बड़ी दूकानां है जका मैं आज हजारं बोरी अनाज राखण अर बेचण री सुविधा है। ट्रैक्टर–ट्राल्या सूं मण्डी भरी रैवे। चारूं मेर ऊंचा स्वस्थ शरीर वाळा मोटियार अर हसमुख सम्पन्न लोगा नै देख'र घणो हरख हुवै। सदाशिवराव भाऊ अठै रै पौष्टिक भोजन अर खाते पीते लोगा नै देख'र ही लिख्यो हो 'देश अनूप एक हरियाणा, दूध, दही घृत का जंह खाणा'।

दोपार बाद बिसराम कर पूठा बस सूं कुरुक्षेत्र पूग्या। आवती बेळा कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय रै स्टैंड माथै उतरग्या। युनिवरसिटी री इमारतां अर परिसर रो घेरो केई मींला ताईं फैल्योड़ो है। इण क्षेत्र रै सांस्कृतिक गौरव नै परकास मैं लाणै वास्ते सन् १९५६ मैं इण विसाल विश्वविद्यालय री थापणा हुई। थोड़े समय मैं ई ओ देस रै विसेष अध्ययन केन्द्रा मैं सूं एक गिणीजण लागो। अठै संस्कृत, पाली, दर्शन, इतिहास रै सागै गणित, भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र आद रा पदरह स्नातकोत्तर विभाग है। इंजीनियरिंग कालेज भी अठै है। विश्वविद्यालय रै हाते मे खेती भी हुवै। किसी शास्त्र रो सैधातिक अर व्यौहारिक प्रयोग अठै एके साथे अध्ययन नै सम्पन्न बणावै। सिंचाई ताईं मारग एक छोटी नहर निकाल्योड़ी है। पुस्तकालय रो बडो भवन दो नम्बर रै गेट कनै है। अळायदा–अळायदा विषयां रा जुद जुदा भवन है। छात्र छात्रावा खातर ४/५ बडा–बडा होस्टल है। अध्यापकां रा आवास सुंदर, विशाल अर हर्या भर्या है। कुरुक्षेत्र री महिमा रै मुजीब ही विश्वविद्यालय रे मारग स्वरूप नै देख मन मैं हरख हुवै। सगळै हाते मैं घूमण में तो केई घंटा लाग जावै। सिंझ्यां पड्यां पूठा ठैरण री ठौड पूग्या।

आगले दिन थानेसर रो कस्बो अर नेडे–कनै रा दरसन जोग ठाम ही देखणा बच्या हा। दिनुगे आराम सूं चाय नास्तो कर ८ बज्यां

रिवसो कर सीधा थाणु तीरथ पूग्या। इण रो पुराणो नाम स्थाणीश्वर सरोवर है। सारे ही भगवान शिव रो प्राचीन शिवालय है। सरोवर अर मिंदर दोन्यू जीरण हालत में है। घाट टूट चुक्या है अर गाद भरणे सू तळाव जोहड दाई हुग्यो है। पाणी सिनान करण जोग नी है। मिंदर में भी नित पूजा उपासना होती नी लागे। पण बतावे कै काती माह में पूरे महीने अठे मेळो भरीजै। वामन पुराण में जिकर आवे कै राजा वेन रो कोढ इण सरोवर रे *सिनान सू ही दूर हुयो हो। कैवत या भी है कि* महाभारत री लड़ाई सूं पैला अर्जुन भी अठे सिनान कर युद्ध री सफलता वास्ते भगवान शकर री उपासना करी ही।

अठै सू थोडी दूर ही सरस्वती रो पुळ अर मिंदर है। जुणे पुळ अर मिंदर रा अवशेष तो मौजूद है पण नदी तो बौत पैला सू ही सुखगी है। हा, नदी रो आगोर अोजू भी दीसै। बरसात में नाळे दाई पाणी भी इण में रैवे। कालिदास रै मेघदूत में इण नदी अर कुरुक्षेत्र रै गुण गान में बौत कुछ लिख्यो है। अठै आम अर जामुन रा केई बाग आज भी है। पाछा कस्बे कानी घूम्या। रस्ते में सिखा रे एक गुरुदारे अर देवी रै पुराणे मिंदर रा दरसन कर्या। स्थाणीश्वर मारग रै दखणी नुके एक सूफी सत शेख चेहली रो मकबरो भी है, जके नै भूल सूं लोग आजकाल 'शेखचिल्ली' रो मकबरो कैवण लागग्या है। इण भात मिंदर, गुरुद्वारे अर मकबरे री मौजूदगी भारत रै सर्व धरम समभाव अर समन्वित सस्क्रिति रो रूप उजागर करती लागै। राम तीरथ मारग री एक गळी सूं थानेसर सैर में दाखिल हुया। आज तो थानेसर ५० हजार री बस्ती रो कस्बो ही है पण देश रे इतिहास में इण रो अनूठो अर महत्व रो स्थान रैयो है। सातवीं सदी में ओ विशाल नगर राजा हर्षवर्धन री राजधानी ही। स्थाणीश्वर एक जनपद हो। राजा हर्ष अर बांरी बैन राजश्री उदार अर त्यागी सुभाव रा सत, साध्वी व्यक्ति दाई हा। हर साल वै आपरे खजाने री लूठी रकम ब्राह्मणा, गरीबा अर जरूरमदा में बाट

देना। बाणभट्ट जिसा कवि इण राज्य मैं सरक्षण पायो। 'हर्ष चरित' अर 'कादम्बरी' जिसा अमर ग्रथा री रचना भूम आई नगरी ही। हर्ष रैं जमाने मैं बणज ब्यवसाय, कला, स्थापत्य, साहित्य, शिक्षा अर सस्क्रिति रैं क्षेत्र मैं अठै नया-नया कीरतीमाना री थापना हुई। समुद्रगुप्त पछै हर्ष ही इसा सम्राट हा जका भारत नैं एकसूत्र मैं बाधणें री चेष्टा कीवी।

महाभारत मैं एक जाग्यां लिख्यो है गगा रैं जळ रैं सेवन सूं मुगती हुवै, कासी री भूम अर जल मैं मोक्ष देणे री खिमता है पण कुरुक्षेत्र रै तो जल, थल अर पून तीन्यू मैं मानाखे नैं पार लघाणें री शक्ति है। दिल्ली सग्रहालय रै एक शिलालेख मैं लिख्यो :— 'देशोऽस्ति हरियाणाख्यः पृथिव्या स्वर्गसन्निभ' अर्थात् धरती माथै हरियाणो स्वर्ग रो दूजो नाम है। आपरी सास्क्रितिक धरोवर, पावन तीरथा, धामा, क्रिषि उत्पाद री बोळायत, पशुधन री श्रेष्ठता, हरियावळ, सूरवीरता, कर्मठता अर सम्पन्नता रो इण धरती नैं परतख इणी रूप मैं देख'र आज भी आ कैवत सच्ची ठैरती लागै। जद-जद इण जातरा री झाक्या दिमाग मैं उमरैं मन अर आतमा मैं आनन्द री लहरां गोता खावण लागै।

●

गोपाल री ब्रज भूम

क्रिसन भगवान रे सम्पूरण जीवन सूं जुड़्योड़ो ब्रज भूमी
आखे भारत में घणी मानता है। ग्वाळिये दाई गायां चरावण सूं लगा
गीता रै करमयोग रो गंभीर संदेश देणे आळे योगीराज क्रिसन रै जीव
अर गुणां रे विकास रो घणो श्रेय इण क्षेत्र नै ई रयो है। ब्रज भूमि
भारत री प्रोरण संस्क्रिति रो जीतो जागतो प्रतीक है। कुदरत, इ सा
अर बीजा प्राणियां रे एकै सागै आनन्द सूं सहजीवन बिताणे री आस्थ
अठै प्रगट हुई है। संत कवियां जमुना रे तट, बट बिरख, गोकुल री कुंज
गळ्यां, बांसुरी वादन, कोयल री कूक, चंदा री चांदणी आद रै रूप में
इण समूळे खेतर री प्राकृतिक सोभा रो ई बखाण कर्‌यो है। क्रिसन रो
सिणगार बैजयंती री माळा अर मोर पंखां रे मुगट सूं हुवै, बां रो प्रिय
वाद्‌य बांसरी है, उणां री सोभा ने घण दामण का नील कमल सूं उपमा
दरीजै। गोधन, गोचारण अर बन-बिहार क्रिसन री मन भावती क्रीडा
है। गोकुल रो हरख, गोप्यां रा ओळमा, जसोदा री ममता अर कोड,
माखन चोरी, जमुना तट रा रास एकै कानी ब्रज र जन जीवन रै तौर
तरीकां रो खुल्लो चित्राम है, तो दूजे कानी प्रक्रिति सूं मानखे रे अटूट
रिश्ते, समता री भावना, अनीति सूं लडने री क्रिसन री खिमता, धरम रो
पालना, कामनावां नै त्याग'र करम करणे री भावना आद में भारतीय

जीवन री दीठ अर मानखे रे आदर्शां री आक करोजो है। इण सब कारणां सू ई सेनर सू सैं भारत वासियां रो गैरो लगाव हूणो सोभाविक है।

१४ नवम्बर १९७९ में राजस्थान लोक समिति री कार्यकारिणी समिति री एक बैठक भरतपुर में हुई। बीकानेर सू चालती वखत ही साथ्या समेत आगे मथुरा व्रिदावन जावण रो भी कार्यक्रम बणा लियो। मीटिंग दो दिन चाली। १६ तारीख नैं भोर में भरतपुर पक्षी-विहार देखण नैं गया। मीटिंग सू ही डा मोहनसिंह मेहता अर केसरीमलजी बोरडिया भी साथैं चाल्या। डा मेहता राजस्थान विश्वविद्यालय रा कुलपति रैंया हा। वा रा कोई शिष्य उण दिनां पक्षी ओरण रा प्रभारी हा। वा नैं पैला सूचना दे दी हो। बठै पुगता ही वा सब रो घणो सम्मान कर्‌यो अर नाव निकळवा'र झील में दूर ताईं पक्षी देखावण नैं म्हारे सागै चाल्या। एक चोखी बडी दूरबीन भी वा साथैं लें ली।

भरतपुर रै केवलादेवघाना राष्ट्रीय पक्षी ओरण री झील कुल २६ मील लम्बी है। झील में सैंकडू छोटा-बडा रूंख है। झील रै किनारे बडो बगीचो बणायोडो है। जद रूस देश रै साइवेरिया आद क्षेत्रां में घणो ठंड पडण लागै तो बठै सू सैंकडू किस्म रा पछी हजारू री सख्या में उड'र गमती ठंड री जाग्यां आ जावै। इया तो वै दिल्ली, अलवर, गजनेर आद अनेक जाग्यां पूगै। पण भरतपुर री झील, अठै रो तापमान अर तलाब में मछल्या आद री मौजूदगी री सुविधा रै कारण जित्ती तादाद में पक्षी, अठै आवै उत्ती सख्या में और कठेई नी पूगै। अनेक देसा सू करीब २० हजार पछी आये साल अठै ढूकै। जिणा में ब्लैक आइसिस, साइवेरिया रा सारस, ओपन बिल, साइवेरिया रा क्रेन, पेंटेड स्टार्क, कारमेरट ग्रेरन, पौंड आद मुख्य है। तळाब में हरमेस घास अर पाणी रैणे सू अनेक भात रा जीव जतु अर नानी मछल्या उत्पन्न हुवै अर पक्षा नैं आछो भोजन मिलतो रैवे।

अधिकारी महोदय आ बात भी बताई कै जको पछी ईं साल जकै रूख माथै बैठे बो आगले साल मळै उण सागी रूख माथै आ'र आपरो बसेरो करै। पखिया री पैचाण वास्ते वांरे गळे मैं एक पट्टो घात'र उण माथै नम्बर लिख देवै। जकै सूं वां री सिनाखत हू सकै। दूरबीन सू देखण सूं पखी बडा अर नेड़े दीसैं। जठै ताई निजर आवैं वारूं मेर दूर तक पखी हो पखी दीसैं। अठै इण पखियां रै प्रजनन, सुभाव, बोली, उडने आद सम्बन्धी बाता री बारीकी सूं अध्ययन भी कियो जावै। जद मार्च महीने मैं गरमी पडनी सरू हुवै अै पांखी पूठा आपरे देश चल्या जावै। औ सिलसिलो अटूट क्रम सूं चालतो रैवे।

पखिया री इण विलक्षण यातरा सूं केई बाता मन मस्तक मैं मैं आवैं। इसान नैं यू तो सैं सूं श्रेष्ठ मानीजै पण अकळ नैं छोड दूजी केई कुदरती खिमतावा मैं पखी इसानां सूं भी आगै दीसैं। औ तो परतख ही है कै पखी कचे अनन्त आभै मैं आजादी सूं उड सकै। पण बिना केई मारग दरसावणे आळे मोमिये रे सहयोग रै अै पखी हजारुं मील री अनथक जातरा किया पूरी कर लेवे? दिशा अर ठांम री किसी अनूठी जाणकारी आंनै हुवै? अजूबे री बात है कै अै पखी झुड बणा'र भेळा हू'र आवैं। सहयोग अर सहजीवन मानखो आं सूं सीख सकै। भरतपुर पखी बिहार मैं निरखणो एक नुवो अनुभव हो। घाना मे म्हे करीब ३ घण्टा घूम्या।

ग्यारह बज्या नेडै बस सू डीग रवाना हुया। डीग रो रस्तो हर्यो-भर्यो है। मारग मैं सडक रै दोन्यू कानी बिरखा री पांत साथै चाले। अठै री बोली मैं राजस्थानी अर व्रज दोन्या रो मिश्रण है, व्रज रो परभाव बेसी है। ३७ कि. मी. री आ दूरी पूण घण्टे में पूरी कर ली। भरतपुर, दिल्ली मुख्य मारग माथै बसोडी आ नगरी कदै भरतपुर रै जाट राजावा री राजधानी ही। सतरवी सदी मैं जाट राजा बदलसिंह

ई १७२२ में इण रो निरमाण सरू करायो । पछै उण रै उत्तराधिकारी परसिध राजा सूरजमल इण में खपसूरत बांगा, महला, तलावां आद रै कला पूरण योग सू ई री सुदरता में चार चाद लगाया । डीग सैर री सडकां सीधी अर चौवड काटती है । जयपुर अर डीग प्राय एकै समय बण्योडा है । दोन्यां री बणगत अर समकोण सडका मरीसी लागै ।

डीग रा जल महल अचरज में नाखण अळी शिल्प कल्पना अर कारीगरी रा नायाब नमूना है । आ नै बण्या ढाई सौ बरस बीत्या पछै अोजू भी भ्रैं भवन नुवा सा लागै । बणगत अर फूटरापे में भ्रैं लाल किले अर आमेर रै महलां सू टक्कर लेवै । बतावै कै हजारू मजदूरां इकलग आठ बरसां री महनत अर साधना सू इणा रो निरमाण करयो हो । भवना रै सामै पाणी रा बडा-बडा तळाव अर पग पग छेडे फवारा री व्यवस्था हुणै रै कारण भ्रा नै जल महल रै नाम सू वतलावै ।

महलां रो धोरी मोडो सिंघ पोळ बजै । इण पोळ माथै गोपाल अर गऊ माता री मूरता है, जिण सू जाट राजावा री वैष्णव भगती अर गौ भगती रो पत्तो लागै । पोळ मांय बडतां ही दोन्यू मेर हर्‌या भर्‌या विशाल भोवणा बगीचा है । बागा में अनेक भात री वनस्पती पेड पौधा, भाड बेला, क्यार्‌या, सुरगे पुसपा री पात, सतरगो जल छोडता फवारा री सैकडू धारां इण नै साधारण बाग री ठौड नदनघन सो रूप देंवती लागै ।

इण फवारा में जल पूगावण री बडी प्राछी वैज्ञानिक व्यवस्था है । जल यत्रां रै निरमाण में मध्य काल में देश री कला खासी उन्नत ही, भ्रैं महल इण बात रा परतख प्रमाण है । किसन महल अर सूजर महल रै बीच पैले तल्ले माथै ३५ फुट री ऊंचाई माथै एक वडो हौद बण्योडो है । हौद री लम्बाई १४० फुट चौडाई ११० फुट अर गैराई साढी छ फुट है । इण सू पाणी री सात सो नळक्यां जुडयोडी है । नीचे बडा-बडा कुआं

है। कुआं मांय सूं पुराणे समय में बळघा सूं पाणी खींच'र आं हौदां नें भरता। अबै बिजली री मोटर सूं औ काम हुवै। थोड़ा दिनां पैला ईं धरम पाल री एक किताब 'अठारवीं सदी में भारत में विज्ञान अर टेक्नोलोजी नाम सूं प्रकाशित हुई है, जकी घणी चर्चा रो विषय भी बणी है। इण पुस्तक में मध्यकाल मे देश रे वैज्ञानिक खोजां री प्रामाणिक श्रेष्ठता रो कथन हुयो है। इण कड़ी में आ जल यंत्रां नें भी गिण्यां जा सकै। हौद री नलकयां छूटां'र बानें अनेक सूखे रंगां री पोटल्यां नाख'र पाणी नें रंगीन बणाणे री व्यवस्था है।

फवारां रै एक कानी केशव महल है। कँवे इण महल री दुछत्ती नें पोली राख'र उण में गोळ भाटा राख्योड़ा हा। पाणी रै प्रवाह सूं बै भाटा आपस में टक्कर खाता अर तेज बिरखा अर बादळां रै गरजणे री आवाज करता। बाद मे एक अंग्रेज अधिकारी इण तकनीक री खूबी जाणण खातर छात नें एक कानी सूं मगवा'र जाणकारी लेणी चावी। जकै कारण इण में खराबी आगी, अर पछै सुधार नी सकी। फवारां री घणी आछी व्यवस्था तो निसात, शालीमार, पिंजौर आद मुगल बगीचां म भी है। पण केशव महल जिसी आ विशेषता कोई दूजी जाग्यां नी है। स्थापत्य री दीठ सूं इणां नें अजूबो ही कैयो जा सकै है।

डीग में कैई सुंदर महल है। वां में गोपाल महल, किसन महल, सावण भादो महल खास आकर्षक अर मसहूर है। बिचोबळै बागां रै ऊपर गोपल महल है। औ महल पूरब कानी एक मजलो, उत्तर-दखण में दुमजलो अर पच्छमाद पाछै चौमजलो है। मांय बड़ता ही बडो दरबार हाल आवै। सितत्तर फुट लम्बो अर चौपन फुट चोडो औ हाल दिल्ली अर आगरा रै दीवाने आम दाई लागै। इण री छात, खम्मा अर भींतां माथै खुदाई रो चोखो काम है। महराबां माथै वेल बूटां अर जाली झरोखां रो बौत महीण अर सोवणो काम है। जाळ्यां लारै स्यात राण्यां रै बैठण रो परबंध हुवो। महराबां मे बालकोन्यां बणयोडी है, यै भी बैठण नें काम

आंतो। इण महल रै मांय देसी रेसोड़ो अर सोवण आळो महल भी सार्यै हो है।

गोपाल महल नै उतराद दिखणाद दो दूजा महल है, जका नै सावण-भादौ कैवे। दूर सूं देखण मैं म्रै नाव दांई दीसै। सामै तालाब है हो। असली नौका रो भरम हुवै। गोपाल महल रै सामै ममराणे री बडी चौकी माथै मकराणे रो ई एक सुदर हींडो है। कैवे औ हींडो मूल मैं शाहजाह री चावती बेगम मुमताज रो हो। ई १७६८ मे जाट राजा जवाहर मल इंनै दिल्ली री लडाई मैं लूट'र अठै लायो।

गोपाल महल रै कनै सूरज महल है, जको मकराने सू बण्यो है। इण माथै रगीन वेल बूटां रो आछो काम है। सूरज महल रै लारै दुमजलो हरदेव महल हे। इणा री छात छतरी री तरा है। झरोखा माथै खुदाई रो तरास अर उभार रो चोखो कलापूरण काम उकेर्‌योडो है।

बिचोळिये बाग कनै किसन महल है। इण मैं भी पत्थर माथै खुदाई रो आछो काम है। इण महल री लारली भींत मे बेल बूटा अर जाळी रै काम नै देखणिया देखता ही रह जावै। इण भात अनेक अनूठा महला, स्थापत्य री श्रेष्ठ कल्पना कर कारीगरी अर रगीन फवारां री इन्दधनुसी पांत कारणै औ बाग अर म्रै महल सुरग री अणछुई शोभा धरती माथै परतख दिखाणे री खिमता राखै। राजस्थान री धरती कला री खान है। डीग रा महल ई खान रा बेशकीमती मोवणा मोती है।

डीग सू मथुरा कोई १५० कि मी. दूर है। तीन घण्टा मैं मथुरा पूगग्या। बस अड्डे रे ठीक लारै सिंधी धरमशाल है। बीमे टिक्या। राजस्थान रै भरतपुर अर उत्तर प्रदेश रै मथुरा, आगरा क्षेत्र नै मिला'र ब्रज रो क्षेत्र बणै। ई पू. छठी सदी सूं ई ब्रज एक गणपद हो, जकै री

राजधानी मथुरा ही। इण कारण आ बौत जूणी नगरी है। भगवान क्रिसन री जलम भूम होणे रे कारण वैष्णवां री बडो तीरथ है। प्राचीन इतिहास, राजनीति अर सांस्क्रिति री रंगथली रैणे री वजह सूं आ नगरी सदा मानता अर आक्रमण री जाग्यां रैई है। अठै रै मिंदरा रा सिखर, कळश अर गुंबजा आभो छूता निजर आवै। जमुना नदी रै संगमरमर रे सोवणा घाटां मांयै सिनान, ध्यान, दान दिखणा रा आयोजन हूता देवै। मथुरा जमुना रै पछम्माद किनारे बस्योडो है। दिल्ली, मुम्बई मुख्य मारग मांयै, जिसे रै ठीक बीच मैं। इण रा चार रेल स्टेशन है। मथुरा, मथुरा छावनी, भूतेश्वर अर मसानी। डीग रे अलावा, भरतपुर, हाथरस, वन्दावन, गोकुल, महावन, बलदाउ, बरसाना, नदगांव, गोवरधन आद सू भी मथुरा नगरी सडक मारग सू सीधी जुड्योडी है।

इतिहासकार क्रिसन जलम री घटना नै १५०० ई. पू. री कूतै। उण बखत सूं आज तांई आ नगरी राजनीति अर सस्क्रति री संगम बणी रैई है। मौर्यकाल मैं भी इण री प्रसिद्धि अर समृद्धि रा दिनमान घणा ऊंचा हा। शक कुसाण अर गुप्त काल मैं कला, साहित्य अर स्थापत्य आद मैं इण री भळै उन्नति हुई। ई. पू दूसरी सदी तांई कुसाण राज्य री आ खास नगरी ही। हिन्दू, जैन अर बौद्ध धरम री सैं सू अनूठी मूरता पैलम पैल अठैई घडीजी। कुसाण काल री पत्थर री कलापूरण खुदाई रा खम्मा जूणै जुग री कला रा चोखा नमूना मानीजै। धारमिक अर आध्यामिक दीठ सूं तो क्रिसन रै जीवन सू सम्वन्ध राखण आला घणकरा धाम तो अठै है ही। इण वजह सूं आज तांई मथुरा उत्तर भारत रै परसिध नगरां मैं गिणीजै।

दूजे दिन दिनुगे मथुरा संग्रहालय देखण नै गया। संग्रहालय बस अड्डे अर धरमशाल सूं २०० कदम मांयै डैम्पीअर बाग मैं बण्योडो है। ओ अजायबघर ई. पू ४०० सूं लगा'र १२०० ई. रै बीच खास तौर सू

कुसाण अर गुप्त काल री मूरता रो सैं सू सुदर अर अमोल सग्रह है। इण सग्रहालय रो एक बडो कक्ष दो भागां मैं बाट्योडो है। सग्रहालय हजार डेढ़ हजार बरसा रै इतिहास, कला, जन जीवन अर सस्क्रिति रो परतख खुलासो करती दीसै। कुसाण काल रै लोग लुगायां रै आनन्दपूरण जोवन रै अनेक पाखा नै अठै राख्योडा खभा मैं सुदर ढग सू उकेर्योडो है। आ पत्थर खण्डा री खुदाई सू कुसाण काल री सामाजिक, धारमिक अर आरथिक दसा माथै सांतरो प्रकाश पडै। मथुरा रा कारीगरां नाचती, गावती, सिणगार करती अर खेलती महिलावां री अलग-अलग मुद्रावा नै पत्थरां मैं जीवतो जागतो कलापूरण आकार दियो है। बुद्ध भगवान रो अभय मुद्रा री केई मुरता भी घणी आछी है। निरवाण पाणै बाद री एक मूरत मैं भगवान बुद्ध नै घणै स्वस्थ अर ओजस्वी रूप मे दिखायो है, जकै सू कलाकार अन्तस रा सुदरता अर बारै री स्थूल सुदरता रो समन्वय दिखायो है। बुद्ध री घुघराली केश सज्जा री भी एक अनूठी मूरत अठै है। गुप्त काल रा तोरण अर केई श्रेष्ठ कलाक्रितया मैं गिणीजण आली मूरता भी इण सग्रहालय मैं भेळी कर्योडी है।

अठै री केई मूरता खण्डित अर भागोडी भी है। मध्ययुग मैं मथुरा री सम्पन्नता री ख्यात सू ई १०१७ मैं महमूद गजनवी अर ई १५०० मे सिकदर लोदी इण नै लूट्यो अर मिंदरा नै तोड्यो। अै मूरतां धारमिक कट्टरता अर साम्प्रदायिक उन्माद री काणी कैती दीसै। छोटो हुवै थका भी मथुरा रो अजायबघर कला अर प्राचीन मूरता री दीठ सू घणो मूल्यवान है। अठै दो घण्टा तांई निरखण देखण पछै द्वारकाधीश रै मिंदर खातर नीसर्या।

डम्पीअर बाग रै उतराद एक सडक मथुरा रै मुख्य बाजार रै बीचोबीच जावै। जीवणे हाथ सडक रै नेडे ही महादेवजी रो एक पुराणो छोटो मिंदर है। जलेरी अर शिवलिंग सुदर है। कलश सू दूध मिल्यो

जल लिंग रो अभिषेक करतो रैवे। कोई १ फरलांग री दूरी माथै बाजार मैं ई द्वारकाधीशजी रो पुराणो बडो मानीतो मिंदर है। ई रो निरमाण ग्वालियर रा सेठ गोकुलदास ई. १८१४ मैं करायो। दूजा वैष्णव मिंदरा दाई इणरी अर्चना पूजा भी कैई बार हुवै। मंगला, श्रृंगार, भोग, शयन आद खातर केई बार मिंदर रा पट खुल्लै अर बंद हुवै। मिंदर मैं पत्थर री ऊंची चौकी है। बीच मैं पीतल रा छड़ खड़ा कर चौकी रा दो हिस्सा कर दिया है। एकै कानी मिनख अर दूजै कानी महिलावां रै दर्शन री व्यवस्था है। परिक्रमा मैं गणेश, लिछमी, शिव, पारवती आद देवी-देवतावां रा छोटा बड़ा मिंदर है। इण मिंदर री महिमा अर मानता घणी है। साल भर भगतां री भीड अठै लागी रैवे। पण जन्माष्टमी अर होली माथै बडो मेलो लागै। देश रै सैमूळा प्रदेशां सू सरधालू अठै पूगै। इण क्षेत्र री रास-लीला देखण नै लाखू लोग पूगै अर आनन्द उल्लास री लैर मैं डूब भगती रस रो स्वाद लेवै।

दोपारे बाद क्रिसन जलम भूमि रै परसिध मिंदर नै देखण नै गया। एक रस्तो बाजार मारग हू'र दक्षणाद कटरा केशवदेव जावै। दूजो बस स्टैंड सू दक्षण पश्चम मुड़तो जलम भूमी पूगै। जलम भूमी रो मिंदर बस स्टैशन सू कोई २५ कि मी दूर हुसी। औ मथुरा नगर रो हिन्दुआं रो सैं सू बडो पावन धाम गिणीजै। क्रिसन भगवान रो जलम अठै ई हुयो। मिंदर ऊंची चौकी माथै बणयोड़ो है। मूल मिंदर नै आक्रमण कारयां केई बार तोड्यो अर सरधालू इण रो बार-२ जीरणोधार कराता रैया। पैलां महमूद गजनी अर दुजा शासकां इण रो ध्वंश कर्यो। पछै १६६६ मैं औरंगजेब अठै एक मस्जिद बणवा दी जकी पूरब मैं अबै ताई खड़ी है। मिंदर रै दखणाद भाग मैं बडो चौगान है। सामै ऊंचे पगोथियां माथै स्टेज रंगशाला दाई बण्योड़ी है। धार्मिक परवां माथै अठै क्रिसन-लीला आद हुवै। चौगान मैं हजारु लोग बैठ'र आ आयोजनां रो आनन्द उठावै। जीवणे हाथ नै पछम दिशा मैं एक बरामदे मैं केई दूकानां

लागै जठै, परसाद मूरतां, चित्र, मेंहदी, कुकुम आद जिन्सा बिकै। इण दुकाना सूं चोकी आगै चाल'र पूर्व कानी केई मिंदर है। महादेव अर विष्णु भगवान री चोखी मूरता है। मस्जिद रै सारै नीचे गरभ घर मैं क्रिसन जलम भूमी है। ओ मिंदर छोटे सकड़े स्थान मैं बण्यो है। कंवे कै मस्जिद निरमाण रै बखत ओ स्थान बचग्यो। बाद मैं अठै ओ मिंदर बण्यो इण रै एक पासे पैली मंजिल माथै पूरब दिशा मैं ऊपर एक बड़ो सत्संग हाल है, जकै मैं क्रिसन जलम अर बारे जीवन सूं सम्बन्धित चित्राम है। कनै केई छोटा बडा दूजा आकर्षक मिंदरा मैं झाकया बणायोडी हैं। आम आदमी अर छोटा टाबर आनै देखण मैं घणी रुचि लेवैं। बाद मैं सिझ्या बेळा में जमुनाजी रै तट पूग्या। अठै सती बुर्ज नाम रो लाल पत्थर रो चौकोर बुर्ज है, जकै ने १५७० ई. मैं जयपुर रै राजा बिहारी मल रै बेटे बणवायो। बुर्ज चौमंजलो हैं। इण री ऊंचाई ५५ फुट है। घाट माथै सैंकडू छोटा-बड़ा मिंदर है। साधु संत, सिनान करणवाळा सरधालु अर अभ्यागता री भीड मती रैवे। हळकी ठंड हुणे पर भी सध्या सिनान अर ध्यान करता भगत सामोळे मैं 'जय श्री क्रिसन' रै घोष सू दूजा लोगा रो अभिवादन करता रैवे। सैंमूळो वातावरण क्रिसन भगती सूं रंग्योड़ो सो लागै।

आगले दिन व्रन्दावन जाणो हो। मोर मैं ६ बज्यां तांगो करया। व्रन्दावन मथुरा सूं १० कि. मी. है। बसां भी आध-आध घण्टा सूं चालती रैवे पण वै मारग मैं सब जाग्यां भी ठैरे। मथुरा सैर री सीमा खतम हुवे ही बारले पासै नेड़े ही गीता मिंदर आवै। इण मिंदर मैं महाभारत युद्ध अर गीता रै उपदेश सम्बन्धी चित्राम है। भीता माथै गीता रा सलोक भी माड्योड़ा है। क्रिसन, राधाजी, बलराम आद री सोवणी मूरतां है। मिंदर बणगत मैं दिल्ली रै बिड़ला मिंदर सूं घणो मेळ खातो है। मिंदर मैं खुदाई रो भी चोखो काम है।

कोई ४ कि. मी. दूर पगला बाबा रो पांच मंजलो विशाल अर

प्राइयक मिंदर है। फतहपुर सीकरी रै पच महल दाई नीचे रो चौकोर भवन बड़ो है। उण सू छोटो चौकोर भवन पैली मजिल रो अर तर तर छोटो हुगी दूसरी, तीसरी मजिलां। हर मजिल में छोटा बड़ा क्रिसनजी अर दूजा प्राय ई छोटा बड़ा देवी देवतावों रा मिंदर है। पगला बाबा क्रिसन रा अनन्य भक्त सत हा। इण क्षेत्र मैं वांरी शिष्य परम्परा लम्बी चोड़ी ही। भगता रै चदे अर दान दक्षिणा सू ही इण मिंदर रो निरमाण हुयो हो। बाबा रै जीवते थकां अठै गरीबां अर बेसहारा लोगां वास्ते लगर सदा चालतो रैतो। सरधालु लोगां नैं बाबा आपरे हाथ सू परसाद भी देवतां, जकै नैं लोग अहोभाग्य सू ग्रहण करता।

ब्रन्दावन रो रस्तो हरियाळो है। जाग्यां-जाग्यां आश्रम अर गोशालावां रस्ते मैं आवै। ब्रन्दावन कस्बो नेडे आता ही अनेक मिंदरां रा शिखर दीसण लागै। ब्रन्दावन री बसावट इसी है कै इण रै तीन कानी जमुना बैवे। आजकल जमुना रो पाट घाटां सू अळगो भी सिरक्यो है। ब्रन्दावन मैं चार हजार सू बेसी मिंदर बतावै। छोटा मोटा मिंदर तो घर-घर मैं है।

आज जका मिंदर मोजूद है वै घणकारा मध्यकाल मैं बणरोड़ा है। मुगल बादशावां मैं अकबर अर जाहगीर उदार अर सहिष्णु हा। उण रे जमाने मैं फेर पूठो सांस्क्रितिक अर धारमिक जागरण हुयो। कला साहित्य अर स्थापत्य आद री रचनावां मळै सरू हुई। चैतन्य महाप्रभु, वल्लभाचार्य महाराज, निम्बार्क स्वामी अर मध्वाचार्य जिसी विभूतियां री प्रेरणा सू भगती री धारा जोरां सू उत्तर भारत मैं बैवण लागी। आचार्यां दाई भक्त कवियां अर संतां भी आपरी बाणी सू हरजस अर वदना रा अलौकिक पद गावणा चालू किया। सूरदास, नददास, हितहरिवंश हरिदास आद महाकवियां ब्रज क्षेत्र में आपरी रचना घणी बणाई। इणी काल मैं ब्रन्दावन रा गोविंद देव, मदन मोहन, गोपीनाथ अर जुगलकिशोर

बाद भव्य मिंदरा रो निरमाण हुयो। मुगला रैं बाद ई १७१८ सू ई. १७६७ ताई मथुरा माथै भरतपुर रैं जाट राजावां रो अधिकार रैयो। इण बखत भी मथुरा मैं समृद्धि अर विकास आयो। स्वतंत्रता पछै तो मथुरा री गरिमा रा दिन बाहुड्या है। जातर्‌या अर पर्यटका री बढत रैं साथै साथै नित नुवा देवस्थाना री बढोतरी भी हूती जा रई है।

सबसू पैला गोविंददेवजी रैं परसिध मिंदर नैं देखण नै जावड्या। मथुरा रैं सैमूळा मिंदरा मैं गोविंददेवजी रो मिंदर सै सू अधिक परभावित करण आळो है। औ दुमजलो मिंदर भव्य अर विशाल है। युनानी शैली रैं काटे (क्रास) दाई बण्योडो है। इण री ऊंचाई १०० फुट है अर दीवारा १० फुट री मोटी है। निचले तल्ले माथै मुस्लिम स्थापत्य रो परभाव है पण ऊपरली मंजिल पूरण रूप सू हिन्दू भवन निरमाण शैली री है। जयपुर रैं राजा मानसिंह इण नैं १५९० ई. मैं बणवायो। इतिहास कार फरगूसन इणनैं उत्तरी भारत मैं बण्या हिन्दू भवना मैं सैं सू सुंदर कैयो है। पण आज इण रैं रख राखव री खास व्यवस्था नी है। बादरा री घणी सख्या मैं मौजूदगी अर शहद माख्या रा जाळा रैं कारण मलीनता अर चोकट रैवे।

गोविंददेव रैं मिंदर रैं दूजैं पासे दखण भारत री द्रविड शैली मैं बण्यो रगनाथजी रो आधुनिक मिंदर है। दखण शैली रैं मिंदर मैं चारू दिशावा में गोपुरम हुवै। गोपुरम माथै सैंकडू देवी-देवतावा री मूरता माड्योडी हुवै। दखण रैं देवतावा में वेणु गोपाल (क्रिसन) सुब्रमानियम (कारतीकेय) अइयप्पा (विष्णु) नटराज (शिव) आद परमुख हुवै। इण मिंदरा मैं अष्ट धात रो एक विशाल खम्भो मिंदर रैं प्रागण मैं रोपोडो रैवे। जकै पर ऊंची लम्बी धुजा पून मैं फैराती दूर सू दीसती रैवे। द्रविड मिंदरा री बारली भीत खासी ऊंची अर परकोटे दाई हुवै। बारली परिक्रमा चोकोर बडे मारग मैं हुवै। निज मिंदर रैं

अरावली रो सीस अर शिखा

इतिहास, कला, सस्क्रिति अर क्षेत्र री दीठ सू संमूळै देस मे राजस्थान सूं सुरगो अर बिविधतावा आळो दूजो कोई एकल राज्य नी है। अठै महाराणा प्रताप, राणा सागा, कुम्भा अर बप्पा रावल जिसा रणबाकुरा सूरवीर हुया है तो पन्ना धाय अर भामाशाह जिसा राष्ट्र खातर सै कुछ बलिदान अर अरपण करण वाळा धीर अर दानी लोग भी अठेई हुया है। रणथम्भोर, चितोड अर कुम्भलगढ जिसा विशाल, सुद्रड सैकडू किला अठै रै आन अर स्वाभिमान री कीरती बखाणे तो देलवाडा, रणकपुर, नाकोडा, एकलिंग जी रा कलापूरण मिंदर अर आमेर, उदयपुर अर जोधपुर रा महल अठै रे स्थापत्य री श्रेष्ठता थरपता दीसै। कपिल मुन्नी, रामदेव, जाभेश्वर, गोगा, पाबू रै उपदेशा री आध्यात्मिक अनुगूज पग-पग पाधै अठै सूणीजै तो गणगोर, तीज, राखी आद त्योंहार परव इण रै सामाजिक जीवन नै रगीनो, ताजगी अर खुशहाली सूं भर देवे। इण री धरती विशाल मरू भूमी रो खेतर है। जय समद, राय समद, उदय सागर अर फतह सागर जिसी बडी झीला, बनास अर चबल जिसी नदिया, गगानगर अर कोटा-बारा जिसा उपजाऊ खेतर अर अलवर सूं लगा'र आबू ताई पसर्योडी अरावळी री अटूट पाडी श्रखलावां भी अठेई

है। इती विविधतावा नै राजस्थान सू बाघती ए विशेषतावां इण प्रदेश नै एक मामै मैं छोटे भारत रो साचो प्रतिनिधि रूप देवै ।

राजस्थान मैं कसमीर अर हिमाचल दाईं बरफ सू ढक्या ऊंचा पाडा अर उणा जिसी प्राक्रितिक सीमा तो शायद नी देखण नै मिलै पण मरु भूमी नाम सू बजण आळै इण प्रदेश मे आबू सरीखी घनी वनस्पति, झीला, झरणा, विश्व ख्यात रा मिंदरा अर शांत वातावरण आळै ठामा नै देख र घणो आनन्द हुवै । १५ अक्टू. १९८१ नै साध्या सागै इण पाडी नगरी रै भ्रमण रो कायक्रम बणायो ।

बीकानेर सू ठेठ अमदाबाद ताईं सीधी एक्समेस गाडी जावै है। इण मैं आबू ताईं आरक्षण री व्यवस्था होगी ही। नइ तो जोधपुर सू दूजी गाडी बदळ' जाणे मे दिक्कत हु ती । सीधी गाडी सू लम्बी मुसाफिरी आळा यात्री अदळा-बदळी री परेशानी सू बच जावै। गाडी सिंझ्या ८.३० बज्यां बीकानेर सू रवाना हुई । देशनोक नागौर, मेडता हूती रेल मोर मैं ५ बज्या जोधपुर पूगगी । अठै सू आगै मारवाड अर अहमदाबाद रा और डब्बा जुडै । ८ बज्यां रेल जोधपुर सू रवाना हुई । आध घण्टे मैं लूणी ज आग्यो । अठै छोणे अर दूध री मिठाया सस्ती मिलै, पण चीनी री मातरा जासती ही हुवै। कोई ११.३० बज्यां मारवाड ज पूगग्या । मारवाड मैं भी गाडी २ घण्टा ठैरी। स्टेशन रै भोजनालय मैं दोपहर रो खाणो खायो। मारवाड स्टेशन माथै पकोडा, रबडी अर दहीबडा बेचता वेंडर घूमता रैवे । दही घर दूध भी अठै आम स्टेशना सू माछो अर वाजब दामा मैं मिलै । मारवाड ज. सू एक लाइन सीधी उदयपुर कानी, दूजी फुलेरा पासी अर एक फालना पाली कानी जावै । स्टेशन रा तीन बडा लम्बा प्लेटफारम है। यार्ड भी बौत लम्बो चौडो है । स्टेशन माथै गाड्या अर मुसाफिरा

री आमादरफत हूती ही रैवे। घण्टे सवा घण्टे खण गाडी फालना पूगी। फालना सू ही जगत विख्यात जैन मिंदर रणकपुर रो रस्तो जावै। रणकपुर रै मिंदर में १४४४ खम्भा है, पण मिंदर रै कोई भी स्थान सू कोई न कोई मूरतो रा दर्शन हुवै। श्रै खम्भा देव विग्रह दर्शन में बाधा न बण सकै। इसी अनूठी कारीगरी भारत रै किणी दूजै मिंदर में नी है। आगे रै मारग में पाली रो कस्बो है। पाली में आजकल कपडे री कई मीलां है। रंगाई, छपाई अर खादी रै वस्त्र निरमाण रा कई कुटीर उद्योग अठै चालै। सिरोही रोड पछै दूर सू पहाड्यां दीसण लाग जावै। करीब २ बज्या पछै म्हे आबू रोड़ पूगग्या।

आबू रोड स्टेशन बारे ही बस अड्डो है। बस रै भाडे मैं ही टैक्सी आळा भी सवार्‌या नै आबू पूगा देवै। बारे निकळता ही टैक्स्या आळा आडा फूमग्या। एक सू बात तै कर'र बैठ्या अर रवाना हुया। आबू रोड सू आबू २६ कि मी है। ४ कि मी बाद ही पाडी रो चढाई सरू हू जावै। रास्तो सरप दाई बळ खातो है। पाड रै सारै-सारै सडक कने, दूजे कानी नीचो घाट आतो जावै। ऊचे सू नीचे घाट कानला निजारा सोवणा लागै। १५ कि मी पूगणै पछै एक चौड़ी जाग्यां माथै चूंगी चौकी आवै। अठै यात्री कर (टोल टैक्स) देणो पणे। हनुमानजी रो एक मिंदर भी अठै है। सडक अर मिंदर रै चारूमेर बादरा रो हजूम मण्ड्‌यो रैवे। चाय री एकाध दूकान अर नमकीन मिठाई, सिगरेट, बीडी बेचण आळा दो चार गाडा अठै पड्या रैवे। आबू सदा सिरोही राज्य रो भाग रैयो। आजादी पछै जद प्रान्ता रो निरमाण हो रयो हो, गुजरात वास्या इण माथै आपरो दावो पेश कर्‌यो पण आजादी पैला सिरोही राज रा दीवान अर स्वतनता सेनानी गोकुल भाई भट्ट राज रै पट्टां रै आधार माथै इण नै सिरोही रो भाग परमाणित कर'र राजस्थान मैं इण सुदर पाड रो हक दिरा दियो। ४५ मिंटा मैं ही परवत रै बस अड्डे पूगग्या।

अर रैंडो मेड कपडां री हाट अर खोखा भी खड्या दीसै । चाट पकोडी अर आइसक्रीम, सौफ्टी रा गाडा माथै सैलानी महिलावा री विशेष भीड मडी रैवे । नक्की सू पैला थोडी चढ़ाई चढ'र जकी सडक माथै पूगा बठै एक कानी बडी फैशनेबल दूकाना में आट पीस अर सजावट आद रो सामान बिकै । दूजै कानी एक भींत री पाळ नैडे सवारी आळा टट्टू अर घोडा ले'र पाडी लोग खड्या रैवे । बाल अर किसोर उमर रा छोरा छोर्यां किराये रा घोडा ले'र नक्की रै सारली सडक माथै सवारी अर झील रा निजारा लेता घुड सवारी रो शौक पूरो करै ।

झील पर पूगण आळी सडक रै दोनू कानी दूकाना अर होटल है । चादी रा आभूषण अठै भात-भात रै डिजाइना मैं मिलै । होजरी रो सामान अर सूटर, जरकिन आद भी खासी बोकै । घणकरी दूकाना गुजराती लोगा री है । दूकाना रा नाम भी गुजराती मैं ही लिख्योडा है। गुजराती लोग वेसी मात्रा मैं व्यापारिक समाज सू सम्बन्धित हुवै । इण कारण बा री क्रय खिमता भी ठीक हुवै । अठै रुपिये मैं बारह आना घणो गुजरातया माथै ही चाले, बाकी चार आना राजस्थान अर दूजा लोगा माथै ।

झील माथै पूरब दिशा मैं एक छोटो पण सोवणो बागीचो है । जाग्या-जाग्या विसराम वास्ते पत्थर री चौक्या बण्योडी है । जीवणै हाथ नक्की झील मैं सैर करवाणे वाळी नावा अर मोटर बोटा खडी रैवे । टिकट घर भी बाग मैं बडता ही बणायोडो है । केई नावां मैं २५/३० लोगा नै आधे घण्टे ताई सामुहिक रूप सू नौका विहार करवणे रा ३ रुपिया प्रति व्यक्ति टिकट है । निजी रूप सू कोई आगे ताई सैर करणे खातर आपरे वास्ते नाव किराये करणो चावै तो २५ रुपिया प्रति घण्टे रा लागे । झील रै लारै पछम दिशा मैं ऊची पाडी माथै 'टाड राक' है । नाम मुजीब इन रो आकार मेंढक दाई है । सिंझा री बेळा बागीचे

मैं रंगबिरंगी रोशण्यां इण री सुंदरता नै घोर बडा देवै। दक्षण कानी झील रै सारली सड़क माथै भी सफेद मरकरी बल्वां री रोशनी मैं घुड़सवार तफरीह करता दीखै। बागीचै मैं एक टेडे भांत-भांत री ड्रैस लिया फोटोग्राफर घूमता रैवै। नुवां ब्यांहतोड़ा जोड़ा अठै कश्मीर अर राजस्थान रै बींद-बिंदणी री पैंशावां पैर'र रोमांटिक अंदाज मैं फोटू खिचवा'र आबू री यादगार नै स्थाई बणावता दीखै। रात्री १०-११ बज्यां तक झील माथै भाखी रौनक रैवै। झील रै मारे बैंचां पर बैठ्या सैलानी खाठा-पींवता का नौका बिहार रा दृश्य देखता रैव। म्हे लोग भी टिकट खरीद'र नौका बिहार रो आणन्द लियो। केवट कन्नै सू पतवार ले'र चलावण मैं भी रोमांच भर आणन्द हुवै। बाद मैं खासी देर ताई बाग मैं भी बैठ्या रैया। १०.३० बज्यां बाद जद ठंड घणी बढगी पाछा गोल्फ भ्रा टूक्या।

आगले दिन भोर में ६ बज्यां रघुनाथ मिंदर रा दरशन वाई पुग्या। मिंदर झील रै दक्षण पख मैं बाग रै ठीक सारैई है। एक बडी पिरोळ रै माय डावै हाथ बडी धरमशाल है। बीच मैं बडो आगण है। सामै भळै एक छोटी पिरोळ मैं सामै रघुनाथजी री मिंदर है। भगवान राम री मोवण मुरती है। निज मिंदर रा किवाड़ चांदी रा है। मिंदर घोळै मकराणे सूं बण्यो है। फरश भर भींता भी धोळे मकराणे री है। आरती रा दरशन किया। जोत भर चरणामत ले'र सेवा ताई आगण मैं बैठ्या ही हा कै एक सूरदास महात्मा रामायण रै भ्रयोध्या काड रा दोहे तनमय हू'र गावणा लागा। खासी देर ताई विभोर हू'र म्हे भी दूजा भगतां साथै बैठा सुणता भर झूमता रैया।

परशिक्षण केन्द्र मैं आ'र चाय नाश्ते बाद गोमुख दरशन खातर ८.३० बज्यां रवाना हुग्या। बस स्टेंड सू नीचै आबू रोड कानी कोई १ फर्लांग चाल्या पछै एक दूजी सड़क जीवर्णं हाथ मुडै। थोडी

दूर ऊपर जाता ही डावें हाथ कानी स्काउटिंग रो दूसरो परशिक्षण केन्द्र आवें। इण रो चौगान भी घौत बडो है। जीवणे ऊंची टेकरी माथे 'गुजरात भवन' बजे जकी पर्वतारोहण परशिक्षण केन्द्र री आकरषक अर बडी इमारत है। अठै गुजरात री नन्दिनो बैन इण केन्द्र री निदेशक है। गोर वरण, पतळी काया, सरल प्रबोध मुख मण्डल माथे हरदम मुळक रैवे। बांरा पति भी दफ्तर रै कामां में उण री मदद करै। नन्दनो बैन दार्जेलिंग रै पर्वतारोहण परशिक्षण केन्द्र' सूं खुद तेनसिंग नोरकी सूं शिक्षा ले'र आया। पछै केई आरोहण अभियानां में वे तेनसिंग रै दल साथै दोरा पाडा पर चढाई भी कीनी ही। बांरे व्यवहार में माता री वत्सलता अर बैन रो नेह छळकतो रैवे। अठै हर साल गुजरात अर राजस्थान ही नहीं महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, पजाब, हरियाणा आद दूर प्रदेशां ताई सू भी छात्र-छात्रावां अर युवक-युवतियां आवता ही रैवे। पर्वतारोहण रा आधुनिक उपकरण, भांत-भांत रा छोटा बडा रस्सा, पिटठू, जूता, हैमर सैक, खूट्या, स्पाइक्स देखता भळै आगे टुर्‌या।

अठै सूं दखण दिशा में मोड खाती सडक कोई १ ५० कि. मी. पछै हनुमान मिंदर पूगे। मिंदर सामैं सडक माथे हैंड पम्प लगायोडो है। जातरी इण रे ठडे जळ सू तिस मिटावै। थोडी ताळ दरसन, विसराम सू थकान भी मिटै। हनुमान मिंदर रे सामैं पुजारीजी एक छोटो पण आछो बगीचो लगा राख्यो है। मिंदर रे सारै ही छोटी गोशाला भी है। आगे रो मारग खेता मांकर नीसरे। दोनू मेर ढळवा पाडी खेत अर घणी हरियावळ है। जीवणे हाथ पाणी रो एक स्रोत भी वैवे जके मे भील बालक सिनान कर रैया हा। हनुमान मिंदर सूं करीब आधा मील दूर दखणाद थोडी चढाई चढ'र एक बडो अर ऊंचो पक्को चबूतरो बणायोडो है, जठै सूं सामे घाटा रो दूर-दूर ताईं रो आछो निजारो दीसै।

कोई २ फर्लांग बाद गोमुख रा पगोथिया सरू हुवे। पाडी पत्थरां रै टुकडा नैं जोड-जोड'र पगोथिया बणाया गया है। जीवणै हाथ पहाड सारै-सारै वैवे, डावे कानी पत्थर चूने री चार फुट ऊंची भीत आड खातर बणायोडी है। भीत रै बारै नीचा खड्ड है। हर २०-२५ पगोथिया बाद दासे रो बडो पगोथियो है, जकै सू थोडी राहत मिले। मो दो सौ पगोथिया उतरणे रै बाद पजे री नसां मैं ताण आवण लागै। सम्भळ'र उतरणो पडै। रस्ते मैं दोन्यू कानी विशाल हर्या रूख है। मारग मैं बदर भी खासी जाग्या मिले। उपर चढता मुसाफिर हाफीजता रैवे। ठंड हूणे पर भी उपर आवणिया रै भोवा भ्रावता दीसै। कुल ७०० नेडे पगोथिया हूसी। आगे चाल'र बडो मैदान सो भ्रावै अठै सू गोमुख माथै बण्या गुबद दीसण लागै। थोडी दूर चाल'र डावै हाथ चार दिवारी रो दरवाजो आवै। माय बडता ही सामै गोमुख रै स्वामीजी रो भ्रासरम है। स्वामीजी सू बातचीत कर्या मालूम हुयो कै भो वशिष्ठ रिषी रो पराचीन स्थान है। अठैरी भ्रगन सू ही राजपूता री धार इतिहास परसिध जात्या री उत्पत्ति हुई है। आसरम रै सारै ही मकराणे री गऊ मुख सू एक झरणे रो पाणी नीचे कुण्ड मैं पडै। इण पावन कुन्ड मैं दूजा जातर्यां दांई म्हे लोग भी सिनान कर्यो। केई देर भ्रठै रैया। १० ३० बज्यां भ्रठै सू पाछा रवाना हुभा। जाते समय भ्राधा घण्टा सू भी कम लाग्यो हो पण चढाई मैं करीब घण्टा भर लागग्यो। केई जाग्यां बीच मैं बैठ'र सुस्ताणो भी पड्यो। बारह रे नेहै ठिकाणै पूग्या।

सिझा सू पैलां ही ढळते सूरज रो देखण नैं 'सन सैट पाइंट' बजे जिके ठाम तांई चाल्या। मुख्य बाजार रैं चौरावे सू दखण मैं एक सडक पांइट ताई जावै। भ्राबू रा अणपढ़ भील इण जाग्यां नै भ्रंग्रेजी रै उच्चारण री खिमता रै अभाव मैं 'सैंसठ पैंसठ' कैवे। दोना सबदा मैं खासो ध्वनि समानता है। भो नुवो उच्चारण सुण'र घणी हँसी आवै।

बस स्टैंड सूं पाइट ३ कि. मी. नैड़ो हुस्सी । चढ़ाई जठै सूं सरू हुवै ठीक बठै ही बीकानेर मैं कई बरसां ताई सिटी मजिस्ट्रेट रैयोड़ा पी. सी. सिघवी साहब आपरी जीब रै कनै बारै ऊभा मिलग्या । मेरे सूं अर सोलकी जी सू वै आछा परिचित हा । रामा-सामा अर बातचीत बाद बा आग्रह पूर्वक आपरे ड्राइवर नै म्हां लोगा ने ऊपर छोड़'र आणे रो कँयो । बा रै उदार शिष्ट व्यवहार सू हरख हुयो । पाच सात मिटा मैं ही ऊपर पूगग्या । पाच बज्या बाद सूं ही पाइट रे पहाड़ां माथै आ'र लोग बैठण लाग जावै । म्हे भी एक ऊंची टेकरी माथै जा बैठ्या ।

थोड़ी ताळ मैं ही आसै पासै रा सै ठाम उत्सुक दरशका सूं भरग्या । इण ऊंचा पाडा रै सामै केई मीलां ताई घाट है । सूरज जद पछमाद हू'र दूर नीचे आं घाटां मैं उतरे तो सामै ठेठ ताई ललाई पसर जावै । लागै धरती रै अनुराग मैं आकाश रे सोवणो मुखडे माथै प्रेम रो लाल रग उमड पड्यो है । इण सास्वत युगल प्रेमी नैं सिझा री शात खामोश बेळा मैं एकला मिलण देण वास्ते सूरज भी धीरे-धीरे क्षितज कानी सिरकण लाग्यो । पैला सूरज रो एक अश लुप्त होतो दीख्यो । दरशका मैं हळचळ हूण लागी । बो देखो, बो देखो रा स्वर फूट्या । अरे ! देखो आधो सूरज ढळगो । अब तो चिन सो'क रैग्यो । अर धप्प केई ठोस गोळ लाल दडी दाई भूरज अंकाअेक आकाश सरोवर मैं डूबग्यो । अठीनै ललाई माथै रात रो हलको साँवरो आवरण सिरकण लाग्यो तो उठीनै ऊंधेरो पडणने सू पैला आपणे पडाव ढूकणे री भागमभाग सरू होगी । थोडी ताळ मैं ही ठाम जन शून्य होतो लाग्यो । दो चार हजार मिनखा रो औ कौतुक मेळो इण तरा ही रोज अठै मडे अर बिखरै । कुदरत रा नित नुवा अर पगपग बदळता रूपां रो विलक्षण अनुभव पाडा माथै विशेष रूप सूं हुवै ।

१८ अक्टूबर ने दिनुगे ७ बज्या तैयार हू'र केन्द्र रै दक्खणी

दरवाजे सू मोड़ खाती पाडी सड़क रै मारग सूं उत्तर पूरब दिशा कानी चालता मुख्य आबू सड़क माथै पूग्या। सैनिक परेड मैदान अर बाजार हुता नक्की पूग्या। झील नैं बगल मे छोड़तां उणरै सारै सारै दक्षण दिशा मैं जावती सड़क सू आगै बढया। थोड़ी दूर माथै ही 'महरिषी दयानन्द गारडन' पड़ै। बगीचो, फुला, क्यार्‌या, झाडा अर ऊंचा बिरखा सूं सज्यो सवरो रूपाळो है। बीच मैं एक बडो फवारो अठै निरमल जल रा मोती उछाळतो सो दीख रयो हो। पण नेड़े जाणे सूं पतो लग्यो कै पाइप री मेन लाइन मैं बडो तीणो हू जाणै सूं पाणी फव्वारे दाई उछल रयो है।

आगे सड़क पूरब दिशा मैं मुड़ै। सामै सड़क रै दोनू कानी 'प्रजा पिता ब्रह्म कुमारी ईश्वरीय महाविद्यालय रै मुख्यालय रा भवन दीसै। डावैं हाथ कानी तो इण सस्था रो ऊंचे प्लेटफारम माथै कोई २०/२५ सीढ्या चढ'र बडो विशाल सम्मेलन हाल है। हाल रै आगै मध्य विशाल बरामदो है, जकै मैं देवी-देवतावा रा चित्राम है। लारे दो अढाई हजार लोगा रै बैठने री खिमता री कुर्‌स्या लाग्योडी है। बरामदे री लारली भींत सूं जुड्यो हाल रो विशाल स्टेज है। इण स्टेज पर भी ३०० आदमी आराम सूं बैठ सकै। हाल री खासियत आ है कै इण रै बीच कोई खम्भो नी है। म्हारी जाणकारी मैं तो इसो बडो हाल ओर नी है। सड़क रै जीवणे पासे सस्था रो कार्यालय भवन, प्रदरसनी कक्ष अर साधना-ध्यान कक्ष आद है। प्रदरसन कक्ष मैं धरम आध्यात्म रै सिधांतां रा लेख अर अनेक प्रकार रा चितराम, नक्शा, चार्ट आद है। लेखराज नाम रै भजन कीरतन करने आळे एक उपदेशक २५-३० बरस पैला इण सस्था री थरपणा कर ही। आज अनेक देशा मैं इण री साखावा है। देश मैं भी सैंकडू ज्याग्या इण रा केंद्र है।

कनै डावैं कानी ऊंची पाडी माथै शकर मठ है। एक फरलाग

गवार बतायण आळां रा पोत उपड जावै अर अठै रै कलाकारां री करम निष्ठा, कुसलता अर वैग्यानिकता रा ऊडा आपो आप परपता जावै ।

आदिनाथ मिंदर रै बारै विमलशाह री हाथीसाळ है । इण मैं पत्थरा रा बडा–बडा विशाल हाथी है । आकार प्रकार अर अगां रै अनुपात मैं सुदरता अर निरदोसता है । पछम भाग मैं की उपर श्री नेमीनाथजी रो मिंदर है । औ भी कारीगरी री दीठ सू विलक्षण है । इण रो निरमाण ई १२३१ मैं वस्तुपाल अर तेजपाल दो भायां १२,५३,००,००० रुपिया खरच कर'र करवायो । आज री वेळा इण राशि रो सही मुद्रा मुल्य आक सकणो भी काई सम्भव है ? आपरे ईष्ट रै प्रति एकनिष्ठ समरपण भाव अर अकूत धीरता सू ई औ अपूरब अमूल्य निरमाण हू सकै । जीवणे पासे की ऊचाई पर रिखवदेवजी रो मिंदर है । इण मैं १०८ मण पीतल री भगवान री मूरती है । धातु नै ढाळणे खातर कित्ती आच आळै भट्टे अर किसे निरदोष सांचे सू इसी मूरती घडीजी इण री कल्पना करणी भी दोरी है । राजस्थान ही नहीं समपूरण भारत रै मिंदरां मैं इण रो सै सू उच्चो स्थान है । औ मिंदर समूह राष्ट्र रा गौरव है ।

आगले दिनुगे ७ बज्या पैदल सडक मारग सू अचलगढ रवाना हुया । ३ कि. मी. बाद ओरिया गाव आयो । अठै बडे आकार री बालम ककडी ले'र खाई । थोडी ताळ रुक'र आगै चाल्या । सडक पाडी मारग कारण मुडती घिरती रैवे । रस्ते मैं खेत खासी जाग्या मिलै । रहट आळा कुआ अोजू भी अठै चाले । रहट री माळा लो रे डबळिया री भी है अर माटी रै कुलडिया री भी मिलै । इण गाव मैं करीब सौ घरां री बस्ती है । आबादी मैं घणखरा रजपूत अर मिरासिया ही है । पंशे री दीठ सू सै खेतीहर, बाळदिया का लक्कड़हारा है । अठै गेहू, ज्वार, साठी

(चावळ) अर कावीज री खेती नीपजै। गाव रै सारै सूं एक मारग डावै हाथ कानी गुरु शिखर जावै, दूजो जीवणे हाथ री सडक सूं अचलगढ जावै।

अचलगढ ताईं रो मारग चढ़ाई आळो कोनी। अचलगढ सूं कोई दो कि मी पैळा नाना मोटा आसरम अर मिंदर आवण लागे। १ कि मी. बाद तो अचलगढ री पाडी दीसण लागे। अचलगढ छोटी सी बस्ती है, पूरब अर दक्खण मैं पाडा सू घिरयोडी। सामै बस स्टॅण्ड रो खुलो वडो मैदान। इण मैदान मैं हो खोखा मैं दूकाना अर चाय–पाणी रा होटल है। एक छेडे एक बडो तालाब अर बी मैं चार पाडा री मूरतां हैं। कँवे श्रै कदैई राकस हा। अचलेश्वर जी बानै जड बणा'र बारे उतपात सू लोगा नै छुटकारो दरायो। अचलेश्वर रै प्राचीन मिंदर मे विष्णु री मूरती री आख मैं इसो नग है जकै मैं शिव री प्रतिमा दीसै। अठै नीचे एक जैन मिंदर है अर दखण कानी पाडी मैं ऊंचे एक और प्राचीन गुफा मिंदर है।

दोपहर २ बज्या बाद जवाई गाव रै सारै कर गुरुशिखर कानी चाल्या। आगे रो ढाई मील रो रस्तो चढाई आळो है। गाव सूं थोडी दूर आगै सडक सू अलायदी पगडडी भी बँवे।। पण पैदल मारग मैं चढाई घणी है। ज्यू–ज्यू शिखर कानी बढा उत्तर कानी ऊंची थाडी माथै मिलीटरी रो रैडार नैडो आंतो लागै। शिखर सू पैलां एक चौडी पाडो चट्टान माथै एक टीन रै छप्पर आलो खुल्लो चाय-पाणी रो बडो होटल है। थकयोडा हूणे कारण सै जातरी अठै चाय पाणी रै सारै थाक उतारे अर ताजा हू'र भळै १ फर्लांग रीं खडी चढ़ाई चढ'र राजस्थान री अरावली श्रखला री सैं सूं ऊंची चोटी गुरुशिखर नावडे। गुरुशिखर भगवान दत्तात्रेय री अराधना थली बजै। शिखर ऊपर दत्तात्रेय रो मिंदर है सारै ही दूजै देवालय दाई बण्योडे ठाम मैं बां रा पगलिया मांड्योडा है। अठै अहमदाबाद रै केई सेठ रो लगायोड़ो एक विशाल

घटो १६२१ मैं परप्योडो है। जकं री धुन ख़ासी नीचे तांई सुणीजं। कंवे के इण शिखर सू भी ढळते सूरज रो द्रश्य बडो आछो लागै। ५५५६ फुट ऊंचे इण शिखर सूं अचलगढ अर आबू तांई री बसतयां भी धुंधली धुंधली निजार आवै। अंधेरो होणे सूं थोडी पैला ही नीचे बस स्टैंड पर आग्या। आती वेळा बस सू कोई पूण घण्टे मैं आबू पूगग्या।

इण भांत आबू प्रक्रिति प्रेमी सैलाणियां, कला पारखी विद्वाना, धारमिक अर आस्थावान संता, भगतां अर देस दरसन रा शौकीन घुमक्कडा आद सैं भांत रे लोगां री आत्मा नैं एकै सारी आणन्द अर सुख री अनुभूति कराणे आळी अनूठी जागा है। राजस्थान री विशाल मरुभूमी मैं इत्ती घणी वनस्पती री मौजूदगी आबू नैं हिमालय सू कम दरजो नी देवै। शायद इण कारण सू ही आबू नै साच ही हिमालय रो बेटो कंवे।

●

पत्थरां में फुटरापो–जैसलमेर

राजस्थान रे माड़ प्रदेश रे प्राकृतिक, सांस्कृतिक अर कलात्मक वैभव रे शुद्ध रूप रो सांचो प्रतिनिधि जैसलमेर नै कैयो जा सकै। आधुनिकता री प्रतीक मशीनी सभ्यता रो अणूतो परभाव श्रोजूं ताईं इण रै जीवन मांयं हावी नी हो सक्यो है। श्रो खेतर इतिहास री दीठ सूं उल्लेख जोग तो है ही, साहित्य अर कला रो भी अनूठो संगम है। अठै रा मीलां तांई पसर्योड़ा डीगा धोळा–धोळा धोरा, कोरणी री नायाब कला सूं कोर्‌या मिंदर, देवळा, छतर्‌यां अर हवेल्यां, भोज पत्रां मांयं हाथ सूं लिख्योड़ी अणगिणत पोथ्यां, हजारूं बरसां तांई धरती री कोख में समाया बिरखां रा पत्थर बण्या अवशेष, सै कांई आखे संसार रै सैलाण्यां अर जातर्‌यां नै नूतो देंवता सा लागै। अठै रो समूळो वातावरण, खास करके सुश्क रेतीळो विस्तार, राजस्थान री वनस्पती, मोठ बाजरो रो भोजन, पागड़ी–धोती अंगरखी रो पैरावो, तीज, त्यौहार अर लोक कलावां आज भी बिदेशी परमाव री मिलावट सूं अछूंती आपरे शुद्ध अर मूळ रूप मैं मौजूद है। इस्सी अणेक खूब्यां सूं भरी इण नगरी नै देखणे री घणी तलब आसे बखत सूं ही। सन् १९७९ री २४ मई नै छः साथ्यां साथे इण रै भ्रमण रो आयोजन कर्‌यो।

जोप सू प्रातः सात बज्यां कोलायत, माप मारग सू जेसलमेर खातर रवाना हुआ। बीकानेर-जैसलमेर सड़क उत्तर पछमाद भारत रो सामरिक महत्त्व रो राज मारग है। बीकानेर सू १३ कि मी री दूरी माथै नाळ नाम री जाग्यां मैं सडक सू जीवणे पासे सेना रो हवाई अड्डो है। बस्ती डावै पासे है। पाणी री एक छोटी तळाई सडक रै नेडे ई है। इण खेतर मैं जिनवारां रै वास्ते ई नहीं, मिनखां खातर भी प्राक्रतिक तळावों रो घणो महत्त्व है। धरती घणखरी कांकड प्राळी है, इण मायर खेत कम ई देखण मैं प्रावै। हा! बाळद्यां रा भेड, बकरड्या रा ऐवड थोड़ी-थोडी दूर पर दीसता ई रैवे। नाल सू १० कि. मी आगे गजनेर गाव आवै जठै रा महलात अर प्राक्रतिक झील देखण जोग है।

गाव रै पछमाद छेडे आछी बडी सोवणी कुदरती झील है। मीला लम्बो ढळवो ग्राघोर हूणे सू बिरखा रै दिना मे दूर-दूर सू बेह'र पाणी अठै भेळो हू जावै। तीन पासै बडा-बडा बिरख झील री सोभा बढावै। सरदी री रुत मैं इण झील मैं बसेरो करण ताईं साइबेरिया सू हर साल सैंकड़ 'बटबड़' नाम रा पछी उड'र अठै पूगै अर नवम्बर सू मार्च ताईं अठैई रैवे। झील रै आसे पासे आरण है जकै में काळा हिरण, जगली सूग्रर, सियार आद रैवे। अठारवी सदी मैं बीकानेर रै राजा गजसिंह रै नाम पर गाव अर झील रो नाम गजनेर पड्यो। गजसिंह ही सै सू पैलां अठै शाही महलां रो निरमाण करायो। महल झील रै दखणाद बण्योडा है।

स्थापत्य कला री दीठ सू आ री बणगत बौत सुदर है। इण में दुलमेरा रे लाल पत्थर रो इस्तेमाल हुयो है। जुई-पुराणी सैली मैं बण्या सरदार निवास, टैनिस कोर्ट रो बरासदो, शबनम महल, डूगर निवास देखण जोग है। महलात रै लारले कानी जेठा मुट्टा रो मकबरो

है, बठै गरम्या मैं मेळो मरै। हिन्दू राजावां रै महलां रे मांय मुसलमानां री मजार अर बठै सर्वजनिक मेळां रो आयोजन, साम्प्रदायिक सद्भाव अर राजावां री सदाशयता रो परिचय देवै। बतावै कै अंग्रेजा रै बखत कई वाइसराय इण झील रै सैरगाह मैं आणद लेणे ताई अठै आ'र इण महला मैं ठैर्‌या हा। मरु भूम मैं इत्ती घणा हरयावळ आळी सोवणी झील अर चोखो आरण हूणो अपूरब बात ही समझो। बीकानेर राजा रे कार्यालय सू देखण री इजाजत लैणी पडै, जकी आसानी सू मिल जावै। म्हे लोग १ घण्टा तांई झील अर महलात रै निजारा नैं देखण पछै बस्ती मैं पूठा आया। सामान्य चाय नाश्तो ले'र कोलायत तांई रवाना हुया।

गजनेर सू कोलायत २३ कि मी दूर है। आधी घण्टा मैं ई बठै पूग्या। सांख्य शास्त्र रा रचनाकार महर्षि कपिल री निरवाण थळी हूणे रै कारण उत्तर-पच्छमी राजस्थान रै बडे तीरथां मैं इण री गिणती हुवै। इण मांथै भी एक विशाल झील अर अनेक सुंदर मिंदर है। मुख्य मिंदरा मे कपिल मुनी रो मिंदर, गंगाजी रो मिंदर अर राजावां द्वारा निर्मित पच मिंदर मानता अर बणगत री दीठ सू उल्लेख जोग है। स्कद पुराण मैं भी इण तपो भूमि रो वर्णन आवै। अठै सरस्वती नदी बैहती ही, जिण रै किनारे ऋषि मुनियां रा आसरम बण्योडा हा। कपिल रै नाम सू कोलायत, माता देहुति रै नाम सू डेह, च्यवन ऋषि रै नाम सू चादी, दतात्रेय रै नाम सू दियातरा अर जाम रिषि रै नाम सू जागेरी आद सू आज भी इण री प्रामाणिकता खरी ऊतरै।

इण ठाम झील रै तीन पासे सुदर पक्का घाट बण्योडा है। सगळै घाटा पर नीम, पीपल, बड आद रा बडा विशाल छायादार बिरख है। घाटा री सख्या ८० नेडै है। कातिक मास री पूनम नै भारत रै दूजा बडा तीरथा दांई अठै भी बडो मेळो भरीजै, जिण मैं लाखू श्रद्धालु

साधु-सत आद भेळा हुवै । ग्राडै दिना मैं भी सन्यासी, तपस्वी अठै रैवे । ग्रो धाम राजस्थान रैं अलावा हरियाणा, पजाब ताई भी मानीजै । लोक देव रैं रूप मैं इण री पूजा रो विधान है । इण क्षेत्र मैं आ भी मानता है कै बद्री–केदार या रामेसर आद री जातरा रैं पछै जे कोलायत सिनान नई करीजै तो बा जातरा सफल नी हुवै । लोक देव या खेतर पाळ री महत्ता रो ग्रो दोहो भी अठै मसहूर है—'ग्राधा देवी–देवता ग्राधा खेतर पाळ ।' सरोवर रैं नेडै मोरां री ग्राछी सख्या विचरण करती दीसै । सरोवर रो वातावरण शात अर एकाग्रता बढाणे ग्राळो लागे अर मन नै अठै आत्मिक सुख अर सतोष रो ग्रनुभव हुवै । इण मैं तो कोई विवाद नी है कै आध्यात्मिक भाव ग्रर सस्क्रति रै समन्वय ग्रर मेल भाव रे नजरिये सू इसा ठामा री गैरी भूमिका रैई है । इण जागा २ घण्टा सिनान दर्शन आद रैं बाद दोपहर रो भोजन बाजार मैं कर्‌यो । बाजार छोटो सो है, कोई ४०–५० दुकाना हुसी । पशु चिकित्सालय, लडक्यां रो माध्यमिक स्कूल, लडका खातर उच्च माध्यमिक स्कूल अर तहसील कर्यालय भी अठै है । छोटी बडी ३०–४० धरमशालावा भी है, जकी मेले री बखत जातर्‌या रैं आवास री व्यवस्था करै । कुम्हारा ग्रर विश्वकर्मा री धरमशालावा मैं लक्ष्मीनाथजी री सुदर मूरत्यां है, जकी ग्रत्यन्त कलात्मक अर देखण जोग है । थोडी देर बाद मार्थं विसराम कर'र १ बज्या रूणिचा वास्ते रवाना हुया ।

कोलायत सू दियातरा हुता ढाई बज्या नेडै जोधपुर जिले रे बाप कस्बे पूग्या । अठै तीस हजार री बस्ती है । उच्च माध्यमिक विद्यालय, जिनावर री अस्पताल, पोस्ट आफिस, बैंक, अनाज मडी अर केई खादी सस्थावां है । कस्बे में चाय पीवण खातर थोडी ताळ रुक'र शेखासर अर बुद्धै री तळाई माकर हुता सिझ्या ५ बज्या रामदेवरा पूगग्या । बीकानेर रैं मोद्‌यां री धरमशाळ मैं पडाव कर्‌यो । जाता पाण ई सामान रा'खर रामदेवजी रैं मिदर रा दर्शन करणे गया । मिदर रो

आहतो खासो बडो है, जको चौभींते सू घिर्योडो है। पैला विशाल दरवाजो है। सामैं रामदेवजी री समाध है। निज मिंदर मे रामदेवजी री मूरती है। आसे-पासे केई दूजा मिंदर है, जकां मे रामदेवजो रैं शिष्या अर बीजा सता री मूरता है। इण सैंमूळे उत्तर-पच्छमाद रे खेतर में रामदेवजी री घणी मानता है। रामदेव विष्णु रा अवतार मानीजैं अर मानखे रैं उद्धारकर्ता दाई गिणीजै। लोक देव रैं रूप मैं इण भाग रैं घर-घर मैं रामदेव री पूजा अराधना करीजै। भादवे माह री दसम नैं रुणिचै मैं बौत बडो मेळो लागे। राजस्थान ई नई मध्य प्रदेश, गुजरात अर महाराष्ट्र सू भी सरधालु अठै ढूकै अर 'रूणिचे रे धणिया' रा हरजस गाता, अरदास करता आपरी सरधा रा पुसप इणा नैं अरपित करैं।

राजस्थान वीर भूमि तो है हो, सता अर सिद्धां री भी भूम है। कपिल, जाम्भोजी, गोगाजी, पाबूजी, जसनाथजी अर रामदेवजी जिस्सा न जाणे कित्ता सिद्ध पुरुष अर लोक देव जन कल्याण हित अठै जिलम लियो। धरम रक्षक रामदेवजी रो अवतार वि स. १४०९ मैं चैत मास री शुक्ल पख री पाचम नैं हुयो। इणा रा पिता अजमल अर माता मैंणादे हा। कैवत है कै बचपण मैं ई रामदेव भैरव नाम रैं राखस रो सहार कर लोगा रैं कष्टा रो निवारण कर्यो हो। रामदेवजी मानवतावादी अर प्रगतिशील विचारां रा सत हा। वां जात-पात रैं भेदा रो अत कर अछूता रैं उद्धार रो भागीरथ प्रयास कर्यो। सच्चा समाज सुधारक अर सहिष्णुता रा प्रतीक हूणे कारण मारवाड गुजरात आद अनेक प्राता रा हिन्दू-मुसलमान आ री पूजा करैं। 'राम सा पीर' रो नाम भी इण सच्चाई नैं उजागर करैं। आ रैं चमत्कारां री भी अनेक कथावां परसिध है। लोगा रो आजू भी दृढ़ विश्वास है कै रूणिचे री बोलवा सू निरधना नैं धन, निपूतां नैं पूत, आंधां नैं आंख्यां अर पागळां नैं पग परापत हुवैं। रामदेवजी जिस्सा

सता रो ई परभाव है कै राजस्थान साम्प्रदायिक द्वेष सू परयां अर अछूतो है। आजादी सू पैला अर बाद मैं भी अठै धार्मिक सद्भाव अर आपसी प्रेम रो चोखो माहौल मौजूद है। रामदेवजी रो निवास भी स्मारक रै रूप मैं अोजू मौजूद है, पण बणगत इसी पुराणी नी लागै। सम्भव है बां रै परिवार रै लोगा बाद मैं इण रो उण जाग्या ही पुनर्निमाण करायो हुवै। बस्ती म एक छोटो तालाब अर बावडी भी है। मेले मैं आस्तिक भगत इण मैं सिनान कर मिंदर दर्शन वास्ते जावै।

दूजै दिन २५ मई नै ८ बज्या जैसलमेर ताईं रवाना हुया। करीब ९ ३० बज्या पोकरण पूग्या। पोकरण खासो बडो कस्बो है। दुकाना आधुनिक सज्जा री है, मकान पत्थर रा बण्या है। अठै री भाषा मार्थ सिंध रो खासो असर है। इलाको रेतीळो है। मिनखां रो पहरावे धोती कुरतो अर पागडी। मुसलमान लुगायां लहगो कुर्ती पैरे। चूनडी कसुमल का गैरे कथई रग री हुवै। घाघरो चोळी रो प्रचलन भी है। चांदी रा गहणां री बणगत सिंध सू मेळ खाती हुवै। १९६७ मैं अणु विस्फोट पछै पोकरण नै आखो जगत जाणण लागग्यो है।

पोकरण सू जयसलमेर ७० मील दूर है। सडक वाहना सू ढाई-तीन घण्टा रो रास्तो है। सडक रै दोन्यू मेर बाळू अर कठेई कठेई काकड दीसै। भेडा अर गाया री इण खेतर मैं बोळायत है। जाग्या-जाग्या ऊंटा रा टोळा निजर आवै। रोहिडो, फोग, गूंदी, कुमट अर थाक रा रुख रेगिस्तानी वनस्पती रा परमुख स्वरूप है। चाचा, लाठी, चाधन अर वासनपीर री बसत्यां माकर जीप जयसलमेर रै कनै पूगगी। जयसलमेर रे आसे-पासे कांकड री भूम ई वेसी है। कठे कठेई चट्टाना भी है। ई खातर इण खेतर ने 'मगरो' कैवे। बोट्या, खेजडा, जाळ अर कैर रा भाड अठै घणा है। भेड, बकर्‌या रा एवड, लाल पत्थर रा मकान अर ढीगा साठा लोग अठै री विशेषता है। १२ बज्या रै

करीब भाटी राजपूता री शौर्य भूम अर महेन्द्र मूमल रै अमर प्रेम री क्रीडा थळी जैसलमेर पूगग्या। स्टेशन सामै धर्मशाला मैं ठैर्‌या। आ किले री तलोटी मैं बण्योडो है। उण बखत इण रा आधा कमरा बण चुक्या हा अर दूजे पासे रा आधा निर्माणाधीन हा। किले मैं पूगण ताई भाटां री आडी टेढी सडक है, जकी चार दरवाजां नै पार कर किले रै चौक ताई पूगै। सामान आद मेल थोडी देर विसराम कर्‌यो। धरमशाला रै बारे दोपहर रो भोजन कर पूठा आ'र आराम करणे उपरात दोपहर बाद नगर भ्रमण रो कार्यक्रम राख्यो।

तीन बज्या किले खातर रवाना हुया। जैसलमेर रो किलो एक छोटी डूगरी माथै बण्योडो है। सोनलिया पत्थरां रो भव्य, विशाल अर मजबूत किलो कारीगरी री दीठ सू बेमिसाल अर मोवणो है। दूर सू ई देखण आळा इण सू मोहित हुवै। समुद्र सू इण री ऊँचाई ९६६ फुट है। किले रो परकोटो ऊँची भीता आळो है। बिच–बिच मैं गोळ बुर्जा रो स्थापत्य देखण जोग है। शुरक्षा री दीठ सू ओ किलो चितौड अर रणथमोर मुजीब है। शहर किले रै माय बस्योडो है। अखय पिरोळ, सूरज पिरोळ, गणेश पिरोळ अर हवा पिरोळ अै चार दरवाजा पार कर किले मे पूग्या। सैर चोखो बडो है, पण घणा सा निवासी व्यापार धधे खातर बारे रैवे। इण कारण नगरी री आबादी कम है अर सैर युनान देश री केई फूटरी प्राचीन पण सूनी शाप दियोडी नगरी दाई लागै। पाणी रो अभाव, खेती रा सुभीता की कमी अर सामती रजवाडा रै अत्याचार रै कारण अठै रे वासिदां नै आपरी जलम भूम छोड'र परदेशां बसणो पड्यो। पालीवाल ब्राह्मणां रा किराडू समेत सैंमूळा गाव इण तथ रा परतख परमाण है। केई जुगां ताई जोधावां री फसल उगाणो अर काटणे आळे जैसलमेर नै आज समय रे विसम परभाव री अनबूझ छाया सू मण्ड्यो ही पायो जावै। पुराणे जमाने मे सिध, अफगान देश अर अरब देशां सूं व्योपार अर यात्रावा

रो मुख्य मारग हूणे सूं जैसलमेर ऐतिहासिक अर औद्योगिक महत्व रो नगर हो। कर्नल टाड राजस्थान रैं इतिहास मे इण रे सामरिक महत्व नैं खुद मान्यो है। मुसलमानी आक्रमण रैं दबाव नैं भी अठैं भाटी राजपूत सदियां ताई झेलता रैया हा। बर्तमान नगर रो नामकरण ई. १२१२ मैं महारावल जैसल रे नाम माथैं हुयो। पैला 'लोद्रवा' इण खेतर री राजधानी ही।

किले मे बण्या महलात बौत सुदर है। विशेषकर गजविलास, मोती महल, रग महल अर सर्वोत्तम विलास पत्थर माथैं बारीक खुदाई अर सोने री कलम रैं काम मैं बेजोड कैया जा सकैं है। इण मैंला रैं कोरनी रैं काम मैं लोग मन्त्रमुग्ध हू'र देखता ई रैं जावैं। मन करैं कै बानैं देखतां ई रैंवां। किले में लक्ष्मीनाथ, रतनेश्वर महादेव, टीकम जी, सूर्यदेवता, भगवती अर कुल राज राजेश्वरी आद देवी-देवतावा रा देखण जोग मिंदर भी है। जैसलमेर जैन धरम नैं मानणा वाळा लोगा री निवास थली रैई है। इण कारण चतुर्मास करण नैं अठै अणेक जैनाचार्य आवता हा। वणारैं निरदेश मुजीब अठैं अणेक कलापूरण जैन मिंदर अर उपासरा बण्या, जका पत्थर री कोरनी खातर आखै जगत मैं परसिध है।

बर्तमान मैं जिण महलां मैं जैसलमेर दरबार निवास करैं वै किले री तलौटी मैं बण्योडा है। षा मे जवाहर विलास अर बादळ विलास री बारीक खुदाई अर पत्थर री जुड़ाई देख्यां ई बणे। छैंणी हथौडे सू हाथ सू घड़णे-खोदणे मैं कित्तो धीरज, मेहनत अर समय लाग्यो हूसी इण री केवल कल्पना ई आज कर सका। पत्थर जाबे कलात्मकता अर सुदरता री जीवती जागती मूरत्यां दाई लागैं। आज ना तो प्रस्तर कला रा इस्सा पारखी कारीगर ही मिलैं ना इण कला नैं सरक्षण देवण आळा समरथ लोग ई।

कलाकारी री दीठ सू तलोटी मैं भी केई देखण जोग इमारता है। आसनी रोड सू थोडी दूर माथैं महता सालमसिंह री हवेली है। पत्थर री थोरी मोडो, बार्या, गोंखा माथैं जाल्या अर फूल पत्या रा अनेक आकार प्रकार खोद'र बणायोडा है। केला पाडा रैं नेडे पटवा री हवेल्यां तो खुदाई रैं काम खातर खास तौ सू परसिध है। हजारूं जातरी अर पर्यटक मध्यकाल रैं भारत री प्रस्तर कला रैं नायाब अर बारीक खुदाई रैं काम नैं मन्त्रमुग्ध हू'र देखता ई रैंवे। इण हवेल्या रैं सामैं पूग्या पछै अठै सूं हटण नैं मन नी हुवैं। ज्यौमित रा कित्ता डिजाइन अर पैटर्न इण मैं है? बां सब मैं समानता अर अनुपात नैं देख'र अचरज हुवे। वास्तव मैं भवन निरमाण कला मैं भारत री निपुणता अर कलात्मक सूं देश-विदेश रा कलाकार आज भी प्रेरणा लेवै। नगर मैं मदनमोहन जी रो मिंदर, सावले रो मिंदर अर ग्यारह मिंदर भी सरावण जोग है।

जैसलमेर जैन धरम रैं लोगां री तो तीरथ थली ही है। दुर्ग रैं भीतर ५२ जिनालय समेत चिंतामणि पार्श्वनाथजी रो प्राचीन अर भव्य मिंदर है। इण री मूरती विशेष पुराणी है। कैवे कैं इण रो निरमाण वि स २ मैं हुयो। इण नैं जैसलमेर री जूणी राजधानी लोद्रवा सू अठै लाया। इण मिंदर रैं मुख्य द्वार रैं कनै एक सुंदर तोरण है। इण माथैं अलायदा-अलायदा मुद्रावा मैं अनूठा भावा नैं दरसावतीं आछी मूरत्यां उकेर्योडी है। निज मिंदर रो खुदाई रो काम भी आकर्षक है। स. १४६७ रो बण्यो श्री समवनाथ जी रो मिंदर शिल्प अर स्थापत्य कला रो लूठो नमूनो तो है ही इण रो वियो आकर्षण 'जिन भद्रसूरि ज्ञान भण्डार' है, जिण मैं हस्त लिखित हजारूं प्राचीन ग्रथां रो अमूल्य सग्रह है। देश-विदेश रा सैंकडूं विद्वान आं रैं अध्ययन तांई अठै ढूकै। स्थापत्य री दीठ सूं श्री शीतलनाथ जी, श्री शांतिनाथ जी अर अष्टापद जी रा मिंदर भी दरसणीय है।

श्री चन्द्रप्रभस्वामी रो मिंदर तीन तल्ला रो है। इण रै दूजे तल्ले में सर्वधात री अणेक मूरत्यां है। चौगान पाडा मुहल्ला मैं महावीर स्वामी रो मिंदर है। औ मिंदर भी जूणो है, स. १४७३ मैं बण्योडो। पण औ दूजा जैन मिंदरां जित्तो कलात्मक नई है। सै मिंदर अर दर्शनीय ठामां रा दर्शन करता सिमूयां ७ बजग्या। बाजार मैं भोजन कर ८.३० बज्यां तांई पूठा धरमशाल पूग्या अर रात्री विसराम करयो।

आगले दिन प्रात ९ बज्यां जैसलमेर रै विशाल सरोवर अर इण रै मायं बणायोडी कलात्मक प्रोल देखण नै निसर्‌या। जैसलमेर नगर रै पूरब दिशा मैं औ तालाब महारावल घडसी (१३१६-१३५२) रै द्वारा बणवायो गयो हो। औ तालाब खासो बडो है। इण रो आधार दूर तांई फैल्योडो है। बरसात रो पाणी बै'र इण मैं भेळो हू जावै अर सालू नई खूटै। जैसलमेर मैं कुआ भी कम ई है। मरुनगर रा बाशिंदा इण तालाब रो ई पाणी पीवण नै काम मैं लेवै। इण कारण तालबा रो विशेष महत्त्व है। जल रो एक पर्याय 'जीवन' भी हूवै। इण पर्याय रो गैरो आरथ जैसलमेर सू बेसी और कुण जाणै। इण तांई अठै रा कवियां इण सरोवर रै मीठै पाणी री प्रशसा मैं लिख्यो है—

> का अमरत आकाश रो, का सोरम री सीर
>
> तनडो-मनडो तारणो, गढ़मलिये रो नीर।

इण इतिहास परसिध तलाब रै एक कुणे माथे 'टीला प्रोल' नाम री कलापूरण इमारत है। इण रो निरमाण टीला नाम री भगतण करायो। प्रोल री तिबार्‌यां, बार्‌यां, झरोखा अर टोड्या री बणगत परम्परा मुजीब है अर जाल्यां, फूल पत्या री घडाई कटाई री चकित करण आळी कारीगरी है। प्रोल रै ऊपरले हिस्से मैं सत्यनारायण रो

मिंदर है, जकै में प्राष्टधात री मोवणी मूरती विराजै। अनीत घणे मैं पड़ी वैश्या री धार्मिक भावना, मातृभूमि रै प्रति प्रेम अर कलात्मक रुचि रा इसो प्ररक उदाहरण दूजो कम ही देखण नैं आवै। कंवे कै टीला ने अहमदाबाद रै बादशाह स्थाई रूप सू आपरी पासवान बणावण ताई प्रस्ताव कर्‌यो, पण टीला आ कै'र बठै बसनै सू नटगी कै गडसीसर रै मीठै पाणी री ओळयू मनै आपणे देस सू अळगो नी रैवण देवै। जमल भूम रो इसो एकनिष्ठ प्रेम जाण-सुण'र टीला रै प्रति पर्यटकां मैं सरधा अर सम्मान रो भाव ऊपजै। इण तलाब रै डावै कानी गर्जसिंह जी रो कलात्मक गर्जमिंदर है, जको स्थापत्य री दीठ सू सरावण जोग है।

दस अज्या गडसीसर रै नेडै ई थित फोक लोर म्युजियम' नाम रै सग्रहालय नै देखण ने गया। औ सग्रहालय नदकिसोर शर्मा नामक रै एक शिक्षक री साधना रो फळ है। बारहवी सू बीसवी सदी ताई रा चित्र, लकडी रो उपयोगी सामान, जीवाश्म, हाथीदात री कलात्मक जिंसा, पुराणा लोक वाद्य आद रो इसो अजब सग्रह अठै है कै पुराणी पीढ्यां रो सैमूळो जीवतो निजारो आख्या सामै परतख धूमण लागै। इण मैं पाच कमरा है। पैले कक्ष मैं लोक शैली रा जूणा मांडा, चौपड, कांच अर चोढ्या रै काम री पोशाका अर जैसलमेरी शैली रा चित्र है, साधारण आदमी रे जीवण रो प्रामाणिक इतिहास बतावण आली सामग्री। दूजे कक्ष मैं लाखू बरसा तक धरती मे दब्या पेडां सू पत्थर बण्या नमूना अर शख, कौडी, मछली, मेंढक रा जीवाश्म जका भारत रै परसिध सू परसिध अजायबघरां मैं भी देखण नै नी मिलै। इण मैं ई दो-एक शताब्दी पैलां रे हस्तलिखित ग्रथो रो संग्रह है। तीजे कक्ष मैं रामदेवजी रा घोड़ा, राम, लक्ष्मण, सीता रा लकड़ी रा घूमता मिंदर, कावड सतियां रा चित्र, महेन्द्र मूमल रै अमर प्रेम प्रसग रा चित्र आद दर्शायोड़ा है। चौथे कमरे में हाथीदांत रा चूड़ा, पत्थर रा

चक्लोटा, सरल, पाबूजी री पड, गैणां राळण री पेट्यां, पत्थर रो गैणा, पत्थर रा बर्तन आद रो कीमती खजानो। पांचवे कक्ष मैं नड, अळगोजो, सारंगी, एकतारो बांसरी, दिलरुबा, रेवाज, कमायचा, रावण हत्था आद परम्परागत बाजा अर वाद्य है। इण अतूट संग्रह नैं देख'र एक आदमी री खिमता अर सामर्थ मार्थे अचरज अर सरधा भाव जागै। प्रेरणा मिलै कै एक धेय निष्ठ आदमी भी संसार नैं बौत कुछ दे सकै है।

धमरशाल आ'र भोजन रै उपरांत थोडो विसराम कर डेढ़ बज्या जीप सूं नगर रै नेडे बनें रा मिंदर देखण ताईं निकळ्या। जैसलमेर रै पच्छमाद ३ मील दूर अमर सागर नाम रो खबसूरत बाग अर तळाब है। महारावल अमरसिंह (सं. १७१६ सूं १७५८) आपरै राजकाल मैं इण रो निरमाण करायो। इण सरोवर रै आथूणे पासे अमरेश्वर महादेव रो मिंदर अर दखणाद बाजी महता हिम्मतरामजी पटवा रै बणवायोडो बडो जैन मिंदर है। इण मिंदर री भीता मार्थे बारीक खुदाई रो चोखो काम है। घारू मेर फलदार रुंखां री ओळयत है। आम, जामफल अनार जामुण, मौसमी रा दरखत ठेठ मारू प्रदेश मैं देख'र सुखद अनुभव हुवै। सुगन्धी आळा फूलां री महक बिखरती बयारया भी दर्शकां रो मन मोवै। म्हे गया जद तलाब में खासो पाणी हो। सैंमूळो क्षेत्र हरियावळ अर पाणी री मोजूदगी सूं बौत सुंदर अर आकर्षक लागै। प्रकृति री विभूति अर कलापूरण मिंदर रो संगम इण ठामा री शोभा नैं दुगणी कर देवै। अठै अमरसिंह री बणवायोडी एक बावडी भी है। तलाब सूं छण'र बावडी मैं मांय सूं मांय पाणी भरीजै। ओ पाणी शीतल अर स्वस्थ बणाणे आळो हुवै।

अमर सागर मैं आदिनाथजी रा तीन जैन मिंदर है। पैलो मिंदर सडक रै सारै मुनि डूगर जी री बेरी नेडे है। इण री प्रतिष्ठा

१६०३ में रणजीतसिंह जी रै बखत में हुई। दूजा दोन्यू मिंदर जैसलमेर रै पटवा सेठां रा बणवायोड़ा है। छोटो मिंदर स १८६७ में सवाईरामजी द्वारा अर बडो मिंदर स १६७८ हिम्मतरामजी रै बणवायोड़ो है। बडे मिंदर री मूरती कोई डेढ हजार बरस पुराणी बताईजै। बडो मिंदर दो तल्ला रो है। कारीगरी री दीठ सू अमर सागर रा मिंदर जैसलमेर रै दूजा जैन मिंदरां रै मुकाबले रा ई है। इणा रै बारीक जाळी झरोखे रो काम देखण जोग है। विद्वान अर कला पारखी श्री पूरणचन्द नाहर आं नै 'मूल्यवान भारतीय कला रा दर्शनीय नमूना' कैयो है। दो घण्टा ताईं इण ठाम रो अवलोकन कर ३.३० बज्यां लोद्रवा खाई चाल्या।

लोद्रवा अमर सागर सू ७ मील दूर पच्छमाद में है। दस-पंद्रह मिनट में बठै पूगग्या। लोद्रवा जैसलमेर री जूणी राजधानी ही। लोद्र राजपूत अठै रा रावल हा। इण कारण ई औ नाम पड़्यो। जैसलमेर रै शासकां रा पूर्वज भाटी रावल देवराज स. १०८२ में लोद्र राजपूतां नै हरा'र आपरी राजधानी बणाई जकी रावल जैसल रै जैसलमेर बणावणे ताईं कायम रैई। लोद्रवा में प्राचीन काल सू पार्श्वनाथ जी रो मिंदर हो। सिंध अर अफगनिस्तान सू सीधो व्योपार हुण सू जैसलमेर खासे सम्पन्न नगर हो। मोहम्मद गोरी इण नगर माथै हमलो कर्यो अर इण मिंदर नै भी नुकसान पूचायो। स १६७५ में भणसाली थाहरुसाह इण रो पुनरुद्धार कर'र मोजूद मिंदर बणवायो। पार्श्वनाथ जी रै मूल मिंदर रै चारू मेर छोटा मिंदर है। लोद्रवा रै मिंदरां री विशेषता आ है कै नींव रै बाद मकराणे री आडी भीत है उण माथै सीधी भींत है। स्थापत्य री अनूठी रचना इण नै कै सका। इण मिंदर रै ऊपरले हिस्से में धातु कल्पवृक्ष बण्यो है, जकै में अणेक भांत रा फल मांड्योड़ा है। बिरख सुंदर अर कलात्मक है। मूल मिंदर रै सभामंडल में शतदल पद्म यंत्र री प्रशस्ति रो एक शिलालेख

है, जको अलकार शास्त्र रो चोखो नमूनो है। संमूळो मिंदर सफेद मरकाणे सू बण्यो है, जको ऊजळी धामा विखेरतो सो लागे। मूल मिंदर री सीढ्या ऊपर एक गौंखो है। दर्शनार्थी नैं खासी दूर सू भी इण गौंखे माय कर मूरती रा दर्शन हुवता रैवे। मिंदर रै माय अत्यत भव्य तोरण है जको स्थापत्य कला रो अकूत नमूनो है। आज रै वैज्ञानिक युग मैं इसा कलापूर्ण मिंदर खासी कल्पना री बात रैयगी है। इणा रो परतख दर्शन अर साक्षात्कार नैं सोभाग गाण'र घणो आणद आयो।

पार्श्वनाथ मिंदर सू करीब एक मील दूर लोक गाथावां री अमर नायिका अर सुदरता री मूरत मूमल रो महल है। अठै एक गाइड म्हाने खण्डहर जिसे घर मैं घुमावता, बारले पासे नाळे दाई दीसते सूखे ठाम रो परिचय दियो। बतायो कैद आ काक नदी पाणी सू भरी रैवती ही। अमर कोट रो राजकुमार महेन्द्र अठै री रूप सुदरी मूमल रै प्रेम आकर्षण मैं बन्धो रोज रात मैं ३०० मील ऊटरी सवारी कर अठै पूग'र नदी पार कर मूमल रै महल आतो तो दिनुगे सू पैला ई अमर कोट पूठो ढूक जातो। मूमल रै महल रो खण्डहर आज भी प्रेम री गैराई अर पावनता रो सदेश देतो दीसै। खासी ताळ ताई अतीत री इण पवित्र याद मैं मगन भावा मैं चुपचाप डूबता-तिरता रैया। एक साथी सिझा पडणे री बात कंई जद भळै चेतना आई अर पूठा जैसलमेर ताई आतम बिभोर अवस्था मैं रवाना हुया।

आज भी ऐकात छणां में जद जैसलमेर री स्मृतिया उमडै, उच्च कला सोंदर्य री झाकी सू मन भावो आनन्द अर सतोष सू भर जावै। उजाड़ सो लागण आळो ओ नगर इतिहास, स्थापत्य कला, लोक कलावा अर प्राचीन प्रथा रो अपूर्व भडार हूणे रै कारण यथार्थ मैं म्यूजियम सिटी' कैवावण जोग है। इण रो 'सोनार किलो' आपरे विशाल घेरे मैं मध्यकाल री मरु सभ्यता नैं जीते-जागते रूप मैं दर्शाणे मैं आज भी अनूठे रूप सू सफल है।

मिली-जुली संस्क्रिति रा ठाम

मध्य जुग रा मुगल सम्राट महान भवन निरमाता हा। वणा रा बणवायोडा किला, महल, स्मारक यू तो सैमूले देश रे भिन्न-भिन्न भागा मैं मौजूद है, पण इतिहास री दीठ सू बौत महत्व री, कला री दीठ सू अत्यन्त श्रेष्ठ अर अनूप अर संस्क्रिति री दीठ सू भाईचारे अर मेल-जोल री प्रतीक अनूठी इमारतां कठैइ देखण नैं मिले तो वै नगर है फतहपुर सीकरी अर आगरा। शाहजहा रै राज मैं दिल्ली सूं पैला आगरा अर फतहपुर सिकरी ही मुगलां री राजधानी रैया। अन्तरराष्ट्रीय शांति बरस १९८६ मैं राष्ट्रीय एकता, सद्भावना अर सांस्क्रितिक समन्वय भावना हेतु महाविद्यालय रा रोवर छात्रां एक अन्तर प्रांतीय साहसिक जातरा रो आयोजन १७ अक्टूबर सूं बीकानेर सूं आगरा ताई रो कर्‌यो। जयपुर, भरतपुर, डीग देख'र २१ अक्टूबर नैं १६ सदस्या रे दल सायै बस सूं फतहपुर सीकरी पूग्या।

सीकरी आगरा सूं ३७ कि. मी. अर भरतपुर सूं ५० कि मी. दूर है। सडक सू दखणाद नेडे ही किलो अर बस्ती है। बतावै कै अठै अकबर रे जमाने में परसिध मुस्लिम सूफी संत शेख सलीम चिश्ती रैया करता हा। अकबर संतान परापित खातर वां री सेवा मैं हाजिर

हुयो। उण रे आशीर्वाद सूं हिन्दू राणी जोधाबाई रै पुत्र सलीम जलम लियो। बाद मैं सलीम ही जांहगीर रै नाम सूं साम्राज्य रो उत्तराधिकारी हुयो। चिश्ती सूं परमावित हू'र अकबर आपरी राजधानी आगरे सूं फतहपुर सीकरी लेग्यो। सन् १५६६ ई. मैं अकबर सीकरी मैं बडे किले रो निरमाण सरू करायो। पाच-छः सालां मैं ही इण महला, मसजिदा अर दूजे भवनां री पात खड़ी हुयगी। अठै १५ बरसा ताई अकबर रे राज्य री राजधानी रैयी। अकबर अठै सूं ई गुजरात माथै धावो बोल'र उणनैं फतह कियो।

बुलंद दरवाजो ई. १६०१ मे बण्यो। बस स्टाप सूं दखण री संकड़ी सडक सूं सौ गज ही चालणो पडै। इण सड़क माथै घणी सी दूकानां खाणे-पीणे री है। चाय, दूध, नास्ते रा होटल है। अठै मावे री चीजा भी चोखी बणै। रबड़ी अर मिश्री मावे रो भी अठै प्रचलन है। इण बजार रे आखिर मैं सड़क रे पछमाद ऊंचा पगोथिया चढ'र बुलंद दरवाजे पूगीजै। दरवाजो नाम मजूम खूब ऊंचो है। इण री ऊंचाई १७६ फुट है। कैवे के ओ दुनिया रो सैं सूं ऊंचो दरवाजो है। ई. १६०० मैं दखण विजय री यादगार रै रूप मैं इण नै बणवायो गयो। दरवाजे रो चहरो लाल पत्थर रे बीच संगमरमर री बड़ी-बडी पट्यां जड़'र बणायो है। ऊपरले हिस्से माथै कंगूरा अर तीन छतर्या आला गुम्बद है। दरवाजे रो ढाचो विशाल अर आकर्षक है। मूल चहरो आयताकार है। उण नैं दोनूं पासे तिरछो मोड दियो है, इण सूं शिल्प घणो कलात्मक लागै। इण दरवाजे रे बारे गाइड खड्या रैवे। १० सूं १५ रु. तक वे एक समूह सार्थ इमारता रो इतिहास आद बतावणने वास्ते तैयार हू जावे। गाइड कर लेणो उपयोगी हुवै।

दरवाजे मांय बड़तां ही बड़ो खुल्लो चौक है। इण रे एक कुणै मैं शेख सलीम चिश्ती री संगमरमर री भव्य मजार बण्योडी है।

दरगाह री ऊंचाई २४ फुट है। इण री भीत मकराणे री बारीक जाळ्या सूं बण्योडी है। तराश रो काम बौत महीन अर सोवणो है। सामळे हिस्से मैं पगोथिया आगे चौडी चौकी है जिके माथै दरवेश अर कव्वाल याद बैठ्या रैवे। सामैं सत री मजार है, जकै रे चारू मेर परक्रमा रो घेरो छोड्योडो है। लूबाम अर अगर री सुवास सूं वातावरण सुगन्धित रैवे। सरधालुदा अर दरसका रो तागो लाग्यो ई रैवे।

इण चौक रे एक कुणे मैं दरवाजे रे कन्ने ई पुराणो ऊंडो कूओ है। कई तैराक अठै ऊभा रैवे। सैलाण्या सूं रुपयो दो रुपयो आदमी दीठ भेळा कर'र दस-पद्रह देखणियां हुणे सूं बुलद दरवाजे री छात सूं कुए मैं छलांग लगा'र पर्यटका रो मनोरजन करै। जान जोखम आले इण करतब सूं लोगा नै हैरत हुवै अर सैं उण तैराक री तारीफ करे अर शाबासी देवे। मजार रै लारे विशाल जामा मस्जिद है। इबादतगाह रो मूडो पद्यम मैं है। इण इबादतगाह रो दरवाजो भी खासो ऊंचो है। दोनूं कानी खुल्ला लम्बा सुदर बरामदा सूं जुडी मस्जिद स्थापत्य कला री दीठ सूं सोवणी लागै। कैवे के आ मस्जिद भी दुनिया री सैं सूं बडी मस्जिदा मैं एक है।

सीकरी रे किले मैं देखण जोग अनेक भवन है। दीवाने खास लाल पत्थर रो विशाल समागार है, जकै मे हजार डेढ़ हजार आदमी आसानी सूं ऊभा रै सकै। पचासूं बडा-बडा खम्भा माथै भवन री छात खडी है। दीवाने खास री इमारत छोटी पण घणी कलापूरण है। इण भवन रे बीच एक अति कलात्मक खम्भो है। लाल पत्थर रै इण खम्भे माथै उभार अर फूल-पत्या रा नमूना बणायोडा है। खम्भो नीचे सूं बडो अर समचोरस है। बीचाळो भाग भी वर्गाकार है, पण कम चौडो है। ऊपर चारू मेर सुदर टोड्यां टिकी है, जकी नीचे सूं पतळी अर ऊपर कमल रै पुसप दाई खिल्योडी अर फैल्योडी है। इण माथै पत्थर

री तराश्योडी खडी जाळी री भाड सू बादशाह रै आसन री जागमा बणायोडी ही। कंवे के इण खम्भे नीचे ही अकबर रा समासद दीने-इलाही रो सदेश सुणता। अकबर ईश्वर री एकता, इसाना री समानता अर परस्पर प्रेम रै उदार सिधाता नै जन-जन मैं फैलावण वास्ते ही सब धरमा रै आदर्श सिधांता ने दीने-इलाही मैं एकत्र किया हा। सूफी सता रो प्रेम भाव, इस्लाम री एक ईश्वर मैं निष्ठा अर हिन्दुवा री सहिष्णुता अर उदारता इण मैं शामल ही। जे इण नूवे सम्परदाय रे सिधाता ने भारत रा लोग इण जमाने मैं अपणा लेंता तो भिन्न-भिन्न सम्परदाया रा आपसी झगडा खतम हूणें री सम्भावना अर भाई चारे री थापणा हू सकती ही। पण कट्टरपंथी मुल्ला अर रूढिवादी पंडित हो सैंज इसानियत रैं मारग मैं सदा आडा आवता रेया है। आज भी अकबर री दूर द्रष्टि अर मजबो उदारता वर्तमान युग री सम्मस्या रो व्यवहारिक निदान लागैं।

किले रा बीरबल महल, जोधाबाई महल भी सुदर हूणे रे सार्थ साथ अकबर री समन्वय भावना अर हेल मेल रे सुभाव रो परिचय देवे। पच महल रो निरमाण भी कलात्मक है। एक रे ऊपर एक मजिल चूडीदार रूप सू बण्योडो है। नीचे री मजिल बडी है। ऊपर री मजिल पिरामिड दाई तर-तर छोटी हूती जावै। शाहबुर्ज मार्थं खडा हू'र बादशाह किले रे बारे रो जायजो लेंता। हिरण मीनार भी खम्भे री शैली री आच्छी इमारत है। बीच रैं भाग मैं सूळा रो उभार दिखायोडो है। आ इमारत अकबर आपरे प्रिय हाथी 'हिरण' री याद मैं बणवायी ही। नीचे एक बडो चबूतरो है। उण मार्थं छोटो चबूतरो तद चबूतरे मार्थं मीनार। हिरण मीनार भळे अकबर री उदारता रो प्रतीक कैयो जा सकै।

फतहपुर सीकरी री इमारता अर महलां रो वास्तुशिल्प इत्तो

अनूठो है कै वास्तुविद इणा ने 'पत्थर मैं ढली परीकथा' कैवे। नगर री साकडी, घुड सू मरुयोडी हाका करती सडक सू जद कई तल्ला मकान जिसी निसरणया चढ'र बुलद दरवाजे रे लारले विशाल चौक में पूगाँ तो भव्य सफेद आगण, ऊपर नीलो ग्रामो, आडम्बरहीन शानदार मस्जिद ग्रर शात वातावरण एक'र सैलायुया नै थोडी ताळ खातर समाधिकता सू परिया ले जावै। मस्जिद रै बाद अकबर ग्रर राज परिवार रै लोगा रा महल बाने फेर इण लौकिक जगत मैं ले ग्रावै। रैवास रे भवना मैं न तो मकराणे रो परयोग है, न जडाऊ कीमती पत्थरा रो काम। शिल्प री सादगी, उपयोगिता ग्रर रचना ही दर्शका नै परभावित करै। ग्रठै री दूजी विशेषता भवन रचना मैं देशी शिल्प शैली रो परयोग है। भारत रा घरा में, चावे वै गरीब रा साधारण मकान हुवै का राजावा रा महल, तीन भाग हुवै। चौक ग्रर आंगण रो खुल्लो भाग तिवारी ग्रर वरसाळी रो ग्रध खुलो भाग ग्रर उणरे लारे कोठडी रो बद भाग। फतहपुर सीकरी रै महला ग्रर रैवास री दूजी इमारता मैं इणी रो इस्तेमाल हुयो है। इण रै अलावा भारत रा शिल्पी जाण-बूझ'र रैवास री जाग्यां नै एक सिलसिलेवार इकाई रै रूप मैं बणावै। सीकरी री बडी-बडी इमारता, खुला राळियारा, मण्डप, पक्के फर्श वाळा आगण, हौज, फवारा सैं कुछ मिल'र खुले उजाळे ग्रर हवा सू युक्त एकता रो सामूहिक एहसास देवै।

सीकरी रा ग्रै आलीशान, ग्रेकला ग्रर सूना महल ग्राज भी गरव सू माथो उठा'र कैता दीसे कै ग्रठै बो नगर हो जकै रे निरमाण तांई देश-विदेश रे सर्वोत्तम कारीगरा रो हाथ हो। द्रढता, सुघडता ग्रर कला री सम्पूरणता री दीठ सू ए अनूठा है, इण मैं एकै कानी इरान आद री मुस्लिम शैली तो दूजै कानी दखण, गुजारत ग्रर मुख्य रूप सू राजस्थान री हिन्दू वास्तु शैली रो उणियारो साफ झाकतो लागै। जोधाबाई रै महल रा संतुलित ग्रनुपात, बीरबल रे महल री दुरस्ती

अर पच महल री आक्रति माथै तो मिलो जूली शैलियां रो और भी वेगी प्रभाव दीसै। सीकरी रो निरमाता अकबर हिन्दू अर मुस्लिम सस्क्रिति रो मेल केई स्तरा में देखणो चांवता हो।

सीकरी सूं सिंझ्या पांच बज्यां आगरा खातर रवाना हुया। बस स्टैंड सूं तांगो कर'र आगरा फोर्ट स्टेशन आगे बाजार में मूरत्यां बणाणे आळा सिलवटां री दूकानां रै कनै गुजरात गेस्ट हाउस में ठैर्या। भोजन रै उपरात उण दिन तो बाजार में ही चहल कदमी करी। २२ तारीख नैं दिनुगे ६ बज्यां आगरा रो इतिहास परसिध किलो देखण ताई नावड्या। किलो रेलवे स्टेशन रे लारे नैडो ही है। थोडी ताळ में पैदल ही पूगग्या। मुख्य गेट माथै टीकट ले'र प्रवेश मिलै। परकोटे री भींत सारै ढालू मारग सूं थोडो ऊपर चढ'र मळै एक पिरोळ आवै। थोडो ऊपर खुले चौगान है। पूरब दिशा में सारे दुमजली विशाल इमारता है।

बादशाह अकबर ईनै ई १५६३ में बणवायो। बाद रै बादशाहा भी इण में आपरा जुदा महल भळै खडा कर्या। यू तो इण में भवना री सख्या सैंकडू माथै हुसी। पण उल्लेख अर सरावण जोग इमारता में दीवने आम, दीवाने खास, मोती मस्जिद, खास महल, जहागीर महल आद विशेष है।

दीवाने आम रो भवन खासो बडो है। महल रे माय सू ऊपर री मजिल में बालकोनी दांई आगे निकळ्योडे ऊचे गोखे में बादशाह रो तख्त हुंतो। नीचे विशाल सभाघर पचासूं बडा-बडा खम्मा माथै खडो है। इण में सभासद आपरे ओहदे मजूब खड्या हूता। दीवान, सिपहसालार आद रै बाद चालीसहजारी मनसबदार आगै रैंवा उण रै लारे तीस हजारी, बीस हजारी आद। साथै आळे गाइड बतायो कै

इस भवन मैं लारे तीसरी पात आळे खम्भा मैं एक रै कनै ५ हजारी मनसबदारा मैं शिवाजी नै खड्यो कर्यो हो। राजा जयसिंह री मनुहार पर शिवाजी औरंगजेब सूं संधि करणे आ तो ग्या पण उचित सम्मान न मिलणे कारण क्रोध मैं बादशाह नैं पीठ दिखा'र दरबार सूं साम्ही पगा पूठा टुरग्या। साच ही कैवे सिंघा रै नकेल घातणी किसी सोरी हुवै।

जहांगीर महल लाल पत्थर अर मकराणे सूं बणी विशाल इमारत है। इण नै सरू तो अकबर करवायो हो पण आ सम्पूरण जहांगीर रै समय हुई। इण भवन रे बीचो बीच मूळ दरवाजो है। दोनूं पासे एक अनुपात सूं बण्या भवन है। भवन रे सिरा माथै आगे निकल्योड़ा गोलाकार महल हैं, जका रै उपर गुंबद आळी खुल्ली छतर्‌या है। सैमूळो भवन हिन्दू वास्तुकला सूं केई तरा घणो परभावित है।

खास महल पूरण रूप सूं संगमरमर रो बण्योड़ो है। इण रो फर्श भी संगमरमर रो है। भवन छ खम्भा माथै खड्यो है। छत माथै दो छोटी कलात्मक छतर्‌यां है। इण महल रो निरमाण शाहजहां ई. १६५७ मैं करायो। औ बादशाह रै निजी आवास रै काम आंवतो। अठै सूं ताजमहल रो द्रश्य भी दीसै। इण रै आगे संगमरमर री एक चौकी भी पड़ी है। चौकी माथै बैठ'र लोग फोटू खिचवावे जकै री पृष्ठ भूग मैं ताजमहल रो भी फोटू साथै आ जावै। म्हे भी साथ्यां साथै यादगार रूप मैं ग्रूप फोटू खिचवायो।

मोती मस्जिद री इमारत भी भव्य अर विशाल है। आ भी विश्व री बड़ी मस्जिद मैं एक गिणीजै। इण माथै भी हिन्दू मुस्लिम भवन निरमाण कलावां रो परभाव है। मस्जिद सूं थोड़ो दूर चमेली

महल है। इण महल मैं बो ठाम भी देख्यो जठै बूढे शाहजहां ने उणरे बेटे आपरी राज करणे री महत्वाकांक्षा खातर कैद कर'र राख्यो हो। राजनीति रा ओछा हथकण्डा जो नी करावै सो थोडो।

आगरे रो किलो दुर्ग निरमाण कला रो चोखो उदारण है। संमूळो किलो लाल पत्थर री भींता सूं बण्यो है। किलो दो बडा अर्ध चंद्राकार घेरा मैं बण्योडो है, जका री लम्बाई २ कि. मी. व्है। बारले पासे ६ मीटर चौडी खाई है। बीच-बीच मैं बडी-बडी बुरज्यां अर बन्दूक आद चलावणे खातर मोरचा है। दक्षण पूरब मैं दुर्ग रै मारै जमुना नदी बैवे। इण सै कारणा सूं आगरे रो किलो उण जमाने रे चोखा सूं चोखा हथियारां री मार झेलणै री खिमता राखतो हो।

भौगोलिक अर राजनैतिक दोन्यूं दीठ सू आगरे रै किले रो लूठो महत्व हो। जमुना अर चम्बल रै संगम रै नेडे बण्योडे इण किले सूं पच्छम रा राजपूत राजावां माथै निजर राखणो सोरो हो। मालवा माथै हमलवार सेनावां रे कूच अर प्रयाण नै अठै सूं बराबर देख्यो जा सकै हो। अर गंगा री घाटी मैं मौजूद प्राकृतिक साधना अर सम्पदा माथै कब्जो राखणै मी राज री थिरता खातर जरुरी हो। इण रै अलावा साम्राज्य रै बीचो बीच हूणे सूं व्यवस्था रे संचालन मैं भी उपयोगी समझ्यो जातो। जे कैवा कै मुगल साम्राज्य रे बजूद अर सुरक्षा ताईं आगरा रे किले रो शीर्ष स्थान हो, तो की गलत नी है।

आगरे रै किले सूं २ मील दूर ही विश्व विख्यात ताजमहल है। भोजन रे उपरांत १ बज्यां तांगा मैं बैठ पूगग्या। ताजमहल रो प्रवेश द्वार भी लाल पत्थर री बडी आकर्षक चौरस इमारत है। इण रे जीवणे बाजू आछी दूब रो हर्‌यो बाग है। सामै पुलिस री चौकी है। दरवाजे माथै एके कानी टिकट घर है। गुम्बद रे नीचे फोटो, एलबम, ताज

सम्बन्धी किताबा, पत्थरां, माडल कला री चीजां आद रो छोटो एम्पोरियम है। अठै फोटोग्राफर अर गाइडां री भीड़ मण्डी रैवे। आखे ससार रा सैलाणी खासी बड़ी सख्या मैं दीसैं। दरवाजे रे पार लम्बा चौडा व्यवस्थित सोवणा बगीचा है। बीचो बीच फंवारा री लम्बी नियोजित कतार अर दूर ऊंचे बडे वर्गाकार चबूतरे माथै उजळै मोती दाई चमकतो ताज रो जगत विख्यात मकबरो। शाहजांह आपरी प्रिय बेगम मुमताज रो मौत रे बाद उण री यादगार रूप मैं ई. १६५३ मैं ई रो निरमाण करवायो। २० हजार कारीगरां १६३० सूं १६५२ तांई २२ बरस री सतत श्रम साधनां सूं इण अनूठे मकबरे नै बणायो। इणरो नक्शो फारस रै परसिध शिल्पकार 'उस्ताद ईसा' त्यार कर्‌यो। भारत, ईरान, मध्य एशिया आद रे कुशल सिलावटां री अनेक पीढ्यां री अनुभव इण नायाब मोती रे रूप मैं फलित हुयो। इण री खूबसूरती अर कलात्मकता माथै मोहित हूं'र एक अमरीकी महिला अठै तांई कै दियो कै जदि म्हारी मौत पछै कोई अस्तो सुदर मकबरो बणावै तो हूं आज ही मरण त्यार हूं।

लाल पत्थर रै ऊंचे चबूतरे माथै थित इण री मुख्य इमारत घनाकार है। उण माथै ५७ मीटर ऊंचो धौळो गुम्बद हवा मैं तिरतो उजळै बादळ रो टुकडो सो लागे। वर्गाकार चबूतरे रै चार कुणां माथै सफेद मोमबत्यां जिसी सोवणी चार मीनारां बणी है। इमारत रे चहरे, आजू बाजू री भींता अर गुम्बद री छात माथै वेल, बूंटा अर रेखिक कला रा अति बारीक सोवणा नमूना बणामोड़ा है, जाणै चांदी बरणां वस्त्र माथै सोनलिया अर भांत-भांत रे दूजा रंगा रो खीनखाबी कलात्मक काम कढ्योड़ो हुवै। मकबरे री सीधी सपाट देवळ्यां री किनार्‌यां माथै बारीक केसां दाई छोटी लकीरां री सजावट केई मासूम गोरे शरीर माथै नजरबट्टू (डोठोने) री सी लकीर दाई लागै। मकबरे री वस्तु शिल्प मैं जोमित री लकीरां रो तालमेल कला

री चरम उन्नत सीमा नैं दरसावै। मन संगीत री प्रमूर्त तरगा दांई प्रार्प प्रतूठे आनन्द सूं हिल्लोरां लेण लागै।

गुम्वद रै ठीक नीचे ऊपरले वक्ष में शाहजहा ग्रर मुमताज री कब्रा री नकल है। इणा रे चारू मेर खडी जाली रो अति बारीक सोवणो तरासगिरी को काम है। मायली भीता अर मजार मार्थ भी बेलबूटा है। नीचे पगोथियां उतर'र ग्रसली मजार मार्थ पूगा। मूल रूप ने हानि नहीं पूगै इण खातर बिजली मकबरे रै मांय नी लाईजी है। मोमबती री रोशनी मैं मजार दिखावै। कलात्मक भव्यता अर सुरुचि रो गैरो परभाव देखण आळा मार्थ पडै। ग्रकीक, कहरुवा, पन्ना, मूगा, मैलाकाइट आद भांत-भांत रे कीमती नगा री भीणी चादर सूं मूल मजार ढकी लागै।

मुगल वादशावा मैं अकबर ग्रर शाहजाह् मैं दोन्यू भवन निरमाण री दीठ सू सै सूं बेसी कैवण जोग काम कर्यो। ग्रां री वास्तु रचनावां मैं आधी सदी रो ग्रतर है, पण इत्ते समय मैं देश री भवन निरमाण कला मैं खासो फरक आग्यो हो। ग्रकबर री बणवायोडी इमारतां प्रक्रिति रै द्रब सूं मेल खाणे आळी है। प्रक्रिति सूं पूरी तरा जुडी सीकरी री सुतत्र, सुरंगी, सादी अर विशाल इमारतां भारत री कला रै मुजीव वैभव विलास री तुलना मैं थोडी सुविधावां आळे जीवन नै परायमिकता देवे। पण शाहजांह् रै काल मैं मुगल साम्राज्य वैभव री ऊचाई मार्थ हो। शासकां अर सामतां मैं बडपण ग्रर दिखावे री होडाहोड वेजा रूप सूं बढ़गी ही। सामत आपरे जीवतां ही बेहद आलीशान मकबरां बणाबण लागग्या हा। कीमती नगां रो परयोग कपडा, हथियारा अर सजावट आद मैं ही नही मकबरां री भींतां मैं भी हूण लागग्यो। ताज रे मकबरे अर किले रै महलां मैं कीमती पत्थरां रो खासो इस्तेमाल हुयो है। इसे निरमाण मैं इमारत रै कलात्मक

परमाव री बजाय वैभव रो दम्म अर आनन्द उपमोग री अति रो परतीक है।

आगले दिन २३ तारीख री सुबह सैर सू ६ कि. मी. दूर जमुना रै किनारे बण्योडे इतमादुद्दोला रै मकबरे गया। स्टेशन सूं टागा कर लिया। आधे घण्टे सू वैला ही म्हे बठै पूगग्या। जमुना रै पूळ रै पार पूरब कानी दो मजलो भव्य स्मारक दूर सू ई दीसै। जाहगीर री विख्यात बेगम नूरजहा आपरे पिता गयासुद्दीन बेग री याद मैं ई. १६२२ सू १६२८ रै बीच इण रो निरमाण करायो। मकबरे री मूल इमारत सू पैला दूजी मुगल इमारता दांई इण मैं भी लाल पत्थर रो विशाल मकराणे रै सोवणे काम आळो दरवाजो आवै। इण रै लारे मूल मकबरे मैं इतमादुद्दोला री कबर है। उण रै माथै ही इमारत बणी है। स्मारक मैं लाल पत्थर अर मकराणे रो परयोग हुयो है। ताज महल सू पैला मकराणे रो इत्तो इस्तेमाल कोई दूजी इमारत मैं नी हुयो। अठै नक्काशी अर पच्चीकारी रो इसो बारीक काम है जकै ने ताज सू टक्कर लेणे आळो कैयो जा सकै। अठै री जाळ्यां महराबां अर चारू कुणा मैं ऊपर री मंजिल मैं बणी छतर्या नै देखते ही बणै। कलात्मक बेल बूटा इण री शोभा नै दूणी कर देवे। आगले हिस्से मैं फवारा रो कतार आळो सोवणो बगीचो है। हिन्दू अर ईरानी स्थापत्य रो मेल इण मैं भी साफ देख्यो जा सकै।

१० बज्यां सिकदरा कानी रवाना हुया। सिकंदरा नगर सूं १० कि मी. दूर है। अठै अकबर री मजार है। पैला मजार रो दुमजलो दरवाजो आवै, जिकै रै चारू कुणा मैं चार खण्डा री ऊंची मीनारा है, पछै मूल मकबरो है। इण मकबरे रो निरमाण अकबर सरू करवा दियो हो, पण इणने पूरो अकबर री मौत रै बाद बणरै पुत्र जहांगीर सन् १६१३ ई मैं १४ लाख रुपिया री लागत सूं करवायो।

भवन लाल पत्थर सूं बण्यो है । औ अकबर रै मुजीब दृढ़ता अर सादगी रो परतीक लागै । इण भवन रै चारूं मेर तीन मजली मीनारां है। भवन चार मजिलो है । नीचे बडे चबूतरे माथै पैली मजिल सैं सूं चौडी है । बाकी तीन्यूं मजिलां तरतर छोटी हुती जावै । तीन मजिलां तो लाल पत्थर री कलात्मक रचनावां है । आखिरी मजिल मकराणे री बण्योडी है । अकबर री कबर पैलडी मजिल रै नीचे जमीन मैं है। पगोथिया उतर'र मांय जाणो पडे । २ फुट वर्ग गज री मजार सगमरमर सूं बण्योडी है । इण भांत एकांत जाग्या मैं आखे जगत रै महान अर उदार राजावां मैं एक गिणीजण आळो अकबर थिर नींद मैं सूत्यो है ।

सीकरी अर आगरा री सैं इमारतां मैं महल, बगीचा, गलियारा सैं एक क्रम मैं पिरोवोडा सा लागै । सगळा भवन खुल्ला अर आरपार बरामदा सूं जुड्या रैवे जकै सूं भारत रै दर्शन रै मुजीब दिक् री अनन्त अखण्डता रो आभास हुवै । सैंग भवनां मैं बाग मौजूद हुवै। बागां री सज्जा ईरानी शैली माथै है । इणां मैं बणी मोरयां अर नहरां मैं पाणी सदा बैंवतो रैवे । कठेई आवाज करता झरणा रो रूप देखणे मैं आवै, तो कठेई नहरां मे ज्योमत री रेखावां सू मछल्यां री चाल रो भरम देतो कळ-कळ री धुन सूं कानां मैं आनन्द उपजावो पाणी बैतो दीसै । क्यात मुगलां नै बांरे पुरखां रै देश री पा'डो, नद्यां अर झरणा री याद इण सूं ताजा हुती हुवेला । इण भांत सम्पूरण शिल्प विन्यास मैं भारत अर ईरान री मिली जुली संस्क्रिति री स्थाई छाप दीसै । कला रै क्षेत्र रो औ भाव जदि समाज, धरम अर राजनीति मैं ही घर कर लेवै तो शांति अर सुख री थरपणा रो सुपनो साचो हू सकै है ।

●

भारत रै धरम अर संक्रिति रो केन्द्र

भारत रै तीरथां मैं काशी रो उत्तो ही आदर जोग स्थान है जत्तो इस्लामी देशां मैं मक्का अर ईसाई देशा मैं जेरूसेलम रो। इण रो प्राचीन नाम वाराणसी है, जको आज बनारस बणग्यो है। इण देश री संक्रिति अर धरम री धुरी बजण आळो ओ ठाम, रोम, ऐथन्स अर बेबीलोनियां सू भी जूणो है। काशी रै जोड़ रा जूणा ग्रै बीजा नगर कदेई मिटग्या पण अणेक उतार चढ़ावां नै झेलतो ओ नगर चार हजार बरसां सू निरतर धरम आध्यात्म रो सदेश देतो देश-विदेश रा जातरुयां नै धौजू भी इकसार प्राकसित करतो अर अठै आणे आळा नै गगाजी मैं शांति अर सुख रो अनुभव करातो रवै। लारले बरस ई १६८६ मैं दिसम्बर माह मैं पुरी सू आवती बेला मळे बिश्वनाथ री इण रमण थळी नै देखण रो पावन अवसर मिल्यो। इयां पैला भी दो बार इण पावन धाम रे दरसनां रो सौभाग किसोर जीवन मैं मिल्यो हो।

बनारस रो स्टेशन सैर दांई ही बडो अर भव्य है। आजादी रै बाद इण री इमारत आधुनिक तर्ज मार्थ बण्योड़ी अर सुविधावां आळी है। बारे निकळतां ई ऊंचा भवन अर भीड़-भाड़ आळी सड़कां एक बड़े सै'र रो आभास देवै। स्टेशन सूं थोडी दूर अग्रवाल धरमशाला

मैं ठैर्‌या । दिनुगे ही पूगग्या हा । तैयार हू'र गगा सिनान तांई नीक्ळया । नदी घणी दूर नी है । पुराणा बाजार जरुर सकडा है । अलबता गदोलिया चौक खुलो अर मुख्य रौनक्दार जाग्यां है। मिंदर अर घाटां कानी जावणियां रो तांतो सो लाग्यो अठै सू दीसण लागै । थोडी देर में ही दशास्वमेध घाट पूगग्या । गगा नदी री धार्मिक मानता अर शिव री रमए थळी बजणे रै कारण काशी घणी पवित्र गिणीजै । साधारण मिनखां नै ही नी अठा तो साक्षात शिव नै भी मुगती देवण वाळी बजै ।

अठै रा पडां पुराणा री कथा रो उल्लेख करता बतावै कै जद हजारु बरसां पैलां माहेश्वर इण नै आपरो आवास थळी बणावण लाग्या तो ब्रह्माजी अर शिवजी मैं झगडो हुयो । सगळी नद्यां री माता गगा रै धरणा मैं ब्रह्मा भी अठै बसणो चांवता । ब्रह्माजी आपरी सगती अर बडपन दिखाण नै आपरो पांचमो मुडो धारण करयो । शिवजी क्रोध मे वीनै काट नाख्यो । पण दोष निवारण आखर काशी मैं सिनान सू हुयो । इणी वजह काशी नै दोष निवारक का 'अविमुक्तक' कैवे । दूजा तीरथ हि'दुआं नै खाली मुगती देवै, पण अठै निरवाण मुगती मिलै । करमां रा कस्ट अर जलम मरण रा बन्धन सैं टूट जावै ।

गगाजी रो प्रवाह यू तो सैं तीरथां मायै आछो लागै, पण काशी मैं गगा जित्ती मोवणे रूप वाळी है, दूजा धामा मैं उत्ती नी है । नगर रै पूरब मैं गगा बैवे । करीब पाच मील तांई नदी रै सारे-सारे लागातार वस्ती रा ऊंचा सोवणा मिंदर, भवन आद बण्योडा है । करीब एक मील मैं आधे चांद दांई घूम'र बौत सोवणो आकार बणावतो गगा मायै बस्योडे बनारस मैं भोर रै निकळते सूरज री सोनलिया किरणा रो सो अनूठो अपूरव द्रश्य कोई दूजी थौड नी देख्यो जा सकै । दशास्वमेध घाट सू दूर-दूर तांई रा असी सगम, वरुण सगम, मणिकर्णिका घाट,

हरिश्चन्द्र घाट अर पचगगा घाट आद दीसै। सिनान करता, श्लोक बोलता, धूप दीप करता, मिंदरा रा घण्टा बजावता लोगा सू सैंमूळो वातावरण मैं धार्मिक भावना री प्रधानता दीसै। सिनान रै उपरात थोडो ताळ नाव मैं बैठ'र घाटा नैं दूर ताई निरखता रैया। देख्यो कै गगा री धार मोड ले'र अठै उत्तरायण बैवण लागै। आपरे स्रोत कैलाश परबत कानी उन्मुख हुणे सू काशी री गगा घणी पवित्र गिणीजै। ठीक ही है, जको सक्रिति आपरे मूल सू प्रेरणा लेवै बा क्यू विशेष गुण सम्पन्न नी हुवै।

खेवट बतायो कै मणिकर्णिका घाट महा समसान बजै। अठै रोज औसन पाच सो शव दाग कर'र गगा मा री गोद मैं उणा रा अस्थ बैवावे। अठै मरणे अर अस्थ प्रवाह नैं हिन्दु जाति पुण्य लाभ अर मुगत लाभ रै कारण आपरे जीवन नैं सकारथ समझै। हिन्दुआं रा सक्रिति रै मुताबिक दिक् अर काल अनन्त हुवै। देह रो चोळो धारण कर'र आत्मा समय अर खेतर रै बधन मैं बधै। मौत जीव नैं फेरू बधन सू मुगत करै। पच तत्व मळै आप-आप रै तत्वा मैं जा'र भेळा हू जावै। काशी अर मणिकर्णिका घाट नैं तो खास तौर सू इण भव सागर सू मुगती रो साधन मानीजै। आखर देवा रा देव माहेश्वर नैं मुगती देणे आळो जो ठैरो। हजारु सालां सू लाखू भगत जन अर सरधालु अठै था'र गगा सिनान अर स्याई निवास कर रैणे नै ही ललकता नी रैवे अठै आ'र शरीर रो चोळो छोडणे नैं भी पुन्न रो काम मानै। आज भी सैंकडू लोग इण भावना सू आखिरी दिनां मैं अठै आ'र रैवण लागै।

काशी मैं मरणो भलै ही मुगती रो आधार मानीजै, पण काशी निजी रूप मैं खूब जीवतो जागतो हुलास बांटतो अठै रै लोगां मैं हसी खुशी रो भाव और पैरण रै प्रति गैरो

लगाव सरू सू ही रैयो है। अठै रो शास्त्रीय सगीत, सोने रै का री बेशकीमती नायाब साड्यां, थाळा मेवा-मिष्ठान अर बनारसी पा सैं कुछ जीवन रै हरख अर हुलास नैं दरसावै। फेर भी एक सच्चा जरुर अठै देखण नैं आवै। राजा अर रक, विद्वत अर ठोठ सैं भात र लोग म्हांसे देश सूं ही नहीं परदेसां सूं भी अठै ढूकै। इग्लैंड, अमरीक अर युरोप रे बीजा देसां रा सैंकडू हिप्पी लोगा ने कठी माळा पैंर्‍य अर रामनामी चादर ओढ्यां शांति री तलास मैं मिदर-दर-मिदर अ घाट-दर-घाट घूमता अठै दीखा।

असी घाट माथै भीड-भाड थोडी कम ही। महाकवि तुलसीदास अठै बैठ'र रामायण री रचना करी। कैवै कै पुराणे जमाने मे गगाजी री एक शाख असी सू अठै आ'र मिलती। दूजी शाख रो नाम वरुण हो आं दो धारावा रै बिचाळै बस्यो हुणे सू ई तीरथ रो नाम बाराणसी पड्यो। असी रो पावन घाट अर शांत वातावरण ना जाणे भक्त तुलसी दाई कित्ता सता अर मनीषियां री साधना थळी रैये हुसी। सदियां तांई बनारस रै गगा घाटां नै अध्ययन अर ज्ञान प्राप्ति रो पूजा जोग थळ हुणे रो गौरव मिलतो रैयो है। स्यात् इण वजह सू ही बोधगया मैं *ज्ञान पाणे रै उपरांत तथागत भगवान बुद्ध आपरे उपदेशां* रो परथम परचार करण खातर इणी ज्ञान भूम रो चुनाव कर्‍यो। इणी भात जैनियां रै २३ वां तिरथकर परसनाथजी री साधणा थळी भी आ ई ही। आधुनिक भारत में ज्ञान विज्ञान री उच्च शिक्षा तांई महामना प. मदन मोहन मालवजी अठै काशी हिन्दू विश्वविद्यालय जिसे देश रै शीर्ष अध्ययन केन्द्र री थरपणा करी, जको सस्क्रत, धरम, दरशन अर विज्ञान री अनेक शाखावा रो आखे ससार मैं ख्यात शिक्षण संस्थान बजै।

पुराणां रे धार्मिक अर सतवादी राजा हरिश्चन्द्र रै नाम सूं

जुड़यो घाट भी अठै है। घाट रो थोड़ो मश तो पक्को है, बाई हिस्सो कच्चो भी है। कच्चे घाट रै कनै लगर नाख'र अनेक छोटी बडी नावा खडी रैवे। अठैई राजा हरिश्चन्द्र नै सत राखण खातर चण्डाल रो करम निभाणो पड़यो हो। कसौटी माथै चढ्या ही खरैपण री सदा ही परख हुवै। आज ओ घाट शव दाग ताई बरतीजै।

बनारस रै घाटा रा दरसन सोवणे दृस्या री मोवणी अनुभूति करावै। गगा रो लम्बो घुमावदार तट ऊंचा पगोथिया माथै चबूतरा-दर-चबूतरां सू बण्योड़ो है। इणा रै लारले सिरे पत्थरा री लूठी कारीगरी आळी सोवणी इमारता, भवन, मिंदर अर मैहल आद बण्योड़ा है। सगळो गगा तट एक बडे आधुनिक स्टेडियम दाई लागै। आठू पौर भजन का रामायण पाठ इण घाटां माथै हुतो रैवे। मिंदरां री ऊंची भगवां अर सफेद धुजावां पून साथै लैरातो अठै रो आध्यात्मिक श्रेष्ठता सो सदेश देती सी लागै। नदी मैं सिनान अर पूजा अर्चना करण आळा देस रै हर खेतर, जात अर धरम रा लोग रग-बिरगा गाभा पैर्यां इन्द्रधनुष री सी सोभा दरसाता सा लागै। भारत रै पुराणा रजवाड़ा मां सू स्यात् ही कोई हुवै जके अठै आपरा निजी मैहल, मिंदर आद बनारस रै घाटा सारै नी बणवाया हुवै। इण वास्ते लोक अर परलोक, स्वारथ अर परमारथ दोन्यू बाता रो आणद लाभ सदा सू कासी देती आई है।

कोई ३ घण्टा ताई घाटां, मिंदरां, भवनां री निरख परख उपरांत ग्यारह बज्यां माहेश्वर रै जगत परसिध विश्वनाथ रा दरसन करणने गया। मानता री दीठ सू कासी विश्वनाथ हिन्दुआ रै सै सू पूजनीय अर पवित्र मिंदरां मैं एक गिणीजै। मिंदर दशास्वमेध सू नैड़ो ही है। घाटां ताई जाणे आळे मुख्य सड़क सू पतळी सांकड़ी अर मैली गली सू हुतां एक बिरोळ मैं पूगां। गलियारे सू एक

छोटे से मिंदर मैं पूगां। मिंदर मैं शिवलिंग री पूजा हुवै। अठै इण नै विश्वेसरदेव कैवे। मानता है कै कैलास परवत महादेव री साधना थळी है अर कासी रमण थळी अर 'आणद कानन'। मिंदर रो आकार अर बणगत साधारण है। पैला अठै कदैई विशाल मिंदर हूतो। पण वतमान साधारण मिंदर धर्मांध मुगलां रे हमले सू बचावण खातर सन् १७७६ ई. मे इंदौर री राणी अहिल्या बाई रो बण्यवायोडो है। पंजाब रे राजा रणजीतसिंह अठै २२ मण सोने रे पतरे सू समूळे गुम्बद नै बण्वायो। हिन्दू सिख समन्वय अर भाई चारे रो किसोक लूठो प्रमाण औ तथ है। शिवलिंग चिकणे काळे पत्थर रो है अर जलेरी मकरावण री। आसे-पासे बीजा देवी-देवतावां रा अनेक छोटा मिंदर है, जकां मैं अन्नपूर्णा मिंदर री मूरत भव्य है अर सोने री बण्योडो है।

इण मिंदर रे हाते मैं एक ऊंडो कुओ है, जकै नै ज्ञान वापी कैवे। कैवे कै औरंगजेब रे हमले सू मूळ देव मूरत नै बचावण नै इण कुए मैं पधरा दियो हो। आज भी लाखू सरधालु आस्था कारण इण कूए रा दरसन कर आपने धन्य समझै। पण आ बात साच लागै कै देवता रो असल सगती तो भक्तां री ही सगती है। जद-जद भगता री सगती कम हुवै देवतावां री खिमता भागीजती दीसै।

यूं तो बनारस आज भी आच्छी सोवणी अर उद्योगां रै कारण वैभव आळी नगरी है, पण बौद्धां अर पुराणा रे जमाने मैं इण री समृद्धि आमो छूती ही। मध्ययुग रे कट्टर मुस्लिम शासकां रै बारबार आक्रमण सू खंडित आज रो बनारस घणे सू घणो मराठा रै सरयान काल सू जोड़यो जा सकै। बनारस री सैं सू जूणी इमारतां मैं मान मिंदर गिणीजै। अठै जयपुर रै राजा मानसिंह रा बणवायोडा मैहल अर वेधशाळ है। आ वेधशाळ भी जयपुर, दिल्ली अर उज्जैन

री बीजी वेधशालावां री ठीक छाया क्रिति है। १७ वीं सदी तांई नक्षत्र विद्या अर खगोल शास्त्र में भारत री क्षिमता री बुलदी रो इमारो करती लागै। पण पुराणी कासी नै जाणण रा स्रोत यात्रां रा आलेख, इतिहास रा दस्तावेज अर लोक गीत ग्राद है। केई सद्यां पैला सू ग्यान री भूख मिटावण नै दूर-दूर रै देशा रा यात्री अठै आवता रैया। वां लोगा बनारस रै गौरव रा लूठा गीत गाया है। ७ वीं सदी मैं चीनी यात्री ह्वेनसांग अठै पूग्यो। विण बनारस नै घणी आबादी आळो सैर लिख्यो है अर अठै रे लोगां री विद्या मैं गभीर रूचि, वां री सम्पन्नता, भवना री भव्यता, लोगां री मममाणसत अर मिनखपणे री सरावणा करी है। ग्रलबरूनी इण धाम री लकडी अर नग जड़ी मूरता री घणी तारीफ करी है। अक्बर रै समय ग्रठै रालफफिच ग्रायो उण लिख्यो है कै बनारस जरीदार काम आळे कपड़े री बौत बडी उद्योग नगरी है अर अठै जिसी सुदर मूरता और कठेई देखण मैं नी आवै। विसप हैवर नाम रै सैलांणी बनारस नै पूरब रै देसा री सै सूवृयां ग्राळी अनूठी इसी नगरी कैयो है, जकै मैं गाथिक अर यूनानी कला सू भी वेसी पत्थर री सोवणो तरासगिरी रो काम कर्योडो है।

दोपारे रै भोजन बाद विसराम कर्यो। ४ बज्यां नगर रा बीजा परसिध मिदरां रे दरसन ताई नीकल्या। चौक सू तांगो कर'र पैला दुर्गा मिदर गया। ओ मिदर स्टेशन सू कोई ७ कि. मी. दूर है। ठेठ ताई बस्ती है। मिदर १८ वीं सदी मैं नागर शैली मैं बण्यो घणो सोवणो है। मिदर रै सारै गगा बैवे। गगा मार्थे लाल पत्थर रा विशाल पक्का घाट दूर ताई बण्योड़ा है। घाटा मार्थे लम्बो बण्योडो बरामदो है। दुर्गा मिदर रै नेडे ही भक्त कवि तुलसी दास जी नै मूळ निवास ग्राळी जाग्यां मकराणे रो मोवणो तुलसी मानस मिदर है। मिदर आधुनिक शैली मैं सादो अर अक्रषक है। मिदर मैं राम, लिखमण

अर माता जानकी री मूरतां साथै तुलसीजी री भव्य मूरती भी है। भींता माथै रामायण री चोपायां अर राम रै जीवन रा मन नै दूवण आळा द्रस्यां रा मोवणा चित्राम है। इण रै उपरांत भारतमाता मिंदर नै देखण नै गया। इण मिंदर री आपरी निज री अनूठी शैली है। भारत रै मानचित्र दाई पा'ड, समतळ अर मरुभूमि मुजीव इण रा ठाम भी ऊंचा नीचा है। औ मिंदर मकराणै सूं बण्यो है अर सीमजलो है। ख्यात देश भगत बाबू शिवप्रसाद गुप्त इण रो निरमाण करवायो। मिंदर सादो है। कोई तरां री मक्कासी अर खुदाई रो काम कोनी पण मिंदर बौद्ध भव्य अर परभाव पूरण लागै। इण रो बगीचो भी चोखो हरियावळ है। खजूर रे बिरखां री पांत मांडयोडे चित्राम सरीखी अनुभूति देवै। धरम अर आस्था रै कारण तो औ मिंदरां नै देखतां आतमा नै सुख रो अनुभव हुवै ही है, मिंदर शिल्प री दीठ सूं भी आपरी कलात्मकता रै कारण तिरपती अर हुलास मिलै। सरदी रा दिनां मैं ८ बजणै कारण ढब बढगी ही। पूठा धरमशाल आया।

आगले दिन ९ बज्यां तैयार हू'र सारनाथ खातर चौक सूं तिपैयो स्कूटर पकड्यो। सारनाथ बनारस सूं ६ किलो मीटर दूर मिरग उद्यान नाम सूं ख्यात ठाम मैं थित है। औ बौद्ध धरम रो बडो तीरथ मानीजै। अठै भगवान बुद्ध रे समय अर बौद्ध धरम री उन्नति रे जमाने मैं केई परसिध मठ अर बिहार हा, जकां रा खण्डर दूर-दूर तांई औजूं भी बिखर्योड़ा मिलै। सातवीं सदी मैं हेनसांग जद अठै आयो कैवे है कै उण बखत अठै पैली बार तथागत आपरे पांच शिस्यां नै जगत रै दुःख अर उणरे निवारण रो सदेश दियो।

बनारस सूं सारनाथ पूगतां ही ईंटां सूं बण्योडो एक ऊंचो ढिगो सामैं दीसे। ढिगे माथै एक अष्टभुजी शिखर है, जिण नै चौखंडी कैवे। टीलो उण स्तूप रो अवशेष है, जठै तथागत नै पांच

सिस्य मिल्या हा। पुरातत्व रा पंडित ईनैं गुप्तकाल मैं बण्योडो मानैं। पण ऊपर रो अष्ट भुजी शिखर ई १५८८ मैं आपरे पिता री याद मैं बादशाह अकबर रो बणवायोडो है।

कोई आधे मील उतराद मैं मिरग उद्यान रै पूरब आळै खुणे मैं धामेख रो परसिध स्तूप है। धामेख धरम मुख रो बिगड्योडो रूप है। स्तूप लाडी-भागी दसा मैं है पण फेर भी इण री ऊंचाई १४३ फुट है। निचले पाखे बडा-बडा पत्थर लाग्या है। ऊपर पत्थर अर ईंटा री चिणाई है। बिचले हिस्से मैं आठ गोंखा है, जका रै आळा मैं पैला मूरता हुया करती। इणां रै नीचे सोवणी खुदाई रे काम री पत्थर री साकल दाई पट्टी री चारू मेर जडाई है। पट्टी मायं भात-भात रा पुसप उकेर्योडा है। औ स्तूप आज सू डेढ हजार बरस पैला अशोक रो बणायोडो बतावैं। शास्त्रीय कला रे इण अनूठे नमूने तांई जनरल कनिंघम लिखै कै ताजमहल रै उपरात इण स्तूप नै भारत री स्थापत्य कला रो सैं सू आकरषक रूप कैयो जा सकै। भगवान बुद्ध रै धरम चक्र परवरतन री सूचना सागै औ स्तूप सदेसो देतो लागै कै जीवन ने भोगा अर शरीर रे कष्टां री अति सू बचा'र मध्यम मारग नै अपणाणो ही श्रेष्ट जीवन शैली है।

धामेख स्तूप रै सामैं महाबोधी सोसाइटी द्वारा बणवायोडो पराचीन शैली रो 'मूलगंध कुटी' नाम रो बिहार है। जापान री सरकार री सहायता सू १९३६ मे इण बुद्ध मिंदर रो निरमाण हुयो। बुद्ध रा सिस्य जठै रैवता उणा ने गंधकुटी कैणो आजब ही है। मिंदर रा पगोथिया चढ'र सभा मण्डप मैं पूगा। इण मैं एक लकडी गली दाई जाग्या मैं एक जाग्यां बोत बडो घण्टो लटकायोडो है। सामैं मोटे बांस रो एक डण्डो टेर्योडो है। डण्डे ने जोर सू धक्को देणे पर घण्टे सू धाड-धाड री गम्भीर धुन बाजे। बिहार रो भवन घणो भव्य लागै। बनावट

अर स्थापत्य जूणो हूणे पर भी इमारत आधुनिक लागै। इण रो गच मकराणे रो है। मिंदर रे मायली भीत माथै तथागत रै जीवन रा असाधारण सोवणा चित्राम है। स्यात जापानी चित्रकार कोसोतो नोसू आनै मांड्या हा। कातिक पून्यो नै विहार री वरसगाठ बौत धूमधाम सू मनै। इण मौके आखे जगत रा बौध सत अर दूजा सरधालु अठै पूगै। समारोह मैं भगवान रे अस्थि कळश रो जलूस निकाळै। बोधि बिरख रो एक पौधो भी लका सू सन् १६३६ मैं ला'र अठै रोपोड़ो है। विहार मैं अनूठी शांति अर पवित्रता रो ग्राभास मिलै।

मिरग उद्यान मैं चारूं मेर पुराणे स्तूपां अर विहारां रा खण्डर बिखर्योड़ा है। भागी-टूटी मूरतां दूर दूर तांई मिलै। भारत रै दूजा परसिध मिंदरा अर धार्मिक ठामां दाई सारनाथ रै वैभव नै लूटण अर मूरतां नै खण्डित करण खातर अणेक बार इण माथै बिदेसी आक्रमणकार्यां रा हमला हुया। पैला हूणां अर बाद मैं मुहम्मद गोरी अर मुहम्मद गजनवी अठै आक्रमण करया। बार-बार रे हमलां अर मरधालू भगतां रै बार-बार पूठे निरमाण रै कारण अठै विहार, मठ, स्मारक आद अनेक बार बणता अर मिटता रैया। बौध धरम रो परभाव कम हूणे रे उपरांत आं रे रख रखाव कानी ध्यान भी कमती हुयो। भी सैकडू बरसा रे लम्बे समय रे कारण भी ग्रां मैं धीमे-धीमे छीजत अर जीरणता आती गई। भारत री आजादी बाद भवै पुरातत्व विभाग आं री देख रेख अर सभाळ सावळ करै है।

इण उद्यान रै चौभीतें मैं ई पुरातत्व विभाग रो देखण अर सरावण जोग छोटो पण बेसकीमती जूणी जिसां अर इतिहास री महत्व री चीजां रो चोखो सग्रालय है। इण मैं सारनाथ रै प्राचीन खण्डरां सू मिली मूरतां, खम्भा, मोहरां, शिलालेख, बरतन-भांडा ग्राद रो सग्रह है। अठै मेल्योड़ी घणखरी सामग्री बौध धरम सूं सरमध राखै।

प्रं जिसा तीसरी सदी ई० पू० सूं लेकर बारवीं सदी रै बिचाळै री है। देख'र इण बात रो हरख हुवै कै जद ससार रा घणासीक देस असभ्य अर आदम दसा मैं रैंवता, भारत सभ्यता अर सक्रिति रै ऊंचे सिखरा बिरजतो हो। अठै मानखे री थिर साती अर सुख री खोज हुवण लागगी ही। अशोक जिसा सम्राट युद्धा नै अरथहीन मान'र युद्ध घोष री जाग्या धम्म घोष री घुआ फैराण नै तत्पर हुग्या हा। आज भी ससार रे केई कूणे मैं हरमेश चालण आळी लड़ायां नै देख'र सारनाथ अर इण रै सदेश री उपयोगिता घणी बढ़ती लागै।

सारनाथ रै इण सग्रालय मैं अशोक रे एक खम्मे रै ऊपरले सिरे माथै बणो सिंघ री अति कलापूरण मूरती अठै राख्योड़ी है, जकी भारत री राज मुद्रा माथै अकित है। मूरती री कारीगरी नै देखता पलका नी झपकै। मूरती रे शीश भाग माथै तीन सिंघ है। शीश रे दूजे भाग मैं हाथी, बळध अर घोड़ा खुद्योड़ा है। बारीक खुदाई, अनुपात अर सादगी री दीठ सूं आ मूरता ससार भर मैं परसिध है। अशोक रो ओ खम्मो साती अर सद्भाव रो प्रतीक मानीजै। संग्रालय री दूजी अनूठी चीज सातवीं सदी मैं बण्योड़ो केई बड़े दरवाजे रै ऊपरलो भारी पटाव है, जकै में भगवान बुद्ध रै पूरबळे जलमां री जातक कथावां उकेरोड़ी है। कथा अर शिल्प दोन्यू निजर सूं आ घणी सोवणी है। पाली भाषा मैं खोद्योड़े एक लेख मैं बुद्ध रै परथम उपदेश रा अश है। खासी बडी सख्या मैं हरोज जिज्ञासू सैलाणी अर धारमिक जातरी आने निरख'र आपने धन भाग समझै।

बोधि सत्व री अनेक मूरत्यां अठै रे खड़रा सूं साधी है। कुषाण राजा कनिस्क रे अभिसेक रे तीसरे बरस भिक्खू नाल रै थरप्योड़ी जकी मूरत्या मिली है, बामैं घणो तेज अर समरथ दीसै। बाद रै गुप्तकाल री मूरत्यां मैं देवलोक री सी सोवणी आभा रो

झलको दीसँ। अठै मेल्योडी वलुए पत्थर सूं बणी भगवान बुद्ध री धरम चक्कर परवरतन री मुद्रा री मूरती भारत री भास्कर शिल्पकला रो श्रेष्ठ नमूनो मानीजै। बुद्ध रे अलावा बौध धरम री महायान शाखा रै बीजा देवतावां री मूरतां भी आकरषक, मोवणी अर अनमोल है। कासी री जातरा सारनाथ बिना अधूरी है। अनेक धरमां री जलम भूम भारत री समन्वय आळी मुली-जुली संक्रिति रो साकार रूप है बनारस अर सारनाथ। हिन्दू अर बौध धरम रै हजारां बरसां रे भाईचारे अर सह जीवन माथै भारत रे लोगां रो माथो गरब सूं ऊंचो हू जावै। जूणी संक्रिति री इण लूठी विरासत माथै कोड करता पाछा बनारस आया।

दोपहर बाद बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय नैं देखण नैं गया। भारत रै महान सपूत देश भगत महामना प मदनोहन मालवीजो रै अथक प्रयास् सूं इण री थरपणा हुई ही। इण कारण विश्वविद्यालय रे परमुख दरवाजे सामे ऊंचे चबूतरे माथै मालवीजी री आदम कद प्रतिमा बणायोडी है। विश्वविद्यालय रो दरबाजो भी खासो ऊंचो अर कलात्मक है। गेट मैं तीन दरवाजा है, विचलो खासो ऊंचो है, आसे पासे आळा नीचा अर की छोटा है। विश्वविद्यालय दो हजार एकड रै विशाल खेतर मे फैल्योडो है। चारू मेर रो घेर १० मील सूं भी ऊपर होसी। कैवे के एशिया मैं सैं सूं बडो आवासीय विश्वविद्यालय बनारस रो ई है। इण मैं दस हजार सूं बेसी सख्या रे छात्रां खातर केई विशाल छात्रावास है। यूं तो विश्वविद्यालय रा सैंमूळा भवन ऊंचा, कलापूरण अर आकरषक है, पण गायकवाड पुस्तकालय, संस्क्रित महाविद्यालय अर युनिवर्सिटी अस्पताळ री इमारतां घणी सोवणी है।

विश्वविद्यालय रे माय खासो बडो बाजार भी है। खाणे-पीणे अर रोज रे उपयोग मैं आणे आळी सैं जिसा अठै मिल जावै। इण

विशाल शिक्षण सस्था रे लोगा री जरूरत रै मुजीब कई बैंक अर डाकघरा री व्यवस्था भी है। बीच-बीच में सैंकड़ू विरखा अर हरी दूब आळा केई बगीचा है। छात्रावास नेडे जुदा-जुदा खेला रा मैदान है। सगळे विश्वविद्यालय नै पैदल देखणो पूरे एक दिन में भी सम्भव नी हुवै। स्कूटर सू कोई तीन घण्टा में भी इण रो कुछ अश ही व्है देख सक्या। कासी विश्वविद्यलाय रो स्तर अर स्यात आखे भारत में ही नहीं एशिया रे दूजा देसा ताई है। नैपाल, श्रीलका, बग्लादेश, थाई देश, इण्डोनेसिया अर अनेक अफ्रीकी देशा रा सैकड़ू छात्र अठै अध्ययन ताई हर साल आवै। पण राजनीति री सडाध आज जीवन रै किसे कुणे में नी पूगी है। छात्र सघा री बेसमझी, शिक्षका री गुटबाजी अर नेतावा री बेजा दखलदाजी रे कारण ज्ञान पाणे री ललक अर पढण पाढावण रो वातावरण बरावर तळै बैठतो जा रयो है।

विश्वविद्यालय रै मांय भारत कला भवन नाम रो आछो सग्रालय है। इण में ठेठ पुराणा रे जमाने सू आज ताई री कासी रे अळायदा-अळायदा जुगा री क्रम सू सजायोडी झाकी रा दरसन हुवै। इतिहास रे महत्व री जूणी चीजां रो घोखो दरसाव करयोडो है। चीजां रे रख रखाव में व्यवस्था अर रुचि दोनू रो ध्यान राख्यो है। विश्वविद्यालय रे बीच में बिड़ले रो बणवायोडो शिवजी रो ऊंचो विशाल विश्वनाथ मिंदर है। मिंदर रो चैरो लाल अर सफेद रग रो है। मिंदर निरमाण री शैली बिड़ले रै दिल्ली थित लक्ष्मीनारायण, मुथरा रे किसन मिंदर रै हू-ब-हू एक जिसी है।

आगले दिन कासी विश्वनाथ एक्सप्रेस सूं दिल्ली हु'र पाछे आणे रो आरक्षण हो। रवानगी सूं पैला दोएक बनारसी साड़्या खरीदली। सोने रे बारीक काम री अठै री खोवणी साड़्यां देस विदेस में

दूर-दूर तांई जावै। बनारस रो ओ बोत बडो उद्योग है। हजारुं कारीगरा नै इण काम सूं रोजी मिलै। केई सदियां सूं पारम्परिक रूप मैं अठै निरतर पनपतो रैणे कारण इण उद्योग सूं बनारस नै घणो मान अर सम्रिधी मिली है। लौकिक अर अलौकिक दोनूं दीठ सूं समस्त भारत रे धरम-संक्रिति रे इण लूठे केन्द्र बनारस नै कोई जातरी कदेई भुला नी सकै।

●

जगन्नाथजी रो श्रीक्षेत्र

देस रै पूरब मैं समुदंर रै सारै बंगाल री खाड़ी मैं मानीता पावन धामा मैं गिणीजण आळो जगन्नाथ पुरी भारत रो एक प्रमुख तीरथ है। इण रो दूजो नाम श्रीक्षेत्र भी है। आदि शंकराचार्य देस मैं धरम री एकता खाई चारूं दिसावा मैं बदरीनाथ, रामनाथ (रामेसरजी) द्वारकानाथ अर जगन्नाथ, इण चार धामा री थरपणा कीनी। धरम री दीठ सूं इण सैंग रो निज मैं आप आप रो घणो महत्व है। जगन्नाथ धाम रै उतराद पूजा जोग गंगा, दखण में पावन गोदावरी, पछम मैं परवत माला अर पूरब मैं समुंदर इण री पूजा वंदना मैं सेवक दाई हाथ बांध्यां सदा लागै। मिंदर वास्तुकला री बेजोड सुदरता, रथ जातरा जिसा सांस्कृतिक परब, नदनकानन जिसा आरण, अनेक झीलां, झरणां, नारेळ रा ऊंचां बिरख, इतिहास रै पराचीन गौरव अर विज्ञान री आधुनिक प्रगति रै कारण ओ उत्कल क्षेत्र सदा री भांत आज भी राष्ट्र मैं ऊंचे ठाम अर सम्मान रो अधिकारी है। प्राचीन काल में कलिंग रे नाम सूं रणवीरां री भूम बजण आळो ओ क्षेत्र। आज आखे जगत मैं सै सूं बड़ा बांधां मैं एक गिणीजण आळे हीराकुद बांध अर घणो विशाल गिणीजण आळे राउरकेला जिसा कारखाना रै सारै क्रिषी अर उत्पाद रै औद्योगिक क्षेत्र मैं

नूवा कीरतीमान री थरपणा करतो देश मैं आपरो विसेष स्थान बणा लियो है ।

इण समरण जोग थळ रै दर्शनां रो मन मैं घणो उमाव हो। लारले बरस दिसम्बर १९८६ मैं औ आछो मौको भी म्हानै मिलग्यो। ३० नवम्बर नै कलकत्ते मे एक बालगोठिये साथी रै बड़े लड़के रै ब्याव मैं सामल हूणै री मुनहार नै टाळणो कीं सम्भव हो ? निरमल प्रेम मैं कित्तो आकर्षण हुवै, कोई भुगत भोगी ही जाण सकै। पण घर सू टुर्‌या पैला ही मित्र नै घणो आगूंच लिख दियो हो कै पाछे घिरता जगनाथ जी रा दरसन लाभ भी करणा है। ई तांई समय रैंता कलकत्ता सू पुरी अर पुरी सू पाछो दिल्ली रो रेल आरक्षण करवा मैं तैयार राखै। बडी चौक्सी सू ख्याल राख'र बै आ मोळावण निभाई। हफ्ते भर कलकत्तै रुक'र ५ दिसम्बर नै रात १० बज्यां री गाडी सू पुरी खातर रवाना हुया। भोर मैं ७ बज्यां पुरी रै मुकाम पूगग्या।

कलकत्ते रे प्रवास री सदा आछी-बुरी मिलीजूली प्रतिक्रिया मन मैं हुवे। आबादी घणी सख्या मैं हुवे कारण कलकत्तो 'कीडी नगरो' तो पैला भी हो पण अबै एके कानी मैट्रो रेल री जाग्या-जाग्यां खुदाई रै कारण अर दूसरे पासे आजादी रै बाद व्यवस्था खिमता री कमी अर सरकारी कामगरां री कामचोरी अर काहिली रै कारण औ महानगर गदगी अर धूड़-धूए रो अबार बण'र रैयग्यो है। सित्तर रै दशक तांई जिकी सडकां री पाणी रै टैंकरां सू रोज धुलाई हूती बठै आज रोज झाड़ू-बुहारी भी नी लागै। कलकत्तो पूरबी भारत रो बारणै गिणीजै। भारत रे परमुख बदरगाहां मैं इण रो नाम है। उद्योग अर ब्यापार रो तो औ सैं सू बडो केन्द्र है। पण जद सू चीन सू भारत रा सम्बन्ध बिगड्या है इण बदरगाह नै भी थोडो धक्को

सायो है। फेर भी व्यवसाय, कला अर संस्क्रति रो महत्व पूरण सगम औ आज भी है। नाट्य अर सगीत रै क्षेत्र मैं इण रो प्राज भी लपणो स्थान अवश्य है। साहित्य री भी कोई विधा इसी नी है जकै मैं रचनात्मक लेखन नी हुवै। समस्यावां अर अभावां रै बावजूद कलकत्ते रो देस मैं उल्लेख जोग स्थान निरतर बण्योडो है।

पुरी रै स्टेशन मायै पूगता ही पडा जातरयां रै आडा भूम जावै। प्रापरे जजमान सू ही आं री आजीविका अर बिरत चाले। प० शिवानद उपाध्याय नाम रै पडे सागै रिक्से मैं बैठ'र म्हे स्टेशन सू कोई २ कि मी दूर जगन्नाथ मिंदर रै सामैं बागडिया धरमशाळ पूग्या। आ दुमजली धरमशाळा खासी बडी अर साफ सफाई आळी है। मारवाड्यां री ही बणायोडी है। कमरे रो किरायो भी ५ रुपया रोज मात्र है। कनै ही कोठारी धरमशाळा है। सामैं मिंदर री दिशा मैं दूध वाला री धरमशाळा अर गोयनका, धनजी आद केई दूजी धरमशाळावां है। हरोज हजारू जातरी अठै देस रे कुणे-कुणे सू आवै। इण कारण होटल, गेस्ट हाऊस, मोटल आद भी अठै घणाई है। अग्रेजी ढर्रे रा ५ सितार होटला सूं लेर देमी सामुहिक निवास तक सब री हैसीयत मुताबिक ठैरण री व्यवस्था दूक जावै। धरमशाळ मैं ही सिनान आदि कर, बारै मिंदर दरसन ताईं निकळ्या। उपाध्यायजी सायै हा। वै सारली दूकाना सू पूजा री सामग्री पुष्प, धूप, दीप, परसाद आद खरीदायो। मिंदर नेडे सडक रै दोन्यू पासे रामनामी दुपट्टा, गमछा, कठी माळ, चदन, कूकू, खील, मखाणा, नारेळ आद मिलै। बिदी चोटी, शृगार री जिंसा, पुसप अर माळावां री बिसातां भी सडक मायै बिछी रैवे। धरमशाळ सू १०० गज दूर सामैं जगन्नाथजी रो विख्यात मिंदर है।

मिंदर चार भागां मैं बण्योडो है। आं रा नाम है-विमान,

जगमोहन, नाटय मिंदर अर भोग मडप है। भारत रा मिंदर शिल्प रा प्राय तीन प्रकार है–नागर, द्रविड अर बेसर। पण उडीसा री मिंदर कला इणा सब सू जुदा अर अनूठी कलिंग शिल्प बजै। उत्कल रा मिंदर गोळाकार है। हरेक मिंदर रै ऊपर कळश हुवै अर चारू मेर देवतावा री मूरता मडी हुवै। हरेक द्वार, दिसा अर कुणै मार्थं रक्षक रै रूप मैं देवता री थापना करी जावै। लता, मडप, तोरण, शख, चक्र, पदम भाद शुभ परतीक अर न्रत्य, वादन, लेखन, भजन, कीरतन आद सात्विक भावा रै अलावा शिकार, मैथुन अर विलास री मूरता भी कोरयोडी हुवै। लौकिकता अर अलौकिकाता दोना रो मूरत रूप अठै मिलै। पण ससारिकता सू मुगत हू'र ही ईष्ट रै धाम तक पून्यो जा सकै, औ भाव ही परसुख दीसै।

जगन्नाथजी रो मिंदर सडक सू ले'र शिखर ताई २१४ फुट ऊचो है। मिंदर रै चारू मेर पत्थर रो बडो चौभींतो है, जिण री लम्बाई ६६५ फुट अर चोडाई ६४० फुट है। पूरब दिशा मैं मिंदर रो मुख्य द्वार है। दोनू कानी सिंघा री मूरता बणी है। इण कारण ई ई नैं सिंघ द्वार भी भी कैवे है। इण रै ठीक सामैं ४० फुट ऊचो एक काळे पत्थर सू बण्यो गरुड खम्भो है। गरुड रै माथै सूरज भगवान रै सारथी वरुण री मूरत है। मिंदर मैं जगन्नाथ, बलभद्र अर सुभद्रा री प्रतिमावा है। सह देवतावा रै रूप मैं वामन, वराह, नरसिंघ अर विष्णु भी विराजै। भोग मडप मैं किसनजी री बाल लीलावां री मूरता खोद्योडी है। मिंदर रै भाय पश्चम दिसा मैं रतन वेदी रै ऊपर सुदरसन चक्कर बण्यो है। भगता री खासी तगडी भीड हरमेश अठै रैवे। अगर चदन री सुवास सू मैंहकते अर जगन्नाथ भगवान रै जैकारे सू गूजते वातावरण मैं आत्मा नैं आनन्द रो अनुभव हुवै। दूजे धामा दाई पण्डा तुलसी का दूने पुसपा री माळा पैरा'र पइसा वसूलने री लौंठाई अठै भी करै। बगाल अर उत्कल रै जातरूया रै

अलावा राजस्थान, बिहार अर उत्तर प्रदेश रा जातरी अठै बेसी मातरा में दीसै। दूजा प्रांता अर विदेशा सूं भी लोग अठै खासी सख्या में आवै। जगन्नाथ मिंदर रो निरमाण अर ध्वंश केई लार हुयो। पैलम पैल राजा विश्वावसु ईनैं बणवायो बाद में ई. ११६२ में चोड़गगदेव, फेर ययाति केसरी, भळे ११९८ में अनग भीमदेव इण रो पूठो निरमाण करायो।

उपाध्यायजी आ बात भी बताई कै हर बारह साल बाद जगन्नाथजी रो 'नब कलेवर' उछब मनाईजै। काठ री नुई मूरत्यां जगल री पवित्र काठ महदासू सूं बणाइजै अर जूणी मूरत री अतेष्ठी कर देवै। आ विलक्षण परम्परा श्री जगन्नाथ मिंदर रै अलावा स्यात ही कठैई देखण मैं आवै।

जगन्नाथ मिंदर रै सामै बडो चौक है। चौक सूं उत्तर दिसा मैं सीधी चौडी सडक श्री गुंडिचा मिंदर ताईं जावै। अषाढ सुदी दूज नै अठै भगवान जगन्नाथजी री रथ जातरा रो उछब मनाइजे। जगन्नाथजी, बलभद्रजी अर सुभद्रा जी तीन्यू न्यारा-न्यारा रथा मायं बिराजै। आखे देस सू आयोडा भगत गण रथा नै खीच'र गुंडिचा मिंदर ताईं ले जावै। इण सेवा नै घणे पुन्न रो काम मानीजै। भारी हूणे कारण जे रथ मिनखा सूं नी टुरै तो हाथी इणा नै खीचै। इण परब मायं लाखू सरधालु पुरी मैं भेळा हुवै। मानता आ है कै जगन्नाथजी रा दरसन सूं मनुष्य बारम्बार रे जीवन मरण सू मुगत हू जावै। इण अवसर मायं जगन्नाथ मिंदर मैं भोग रो महा परसाद ५६ मिठायां सूं बणै। हजारुं लोग सावळ धाप सकै इती व्यवस्था हुवै। रथ जातरा रै बखत घण्टा भेरी, तुरही, शख आद बाजै। भजन, कीरतन अर निरत्य सूं सडक कांपण लागै। एकादशी तांईं तीन्यू देव विग्रह गुंडिचा मिंदर मे बिराजै अर सेवा पावै। एकादशी नै तीनू रथ पूठा जगन्नाथ मिंदर

जगमोहन, नाट्य मिंदर अर भोग मडप है। भारत रा मिंदर शिल्प रा प्राय तीन प्रकार है–नागर, द्रविड अर वेसर। पण उडीसा री मिंदर कला इणा सब सू जुदा अर अनूठी कलिंग शिल्प बजै। उत्कल रा मिंदर गोळाकार है। हरेक मिंदर रै ऊपर कळश हुवै अर चारू मेर देवतावा री मूरता मडी हुवै। हरेक द्वार, दिसा अर कुणे माथै रक्षक रै रूप मैं देवता री थापना करी जावै। लता, मडप, तोरण, शख, चक्र, पदम आद शुभ परतीक अर नरतव, वादन, लेखन, भजन, कीरतन आद सात्विक भावा रै अलावा शिकार, मैथुन अर विलास री मूरतां भी कोर्‌योडी हुवै। लौकिकता अर अलोकिकाता दोना रो मूरत रूप अठै मिलै। पण ससारिकता सू मुगत हू'र ही ईष्ट रै धाम तक पूग्यो जा सकै, ओ भाव ही परसुख दीसै।

जगन्नाथजी रो मिंदर सडक सू ले'र शिखर तांई २१४ फुट ऊचो है। मिंदर रै चारू मेर पत्थर रो बडो चौभींतो है, जिण री लम्बाई ६६५ फुट अर चोडाई ६४० फुट है। पूरब दिशा मैं मिंदर रो मुख्य द्वार है। दोनू कानी सिंघा री मूरता बणी है। इण कारण ई ई नै सिंघ द्वार भी भी कैवे है। इण रै ठीक सामै ४० फुट ऊचो एक काळै पत्थर सू बण्यो गरुड खम्भो है। गरुड रै माथै सूरज भगवान रै सारथी वरुण री मूरत है। मिंदर मैं जगन्नाथ, बलभद्र अर सुभद्रा री प्रतिमावां है। सह देवतावा रै रूप मैं वामन,' वराह, नरसिंघ अर विष्णु भी विराजै। भोग मडप मैं किसनजी री बाल लीलावा री मूरता खोद्‌योडी है। मिंदर रै माय पच्छम दिसा मैं रतन वेदी रै ऊपर सुदरसन चक्कर बण्यो है। भगता री खासी तगडी भीड हरमेश अठै रैवे। अगर चदन री सुवास सू मैंहकते अर जगन्नाथ भगवान रै जैकारे सू गूजते वातावरण मैं आत्मा नै आनन्द रो अनुभव हुवै। दूजे धामा दाई पण्डा तुलसी का दूजे पुसपा री माळा पैरा'र पइसा वसूलने री लौंठाई अठै भी करै। बगाल अर उत्कल रै जातर्‌यां रै

लावा राजस्थान, बिहार अर उत्तर प्रदेश रा जातरी अठै बेसी तादाद में दीसै। दूजा प्रांतां अर विदेशां सूं भी लोग अठै खासी संख्या में आवै। जगन्नाथ मिंदर रो निरमाण अर ध्वंश केई लार हुयो। पैलम पैल राजा विश्वावसु ईनै बणवायो बाद में ई. १११२ में चोड़गगदेव, फेर ययाति केसरी, अळे ११९८ में अनग भीमदेव इण रो पूठो निरमाण करायो।

उपाध्यायजी आ बात भी बताई कै हर बारह साल बाद जगन्नाथजी रो 'नव कलेवर' उच्छव मनाईजै। काठ री नुंई मूरतयां जंगल रो पवित्र काठ महदासू सूं बणाइजै अर जूणी मूरत री प्रतेष्ठी कर देवै। आ विलक्षण परम्परा श्री जगन्नाथ मिंदर रै अलावा स्यात ही कठैई देखण में आवै।

जगन्नाथ मिंदर रै सामै बडो चौक है। चौक सूं उत्तर दिसा में सीधी चौड़ी सड़क थी गुंडिचा मिंदर ताईं जावै। असाढ सुदी दूज नै अठै भगवान जगन्नाथजी री रथ जातरा रो उच्छव मनाइजै। जगन्नाथजी, बलभद्रजी अर सुभद्रा जी तीन्यू न्यारा-न्यारा रथां मायं विराजै। साथे देस सूं आयोड़ा भगत गण रथां नै खींच'र गुंडिचा मिंदर ताईं ले जावै। इण सेवा नै घणे पुन्न रो काम मानीजै। भारी हूणे कारण जे रथ मिनखां सू नी टुरै तो हाथी इणा नै खींचै। इण परब मायं सारा सरधालु पुरी में भेळा हुवै। मानता आ है कै जगन्नाथजी रा दरसन सूं मनुष्य बारम्बार रे जीवन मरण सू मुगत हू जावै। इण अवसर मायें जगन्नाथ मिंदर में भोग रो महा परसाद ५६ मिठाया सूं बणै। हजारां लोग साथळ पाय सकै इसी व्यवस्था हुवै। रथ जातरा रै बखत घण्टा भेरी, तुरही, शंख आद बाजै। भजन, कीरतन अर निरत्य सूं सड़क कोपण मांगै। एकादशी ताईं तीन्यू देव विग्रह गुंडिचा मिंदर में बिराजै अर सेवा पावै। एकादशी नै तीनू रथ पूठा जगन्नाथ मिंदर

मैं बाहुडे। मजे री बात है कै इण वापसी नै उडिया भाषा मैं भी 'बाहुडे' जातरा ही कैवे। सस्क्रत रै 'बहुरि' शब्द सूं उत्पत्ति रै कारण श्रा समानता है। रथ आए साल नूवो काठ सूं बणैं। केई महिना पैलां सू ही रचना रो काम सरू हू जावै। सैंकडू कारीगरां नै पुन्न रै सागै रोजी भी नसीब हुवै।

म्हे लोग भी पैदल ही गुडिचा मिंदर रे दरसन खातर पूग्या। मिंदर रो हातो खासो बडो है। रथ मांय आवण ताई घोगे मोटे री पिरोळ खासी ऊंची है। माय एक बडो हाल है। इण री पिरोळ भी ऊंची है। हाल रै पछमी भाग मैं ऊंची चौकी है, जकै मायं जगन्नाथजी बलभद्रजी, सुभद्राजी री मूरता बिराजै। मुख मिंदर सू चिपता ही और केई छोटा बडा मिंदर आयताकार घेरे मैं बण्योडा है। श्रै सब मिंदर श्रोडिसी शिल्प मैं बण्योडा है। आती बेर सोनार गोराग मिंदर अर लोक कथा मिंदर भी देख्या। शकर मठ भी शात, एकात अर हरियावळ रै कारण आनन्द दायक लाग्यो। श्रठै साधु सन्यासियां रै रैवण खातर श्रासराम अर साधना खातर शिवालय है। शिव मिंदर रै बारै बडो प्रागण है जकै मैं भजन कीरतन हूता रैवे।

तीजे पौर समुन्दर सिनान दरसन ताई निकळ्या। मिंदर चौक सू श्रोटो रिक्शा कर्‌यो। मिंदर रै आगै कर सडक दखिण मैं बाजार माय हूती नीसरे। श्रठै खाणे पीणे री दूकाना अर चाय मिठाई रा होटल अर ढाबा बेसी है। दूजी जिन्स री दूकाना भी है। कोई ३-४ कि मी. माथैं पूरब कानी सडक मुडे। मोड सू ही समुदर दीसण लागै अर गरजणे री आवाज सुणीजै। जठै ताई निजर जावै पाणी ही पाणी दीसै। सूरज रो किरणा सूं समुन्दर री ऊंची नीची लहरां मैं सोनलिया आभा री भिळमिळाट छिटक्ती रैवे। पूरब सूं पछम मैं मीला दूर तक पसर्‌योडो सीधो समुन्दर तट इयां लागै जाणे कोई

माप जोख'र सीधी लीक माड राखी हुवै। समुन्दर में मद्दगे ऊँची हबोळा खाती रैवे। सैंकडू लोग समुन्दर में सिनान करता अर मद्दरां री क्रिडा रो आनन्द लेता रैवे। म्हे भी न्हाणे, बदळणे रा बस्त्र माथै लाया हा। जद पाणी रो हिलोरो वेग सूं नैडे आवै तद लोग पूरा पर्यां दौड'र लारै आ जावैं। पण पगा सूं टक्राते पाणी री दरुण सूं सारो शरीर छाटा सू भीग जावैं। पाछो जातो पानी पगां नीचली रेत नैं आपरे सार्थं खिसकातो जद ले जावै तो मूडे सू आपे किळकारयां निसरै अर बडा बूढा, लोग-लुगाया सै टाबरां दाई बल क्रिडा रै आनन्द सूं विभोर हू जावै। दिसम्बर रो महिनो हुणे उपरांत भी न तो अठै ठड हुवै न सिनान करता सरदी लागै। राजस्थान रै अगस्त सितम्बर महिना जिसो तापमान अनुभव हुवै। समुन्दर बीच कठैई कठैई पाल आळी छोटी नावा पख फैलायां सारसा सरीखी सोवणी लागै। डेढ दो घण्टा ताई सिनान रो आनन्द लियो। एक तरह सू ताजगी रो अहसास हुयो। गामा पैर्‌या ही हा। समुन्दर माथै ही चाय वेचण आळो पुगग्यो। एक टीन रै बडै टुकड़े री ओट में तेज हवा सू स्टोव नैं बचावतो बो बठै ही चाय बणावे हो। कप दीठ २ रुपय लेणे उपरांत भी बीरी केतली मिटा में ही खाली हू जाती। बो मल इण क्रिया में लग जावो। मेहनती आदमी खोड में भी कमा खावै इ रो जीतो जागतो उदाहृण अठै देख्यो।

समुन्दर री चौपाटी माथैं सडक रै सारै संख, सीपी, मिणिया अर समुन्दरी गड्डा सूं बणी माळावा, मूरत्या अर सजावट री जिन्सा मिलै। चूड्या, हार, मगलसूत्र, रोली, कुकुं, देवी-देवतावा री तसवीरा आद भी बिकै। बीस्यूं लोग रेत माथै ई फड़ लगावै। खरीदारां में घणकरी महिलावा अर टाबर ही हुवै। लारै सडक माथै चाट पकोडी, चाय, काफी अर आइसक्रीम आद रा गाडा भी खड्यां रैवे। इणा माथै भी खासी भीड रैवे। सगळै दिन मेळो सो मण्ड्यो

री लाल किरणा सू रंग्यो रातो प्रामो समुदर री लैरां माथै सोनलियां रंग सू घणो सुरंगो दीसै । ज्वार भाटे रै उतार चढाव सागै झिलमिल करतो निजारो अत्तो आकर्षक हुवै कै लगातार देखता रैणे पर भी आंख्यां नै धाप नी आवै ।

अगले दिन भोर मैं ७ बज्यां टूरिस्ट बस सू कोणार्क अर भुवनेश्वर रा परसिध मिंदर अर दूजा ठाम देखण तांई रवाना हुआ। इण बस में सीटां रो आरक्षण पैलां करवाणो पडै । डीलक्स बस मैं ४० रुपया सवारी किरायो है । सीटां आरामदायक है । साथै गाइड भी चाले । गाइड देखण जोग ठामां रो इतिहास, सांस्कृतिक महत्व अर कलाकारी रे सम्बन्ध मैं हिन्दी मैं चरचा करतो रैवै । कोणार्क पुरी सूं २२ कि. मी दूर है । समूळो मारग हर्यो भर्यो है । सूर्य मिंदर सू कोई ३ कि मी दूरी माथै एक सोवणो समुन्द्र तट है । अठै गाडी पंद्रह मिनट रुकै । जातरी रेतळे किनारे सू समुदर रा आकर्षक दृश्य देखे । चाय पाणी रा होटल भी अठै है । डाभ (कच्चा नारेळ) अठै रुपिये रुपय मैं मिलै । डाभ रो पाणी मीठो अर ताजगी देणे आळो हुवै । थोडी देर मैं ही कोणार्क पूगग्या । इण रै अवलोकन तांई १ घण्टे रो समय दियो जावै । अठै मोटर आळो गाइड नी आ सकै । दूजा लाइसैंस शुदा गाइड करणा पडै । १५ रुपियां मैं एक गइड सागै लियो । पण अनुभव कर्यो कै गाइड बडे विस्तार सू मिंदर सम्बन्धी जित्ती वातां री जाणकारी देवे बा बडी उपयोगी अर ज्ञानवर्धक हुवै ।

कोणार्क रो सूर्य मिंदर बारीक कारीगरी, सुंदर कल्पना अर मिनख जमारे री भांत-भांत री भाव दशावां रै चित्राम रै कारण 'पत्थरा मैं कविता' रै नाम सूं आखै संसार मैं परसिध है । इण मिंदर री भींतां माथै देवी-देवतावां, अपसरावां, पशु-पंखिया, अर बेल-बूटां

री लूठी पच्चीकारी रो इसो कलापूरण काम है कै मिंदर नै उडिया स्थापत्य रो ग्रनूठो दस्तावेज कैयो जा सकै। ओ भारत अर विदेशी सैलाण्या रै ग्राकरषक रो प्रमुख केन्द्र है।

पैला मूल मिंदर ऊंचे परकोटे सूं घिर्योड़ो हो। इण मैं तीन ही प्रवेश द्वार हा। घोरी मोडो पूरब दिशा मे हो, जकै रै सामोसाम दूर समुदर मैं सूरज उगतो सो लागतो। मिंदर रो सामलो भाग न्रत्य मिंदर नाम सू जाणिजतो, विच मैं जगमोहन मिंदर है जकै ने अराधना मिंदर भी कंवे। लारलो हिस्सो गरम ग्रह बजै। जगमोहन मिंदर तो आजू भी ठीक स्थिति मैं है, पण न्रत्य मिंदर अर गरभघर समय रे ग्राघात सू जीरण हुग्या है।

मैंमूळो मिंदर सूरज रै रथ री कल्पना रो साकार रूप है, जिणनै सात घोडा खीचता सा लागै। इण रथ रा चौबीस पहिया घणी बारीक तरासगिरी रा सोवणा नमूना है। ग्रै बारै महिना अर चौबीस पखवाडां रो सकेत करै। इण रै पहिया मैं आठ–आठ ग्रारा कै तीखां है, जकी आठ–आठ पौरा ने दरसावै। इण चक्का री गोळाई २.६४ मीटर (६ फुट ग्राठ इंच) है। सूरज री किरणां रथ रै आरां मायँ पडै। उण री छाया सूं आज भी मिन्टा, संकिडां ताई ठीक समय बतायो जा सकै। गाइड इण नै पढणे री विधी भी समझाई।

न्रत्य मडप मैं ग्रनेक कलापूरण मूरत्या है। इण रै चारूं मेर ऊपर जाणे रा पगोथिया है। पूरब पासै रै पगोथियां रै दोनू कानी गजशार्दुला री विशाल मूरत्यां है। जका देखण में ताकतबर अर डरावणा लागै। कोणार्क मिंदर मैं युद्ध रै बलशाली घोडे री बौत चोखी मूरती है। इण मैं चालक घोडे रै साथै लड्यो है। जोरावर घोडे रो जीवणो पग ऊंचायोडो है। माथो मुकयो है, लारला पग तण्यां है।

घोडो दुरणे तांई जोर करतो सो लागै। पत्थर मैं घोड़े ने साकार रूप ही नी मिल्यो है इण री कलाकरी देख'र वास्तु विद्वान हावेल खबसूरती मैं इण घोडे ने वेनिस रै महान कलाकार वेरएकिन्यओ रै बणायोड़े जगत परसिध घोड़े री टक्कर री सोवणी मूरत बताई है।

कोणार्क री नारी मूरतां भी घणी कलात्मक है। प्रेम सम्बन्धी हाव भाव, सिणगार री चेष्टावां, नख सिख री मोबणे अनुपात मैं चितराम, सै कुछ अचरज सागै ग्रानन्द देणे आळो है। उल्लेख री बात आ है कै समाज रै रीति रिवाजां नै भी बारीकी सूं आकीज्यो है। गाडी खींचता बळध, रोटी पकावती ओरतां, रस्साकसी, लड़ाई सूं बाहुडता रणबंका, पाग बांधता मिनख तो है ही कान, नाक, कमर रा गैणा, पिलग, पाटो, कुरस्या, पालक्या, ढोल, पखावज, घण्टा, वीणा आद बाद्य तीर–कमान, तलवार, छुरा, बरछा, गदा आद हथियारा जिसी सैंकडू चीजा नै दरसायो है। कला री इसी ऊंचाई रै कारण ही उडीसा रो 'उत्कल' नाम सार्थक जाणीजै।

'आइने अकबरी' रै मुजीब इण मिंदर ने ६ वी सदी मैं केसरी वश रै केई राजा बणवायो। बाद मैं गगवशीय राजा नरेशसिंह देव आज रै रूप मैं इण रो निरमाण करवायो। कैवे कै १२ हजार कुशल कारीगरा १२ साल री कठिन मेहनत रै बाद इण भव्य मिंदर नै बणायो। कोणार्क रै अवशेषा मैं दुर्गा, जगन्नाथ, बलभद्र, सुभद्रा अर नवग्रह री मूरत्या मिली है। इणां सूं पतो लागै कै मिंदर रै निरमाण रे वखत शैव, शाकत अर वैष्णवां मैं आपस मैं विरोध नी हो अर एक मिंदर मैं ही सैंग सम्प्रदायां रा देवी–देवता थोकीजता।

कोणार्क सूं भुवनेश्वर ३५ कि मी. दूर है। कोई पूण घण्टे मैं अठै पूगग्या। अठै सूं पैला खण्डगिरी उदयगिरी री जुणी गुफावा देखण नै गया। ऐ गुफावा जैन अर बौद्ध धरम रा तीरथ है। उडीसा रै इतिहास मैं आ रो बौत महत्व है। खण्डगिरी री पा'डी १३३ फुट

ऊची है। खासी दूर ताई भाठा सू कच्चा पगोथिया बणायोडा है, ऊपर कच्चा मारग अलग-अलग गुफावा ताँई जावै। डूंगरी माथै खासा बडा अर घणा बिरख है। खण्डगिरी माथै पारसनाथ जी रो मिंदर है। एक छोटो सो तलाब है जर्क ने आकाश गगा कैवे। पत्थरां नै काट'र पाडी माथै २४ तीरथकरा री मूरत्यां बणायोडी है। दूर-दूर ताई पाडी मैं ई पचासू छोटी बडी गुफावा बणायोडी है, जका मैं पुराणे जमाने मैं जैन साधू रैवता हा। कैवे के मैं गुफावां २००० बरस पुराणी है।

खण्डगिरी रै सामै ही सडक रै दूजै कानी उदयगिरी री गुफावां है। उदयगिरी री ऊचाई ११८ फुट है। मैं गुफावा भगवान बुद्ध रे जमाने री है। मैं गुफावां भी पा'ड काट'र बणायोडी है। मैं खण्डगिरी सू बडी है। केई जागा एक-एक गुफा मैं केई कोटड्यां अर बरामद है। गुपा रानो री गुफा दुमजली हैं। गणेश गुफा रै आगे दो हाथी द्वारपाल दाई खड्या है। सर्प गुफा, बैकुण्ठ गुफा अर स्वर्णद्वारी गुफावा भी आछी बडी अर मसहूर है। हाथी गुफा रो इतिहास री दीठ सू बडो महत्व है। इण मैं उडीसा रे सम्राट खारवेल रे शासन काल रै तेरह बरसा री घटनावां रो ब्योरो एक अभिलेख मैं लिख्योडो है। औ शिल्पलेख ई. पू. दूजी सदी रो है। जिण बेला ससार रा घणखरा देश जगली अवस्था मैं हा, भारत री सभ्यता खासी उन्नत ही इण तथ्य रो ओ अभिलेख परतख परमाण है। दोपैर रे भोजन पछै अठै सू रवाना हुया।

भुवनेश्वर मिंदरां रो नगर गिणीजै। कैवत है कै अठै पुराणे समय मैं मिंदर खासा हा। इण नैं 'कोटिलिंग' भी कैवता। आज भी इण नगर मैं पाच सो नेडा छोटा-बडा मिंदर है। उडीसा रा मिंदर गोळाकार है। अठै रे मिंदरा रो शिल्प मध्य भारत रै मिंदरा सू जुदा है। मिंदर रे ऊपर कळश चारू पासै रक्षक देवी-देवतां, लता, मण्डप, तोरण, गज,

चक्र, पदम आद शुभ प्रतीकां रै अलावा काम, क्रोध आद षट्विकार अर सिकार, मैथून आद विलास भावनावां री मूरत्यां भी हुवै। भारत री संस्क्रिति जीवण नै समग्र रूप मे ही ग्रहण करै। इण खातर सिरिष्टी री उत्पत्ति रै काम भाव नै अश्लील न मान'र प्रक्रत भाव मैं ग्रहण कर्यो है।

दूरिष्ट बस आळा खास मिंदर ही दिखावै। सबसू पैला म्हे मुक्तेश्वर मिंदर पूग्या। ओ मिंदर खासो बडो अर कलात्मक है। इण रो निरमाण आठवी-नवीं सदी मैं हुयो, पण आजू ताई ओ सही सलामत है अर भव्य लागै। इण मैं सुंदर आक्रिति अर गैणा गामा आळी महिलावां रो हाव-भावां समेत सोवणो चित्राम है। चौकड़ी भरता हिरण, पूजा करता सन्यासी, अध्ययन-अध्यापन करता शिष्य अर गुरु क्रिडा करता बादर आद री मोवणी मूरत्यां रै कारण मिंदर सुपन लोक दांई लागै। मिंदर रै दरसन निरखण तांई हजारु जातरी रोज अठै ढूकै। परसिध स्थापत्यकार फरगूसन इण मिंदर नै उड़ीसा रै मिंदरां मैं कला री दीठ सू शिरोमणि मिंदर कैयो है।

इण रै उपरांत सातवी सदी मैं बण्योड़े परशुरामेश्वर रै प्राचीन मिंदर नै देखण नै पूग्या। इण री बणगत सू भी इण री प्राचीनता रो आभास हुवै। इण मिंदर मैं शिव लिंग रै अलावा पारवती, लिछमी, महिसासुर मारणी दुरगा, गणेश, वाराह आद री मूरत्यां भी है। इणा रै एकैसाथै मौजूद हूणे सू शैव अर साकत सम्प्रदायां रै सह अस्तित्व रो भी पतो लागै।

भुवनेश्वर रै मिंदरां मैं लिंगराज रै मिंदर रो भी घणो महत्व है। ओ बडो विशाल अर ऊंचो बण्योड़ो है मिंदर री ऊंचाई १४७ फुट अर चौभीते री लम्बाई, चौड़ाई, ऊंचाई ५००×४६५×७ ३० फुट है। इण मिंदर रै आंगण मैं दूजा केई मिंदर है, जकां मैं पारवतीजी रो

मिंदर विशेष सुंदर है। गणेशजी री मूरतौ बौत बडी है अर एक्ल सिला सूं बण्योडी है। पारवतीजी री मूरती में दुपट्टे मार्थं बारीक वेल बूटां रो काम है। मिंदर री दीवारां मार्थं फूल तोडती महिलावा, अभिसारिकावा, वीणावादिनी स्त्रिया, परजा रा दुख दरद सुणता राजा अर अध्ययन करता पण्डितां आद रा अनूठी मूरता है। अष्ट दिकपाला री मूरत्या, पाण्डवा रो स्वर्गारोहण अर युद्ध री मूरत्या, मूरतौ कला री श्रेष्ठ रचनावा है। उडिया शिल्प री सम्पूरण विशेषतावा इण में देखी जा सकै। इण मिंदर में प्रसाद अर भोग री भी सुंदर व्यवस्था है। जात पांत रै भेद भाव विना अठै सब एक पात में बैठ'र प्रसाद पावै। औ मिंदर पचरथ शैली में बण्यो है जिणमे बिमान, जगमोहन, नाट्य मिंदर, गरमघर अर विशाल मिंदर स्थापत्य कला नै देख'र जातरी दग रै जावै अर सरधा सूं इष्ट रै आगे ही नहीं मिंदर रै निरमाण करण आळा कलाकारा रै आगे भी नत मस्तक हू जावै।

पाछा घिरती विरिया भुवनेश्वर सूं १० कि. मी दखण पूरब में धौली पाडी मार्थं बण्योडे शांति स्तूप नै देखणनै गया। पा'डी मार्थं ऊपर ताई बस जावै। आखिर में थोडी दूर पैदल जाणो पडै। पछै पगोथिया चढ'र स्तूप मार्थं पूग्या। औ स्तूप बौध गाया में जापान सरकार रै बणायेडे स्तूप रै हू-बहू सरीसो है। शांति रो प्रतीक औ स्तूप भी सफेद रंग सूं पोत्योडो है। चारू दिशावा में बुद्ध री चार मूरत्यां बणायोडी है। इण पा'डी रै नीचे दखण में कलिंग रो इतिहास प्रसिद्ध युद्ध महानदी रै किनारे हुयो। कलिंग देश रा लोगां *पराक्रम सूं युद्ध लड्यो। अशोक युद्ध जीत तो ग्यो, पण अठै हुये खून* खरावे नै देखकर उण रै मन में पछतावो अर ग्लानि हुई। चंड अशोक धर्म अशोक में बदळग्यो। युद्ध घोष री जाग्या अबै धर्म रो घोष हूण लाग्यो। अशोक रो औ मानस परिवर्तन इतिहास री अपूर्व घटना है। उणरी याद में ई औ स्तूप बण्यो है। अठै रै एकांत अर शांत वातावरण में घणो आत्मिक सुख मिलै। स्तूप सूं नीचे, बस स्टाप सूं पैला पा'डी

मारग मार्थं अठै रा लोग काजू बेचता दीसे। अठै नेड़े कनै रे खेतर मैं काजू री खेती हुवै। इण वजह सू अठै काजू सस्ता है। भाव ताव करया ७० रुपिया किलो रे भाव सू आज भी मिल जावै। म्हे भी अठै सू काजू रा पैकेट खरीद्या। पण बाद मैं तोलणे पर ५०० ग्राम माल ४०० ग्राम ही निकळ्यो। बीच में पुराणा काजू भी मिलायोडा हा। ठगी री इण प्रकिति नैं म्हे कद छोड सा ? इसा प्रसगा सू मन मे पीड़ा हुवै अर मणखाण लोगा मार्थं अविश्वास री भावना पैदा हुवै।

इण जातरा रो आखिरी पड़ाव नदम कानन बगीचो हो। भुवनेश्वर सू १२ कि. मी. दूर ४०० हैक्टेयर भूमि मार्थं पसर्योडो ओ बाग विशाल, हर्यो–भर्यो वन है। इणरे नजदीक बारग रेलवे स्टेशन भी है। बाग मैं एक कुदरती झील है, जकै रे एकै कानी 'बाटेनिकल गार्डन' अर दूजै कानी चिड़ियाघर है। चिड़ियाघर मीला लम्बो है अर जगली जानवरा री सख्या भी खासी बडी है। कानन मैं पेड़-पौधा, झाड़ा लतावा अर दूब आद री रख–रखाव मार्थं चोखो ध्यान दरीजै। चिड़ियाघर मैं भांत–भांत रा हस, रग बिरगा पछी अर सफेद मोर है। केई किसम रा भालू, बारहसींगा, हिरण अर चीतळ भी दीसै। बिना पूछ वाळा बादर अर भूरे रग रा भालू दरसका नैं आकृष्ट करै। अठै हाथी अर जिराफ भी चिड़ियाघर मैं राख्योडा है। सेरा री तादाद भी खासी है। पिंजरा री जाग्या खुले बाड़े मैं विचरण करता शेरा नैं बधन रै बावजूद कुदरती माहौल मिलै। बागीचे मे चाय नास्ते री स्टाल मार्थं थक्या–भूखा जातरी सुस्तावै अर पेट पूजा कर थकान मिटने री चेष्टा करे। केई महिलावा तो दिन भर रै भ्रमण सू शिथिल हू'र पाछो फुरणे री जल्दी करण लागी ही। छ बज्या पाछा टुर्या। ८ बज्या रे नेड़े पुरी पूगया। मन मैं ओ भाव लियां कै भारत री मूर्ति कला, मिंदर निरमाण अर गुफा निरमाण री कला उड़ीसा रै बिना पूरणता नी पा सकै।

मारग मायँ मठै रा लोग काजू वेचता दीसे। अठै नेड़े कने रे खेतर मैं काजू री खेती हुवँ। इण वजह सू अठै काजू सस्ता है। भाव ताव करया ७० रुपिया किलो रे भाव मूं आज मो मिल जावँ। म्हे भी मठै सू काजू रा पैकेट खरीद्या। पण बाद मैं तोलणे पर ५०० ग्राम माल ४०० ग्राम ही निकळ्यो। बीच में पुराणा काजू भी मिलायोड़ा हा। ठगी री इण प्रक्रिति नैं म्हे क्द छोड़ सा ? इसा प्रसगा सू मन में पीड़ा हुवँ अर अणजाण लोगा मायँ अविश्वास री भावना पैदा हुवँ।

इण जातरा रो आखिरी पड़ाव मदन कानन बगीचो हो। भुवनेश्वर सू १२ कि. मी. दूर ४०० हैक्टेयर भूमि मायँ पसर्योड़ो ओ बाग विशाल, हर्यो–भर्यो वन है। इणरे नजदीक बारग रेलवे स्टेशन भी है। बाग मैं एक कुदरती झील है, जकँ रे एके कानी 'बाटेनिकल गार्डन' अर दूजँ कानी चिड़ियाघर है। चिड़ियाघर मीलां लम्बो है अर जगली जानवरा री सख्या भी खासी बडी है। कानन मैं पेड़-पौधा, झाड़ा लतावा अर दूब आद री रख–रखाव मायँ चोखो ध्यान दरीजँ। चिड़ियाघर मैं भात–भात रा हस, रग बिरगा पछी अर सफेद मोर है। केई किसम रा भालू, बारहसींगा, हिरण अर चीतळ भी दीसँ। बिना पूछ वाळा बादर अर भूरे रग रा भालू दरसका नैं आक्रष्ट करँ। अठै हाथी अर जिराफ भी चिड़ियाघर मैं राख्योड़ा है। शेरा री तादाद भी खासी है। पिंजरा री जाग्या खुले बाड़े मैं विचरण करता शेरा नैं बधन रँ बावजूद कुदरती माहौल मिलँ। बागीचे में चाय नास्ते री स्टाल मायँ थक्या–भूख्या जातरी सुस्तावँ अर पेट पूजा कर थकान मिटने री चेष्टा करे। केई महिलावा तो दिन भर रँ भ्रमण सू शिथिल हू'र पाछो फुरणे री जल्दी करण लागी ही। छ बज्या पाछा टुर्या। ८ बज्या रे नेड़े पुरी पूग्या। मन मैं ओ भाव लिया कँ मूर्त्त री मूर्ति कला, मिंदर निरमाण अर गुफा निरमाण री कला उड़ीसा रँ बिना पूरणता नी पा सकँ।